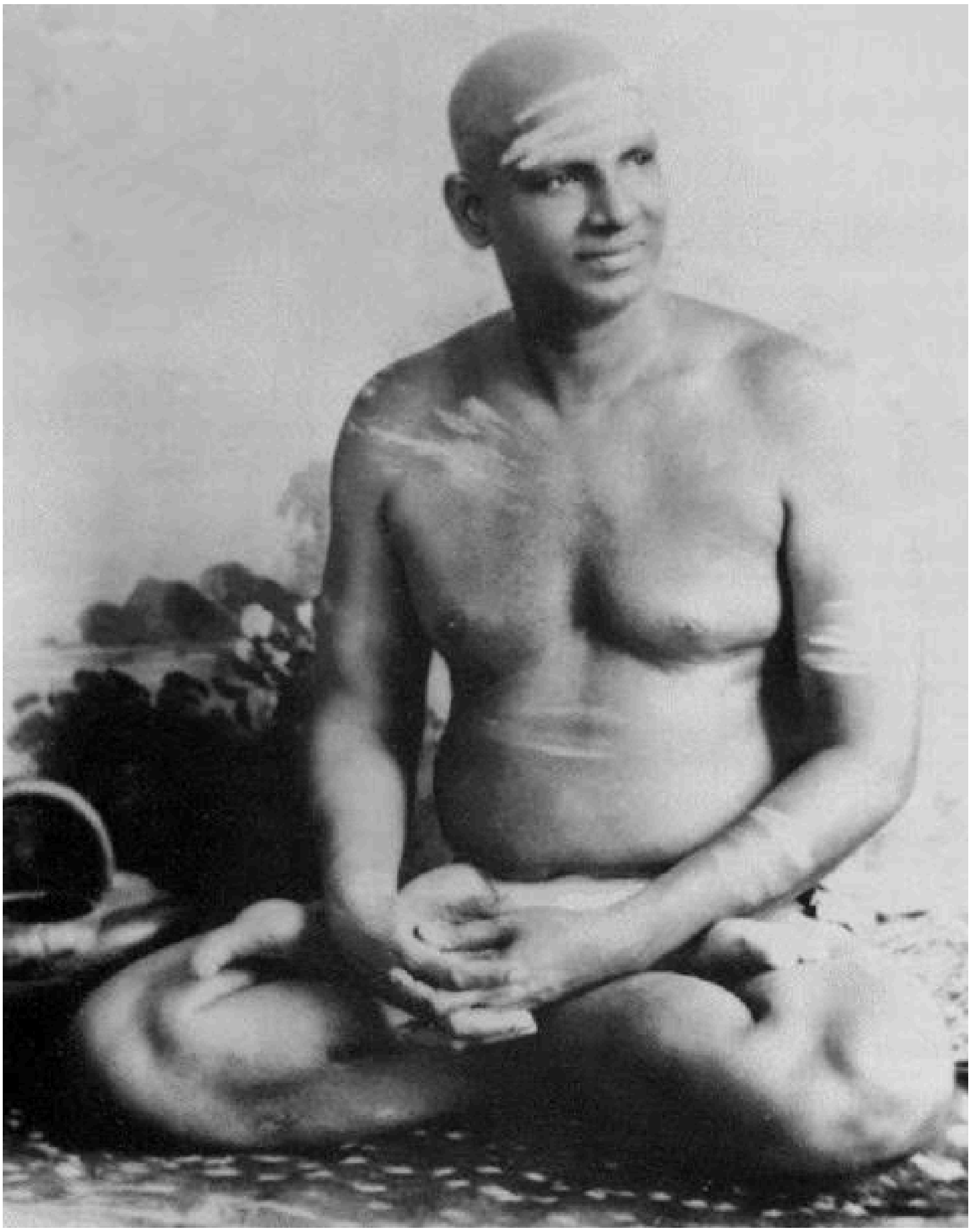
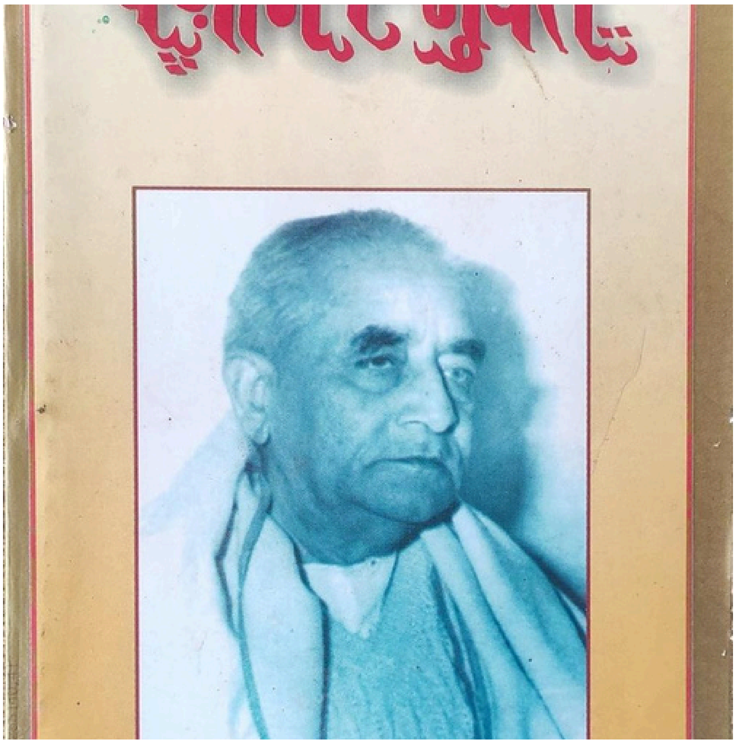




पैग़ाम ए मुक्त

महर्षि मुक्त

पैग़ाम-ए-मुक्त

प्रणेता -महर्ष ि मुक्त

प्रक़ाशक - महर्ष ि मुक्त़ानुभूतत स़ाहहत्य प्रच़ारक सममतत केन्द्र ऱायपुर (३ पंजीयन क्रम़ांक २०९३/९४,

ऱायपुर (सऱ्ाधिक़ार सुरक्षित प्रक़ाशक़ीन)

मुरक -ककरण कम्प्युटस, ि अश्र्नी नगर, मह़ादेऱ् घ़ाट रोड, ऱायपुर मह़ाऱ्ीर ऑफसेट, गीत़ा नगर,

ऱायपुर फोन - 255140

संस्करण - प्रथम़ाऱ्ृत्ति

प्रतत -१०००

हदऩाकँ -१२ अप्रैल २००० (ऱाम नर्मी)

पुस्तक ममलने क़ा पत़ा

-डॉ. सत्य़ानंद त्रिप़ाठी आनंद भर्न 80/48 * C बंग़्लिप़ाऱा, ऱायपुर (म. प्र.) - ४९२००१

-द़ाऊ बरी मसंहं बघेल स्थ़ान - तरकोरी, पो. कौशलपुर, (मोहरेंग़ा)

व्ह़ाय़ा. - बेरल़ा, जज. - दुगु ि (म. प्र)

प्रक़ाशन क्रम़ांक - ४

मूल्य - ६०/- रु.

महर्ष िमुक्त (1906 झंड़ापुर से 1976 लुधिय़ाऩा) र्ृधचत 'पैशाम-ए-मुक्त' रुहानी शेर-ओ-गजल क़ा अनूठ़ा संग्रह है, जजसके म़ाध्यम से स़ारे चऱाचर के मलए संदेश हदय़ा गय़ा है कक अहम्पत्र्ेन प्रस्फुररत जो तत्र् है, र्ही सर् िक़ा अजस्तत्र् है और र्हीदेर् है, जो मन क़ा स़ाक्षित्र् करत़ा है।

अनुभूततयों सेसऱाबोर इस स़ाहहत्य में आत्म़ा, मन, म़ाय़ा, फकीरी और भगऱ्ान के रहस्य आहद पर जजतनी सहजत़ा से प्रक़ाश ड़ाल़ा गय़ा है. अन्यि कहीं ंसुनने-पढ़ने में नहींआत़ा।

र्ेद के ब्ऱाह्मण भ़ाग उपतनषद् के मर्म की शेर-ओ-गजल के म़ाध्यम से प्रस्तुतत, अपनेआप में र्ृचिण एर्ं मौमलकत़ा मलए हुए है।

मसलन -

"नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।
यो नस्द्विद िद्वेद नो न वेदेति वेद च ।।
यस्यामिं ंिस्यर्मिर्मि यस्यनवेद स ।
अववज्ञिाम् ्ववजानिाम् ्ववज्ञिाम्ऽ्ववजानिाम् ्।।"

"खुद को न ज़ाऩा, कुछ भी न ज़ाऩा,
जजसने भी ज़ाऩा, र्ह भी न ज़ाऩा।
ज़ानेन ज़ानेको जजसनेज़ाऩा,
ये ज़ानऩा ऱाज बड़ा ही मुजश्कल ।।"

महर्ष िमुक्त एक आज़ाद दरर्ेश थे, उनके प़ास मसऱ्ाय कफन की एक लंगोटी के और कुछ भी पररग्रह नहींथ़ा। इसी फकीरी के बलबूते उन्दहोंनेखुद़ा की भी खबर ली क्योंकक नंग़ा (फकीर) खुद़ा से बड़ा होत़ा है-
'खुद़ा के सर पे कमबख्ती ककिर सेदौडकर आई।
मोहत़ाजी के चक्कर में, कभी आत़ा, कभी ज़ात़ा ।।"

"जीव कल्पयिे ेपूवं ंर्िो भावान् ्पृथृक्ववधान "

इस र्ृकल्प के ब़ाद ही खुद़ा मोहत़ाज (दीन-हीन) हो गय़ा। तभी तो -

"जो है सरत़ाज क़ा आलम, नच़ाती च़ाह अल्ल़ाह को।" जबकक -

"बौफ ख़ाते ेकमर शमशो मसत़ारे हटक नहींसकते।

मगर स़ामनेप़ानी पत्थर के झुक़ाती च़ाह अल्ल़ाह को ॥"
"ख़ामोश क़ा खज़ाऩा, ख़ामोश ढूाँढत़ा है।
कदमों तलेहै दौलत, दौलत को ढूाँढत़ा है ।।"

लेककन ऐसी कमबख्ती क़ा आऩा भी भल़ा है। यहद ऐस़ा न होत़ा तो -

"मुब़ारक हो ये कमबख्ती, अगर न आती अल्ल़ाह में।
देखत़ा कौन, कब, ककसको, हदख़ात़ा कौन अल्ल़ाहे ॥"
खुद़ा को ऱ्ाद-ऱ्ि़ाद क़ा ऱ्िषय बऩाकर लडने ऱ्ालों के क़ारण ही खुद़ा बदऩाम हुआ है, ऐसेउप़ासकों के

चलते ेखुदा ल़ांतंछत हुआ है।
इस पर कहते ेहैं -

"खुद़ा के बंदो को देख करके, खुद़ा से मुनककर हुई है दुतुनय़ा।ाँ
जो ऐसेबंदे हैं जजस खुदा के, ऱ्ो कोई अच्छ़ा खुद़ा नहीं।।"
महर्ष िमुक्त उदिू, पमशयिन, संस्कृत के प्रक़ाण्ड ऱ्िद्ऱ्ान थे, मूल प़ाण्डुमलर्प नहींममलने के क़ारण जैस़ा भी ममल़ा प्रक़ामशत ककय़ा ज़ा रह़ा है. ऱ्ैसेह़ाजी मोहम्पमद आफ़ाक स़ाहब (ग़ाजजय़ाब़ाद ऱ्ाले) जैसे ेऱ्िद्ऱ्ान के द्ऱ्ाऱा इसक़ा संशोिन कऱाय़ा गय़ा है, कफर भी कहीं–ंकहींयहद भूल रह गई हो तो उसके मलये सममतत िम़ा च़ाहती है। सममतत ह़ाजी मोहम्पमद आफ़ाक स़ाहब क़ा हृदय से िन्यऱ्ाद ज्ञ़ापन करती है।

सेर्क द्ऱ्ाऱा जो भी क़ाय िहोत़ा है उसकी पृषठूभूमम में सेव्य क़ा अनुग्रह रहत़ा है इसी तरह सममतत के इस धगलहरी प्रय़ास की पृषठू भूमम में भी उन्दहीं ंअऱ्ितू महापुरुष क़ा आशीऱ्ाहदि एऱ्ं कृप़ा ही है।

इस पुस्तक में शेरो गजल के म़ाध्यम से उस देश की खबर ली गई है जह़ा ाँज़ाकर देश खतम हो ज़ात़ा है।

पुस्तक प्रक़ाशन में पं. ऱामल़ालजी शुक्ल, द़ाऊ गोकुल प्रस़ाद बन्दछोर एऱ्ं ठ़ाकुर बरी मसंहं बघेल

म़ालगुज़ार के सहयोग पर सममतत इनक़ा तहेहदल से शुकक्रय़ा अद़ा करती है।

मस्ती में मस्त होकर मस्ती को मलख रह़ा हूाँ।
मस्ती में मस्त पढ़ऩा दररय़ा नजर आएग़ा ।।

अलं

सही

(सत्य़ानंद)

ऱामनर्मी
92 - 8 - 2000

अध्यि

महर्ष िमुक्त़ानुभूतत

स़ाहहत्य प्रच़ारक सममतत

पैगाम-ए-मुवि

(गजल-अनुक्रमणिका)

२५- (ग़ज़ल) ४

दुनिया वाली निगाहों में, गुरबत दूर हस्ती है।
तुम हो, तुम्ह बिना ही वो, जब अना बुत परस्ती है। १
वहाँ कोई न कर सकता अकीदों की ही हैं वाँ।
नामों पैर मुहर लगाने की, पाबन्दी भी ही जबरी है। २
कुरआँ वेदों का मकसद, इशारा मकसद हमारा।
कुदरत के रसम में दरिया, वहीं दैरों की बस्ती है। ३
न हस्ती बुत परस्ती है, न वीरानों व बस्ती है।
नाम से आसमाँ नकाबा.
१२
मुक्त मुबस्सर हस्ती है

१ (मोमिन), २ (दर्शन) ३ (देशाभिमान), ४ (वर्तमान),
५ (अभिव्यक्ति) ६ (चूंसना) ७ (डंका) ८ (सिद्धान्तों ...)
९ (मिथ्याभ्रम...) १० (वीरानों की आबादी)
११ (जंगल) १२ (पूरा)

२५।७।९८४ आपका "मुक्त"

ग़ज़ल
"दीदारे हक़ीक़त"

दीदार होती है हक़ीक़त अमन को जाने के बाद ।
मन अमन होता है जब दीदार हो जाने के बाद ॥1

यूँ तो कोई शक्ल करने में मन ठहरता है चंद लम्हे ।
पर अमन होता नहीं होता अमन होने के बाद ॥2

बन अमन में जाएगा ये आसमान आसमाँ ।
मकाम में आती हक़ीक़त मेहर हो जाने के बाद ॥3

राहे अमन के मुद्दआ वुजूद जो वुजूद ये वुजूद हैं अमन ।
लेकिन ये होता है सच्चा वजूद को जाने के बाद ॥4

अमन राज में ये कहते हैं सिर्फ़ निगाह के ।
राज होती है रफ़्ता उसके प्रवाह होने के बाद ॥5

है नहीं आसान ये तौहीद का समझना है दोस्त ।
उसको ही आती है जो मुक्ति हो जाने के बाद ॥6

"ग़ज़ल पैग़ामे मुक्ति"

ॐ

मैं कौन हूँ कहाँ हूँ मैं किसको क्या बताऊँ ।
मेरे सिवा न कोई मैं किसको क्या बताऊँ ॥१

मेरी ही हुकूमत है मेरी ही सल्तनत है ।
मेरी ही सकावत है मैं किसको क्या बताऊँ ॥२

मैं जो कि आप नहीं था तो ब्रह्म हूँगा कैसे ।
आप ब्रह्म [illegible] मैं किसको क्या बताऊँ ॥३

वेदों की [illegible] कुछ कहूँ [illegible] ।
[illegible] है [illegible] मैं किसको क्या बताऊँ ॥४

जिस जा पे दिलकशी हो जिस जा पे [illegible] हो ।
उस जा पे जलवा है मैं किसको क्या बताऊँ ॥५

आनन्द ए मुतलक [illegible] है ।
[illegible] हूँ [illegible] मैं किसको क्या बताऊँ ॥६

पैग़ामे मुक्ति का ए [illegible] है ।
[illegible] मैं किसको क्या बताऊँ ॥७

१. म ैंकौन हूँ कहाँ हूँ- पैग़ाम-ए-मुकुत ("म" ैं)

म ैंकौन हूँ कहा ाँहूँ, म ैंककसको क्या बताऊँ।
मेरे मसरा न कोई, म ैंककसको क्या बताऊँ।।

मेरी ही हुकूमत'[1] है, मेरी ही सकूनत[2] है।
मेरी ही हकीकत है, म ैंककसको क्या बताऊँ।।

म ैंजीर् जब नहींथा, तो ब्रह्म हूँगा कैसे े।
अफसाना लगब[3] है सब, म ैंककसको क्या बताऊँ।।

बेहूदगी सरासर गर, कुछ कहूँ जबॉ से।
शरममन्दगी है चुप में, म ैंककसको क्या बताऊँ।।

जजस ज़ा पे हदलकशी[4] हो, जजस ज़ा पे खुदकशीं[5] हो।
उस ज़ा पे ज़ा ब ज़ा[6] है, म ैंककसको क्या बताऊँ।।
ज़ानता है ये मुतलक[7]', ज़ाहहर[8] ज़हरे[9] फन'[10] है।
फ़नक़ार[11] हूँ अनोखा, म ैंककसको क्या बताऊँ।।

पैग़ाम 'मुक्ता' क़ा यह, मस्तों क़ा तजरबा है।
इस हदल क़ा भी तक़ाज़ा'[12], म ैंककसको क्या बताऊँ।।

---

1 प्रशासन
2 एक स्थान पर ठहरना
3 झूठी और नाशरान
4 हदल जहाँमर ज़ाए (अमनस्कता)
5 आत्महत्या
6 सरि्
7 ईश्रर
8 प्रगट
9 सृजृष्ट
10 कला
11 कलाक़ार
12 मांग

२.ये हदल बरब़ाद होकर के

ये हदल बरब़ाद होकर के हदलेहदलद़ार होत़ा है।
जो हो मोहत़ाज मोहत़ाजी सेभी, र्ही जरद़ार'[13] होत़ा है ।

मुऩादी करते ेख़ाहदम[14] की जो इस दुतुनय़ा ाँके पदे पर।
मगर खुदमस्तों की खखदमत से ही, खखदमतग़ार होत़ा है ।।

दुरुंगी दुतुनय़ााँके पहलू, त्रबगडऩा और बनऩा जो ।
खुशी गम में जो एक स़ॉ हो, र्ही गमख्व़ार होत़ा है ।।

कभी करत़ा है दोज़ख क़ा, कभी करत़ा बहहरतों क़ा ।
जो करत़ा तकि दोनों क़ा, करम ककरद़ार[15] होत़ा है ।।

अनेकों ऱाधगनी ऱागें, हैं ग़ाते स़ाज़ ब़ाजों पर ।
जो ग़ात़ा बेजुब़ा ाँहोकर, र्ही गुलुक़ार होत़ा है ।।
इश्क त़ालीम लेऩा गर, तो परऱ्ाने से ज़ा पूछो ।

जूंदे ख़ाक[16] में ममलकर गुले गुलज़ार होत़ा है ।।

हुनरमंद और हुनर ककतने हैं आलम[17] में न हद जजनकी ।
हकीकी फ़न में जो म़ाहहर र्ही फ़नक़ार होत़ा है ।।
फ़कीरों क़ा यही नुस्ख़ा 'मुक्त' क़ा यह तजरब़ा है ।
समझऩा ऩा समझ होकर, जो बेघरब़ार होत़ा है ।।

** * **

---

13 म़ालद़ार

14 सेर्क

15 चररि

16 ममट्टी

17 संस़ार

३.रूहानी' दुतुनय़ा ॉँमें रहकर

रूहानी'[18] दुतुनय़ा ॉँमें रहकर, आब़ाद हुआ आज़ाद हुआ ।
टल गय़ा मुसीबत क़ा खतऱा, आब़ाद हुआ आज़ाद हुआ ।।

ख़्ाऱ्ा् खय़ाले गफ़लत[19] में, आनेज़ानेक़ा चक्कर थ़ा।
खुद की नज़रों से जब देख़ा, आब़ाद हुआ आज़ाद हुआ ।।

प़ा चुक़ा हूँ जो कुछ प़ाऩा थ़ा ममल चुक़ा हूँ जजससे ॆममलऩा थ़ा।
दरअसल नतीज़ा ये तनकल़ा, आब़ाद हुआ आज़ाद हुआ ।।

हूँ कज़ा कज़ाओं क़ा कज़ा[20], ब़ार्जूद गुलरूब़ा हूँ गुलशन क़ा।
हदलरुब़ा हूँ आलम के हदल क़ा, आब़ाद हुआ आज़ाद हुआ ।।
मैकद़ा'[21] न ज़ाऊँ मय[22] पीने, मसजद़ा न करूँ बुतख़ाने क़ा ।
बेखुदी की मस्ती पीकर के, आब़ाद हुआ आज़ाद हुआ ।।

कहऩा है यही फ़कीरों क़ा आज़ादी कोई मज़ाक नहीं।
बरब़ाद ब़ाद सब से 'मुक्त़ा', आब़ाद हुआ आज़ाद हुआ ।।

**

---

18 आध्य़ाजत्मक

19 अज्ञ़ानत़ा

20 मृतूयु

21 महदऱालय

22 महदऱा

४. हकीकी' इश्क ए दररय़ा में

हकीकी[23]' इश्क ए दररय़ा में लहऱाऩा मुब़ारक हो ।
नहींकोई जुब़ा ाँदुतुनय़ा ाँमें बतल़ाऩा मुब़ारक हो ।।

इश्क है क्य़ा बल़ा य़ारों जो परऱ्ाने से ज़ा पूछो ।
ऱाम्पमों के रू ब रू आकर के, जल ज़ाऩा मुब़ारक हो ।।

त्रबगडते ेबनते ेदो पुतले, आमशक[24] और म़ाशूक[25] ।
इश्क आततश[26] में पड हस्ती[27]' पघल ज़ाऩा मुब़ारक हो ।।

जूंदे[28] हदल क़ा कब तक है कक जब तक कुछ सह़ाऱा है।
सह़ाऱा तकि कर देनेसे तब ममलत़ा सह़ाऱा है ।।

मचलऩा हदल की आदत है य़ाद में हदलरूब़ाई की ।
रोकऩा गैर मुमककन है मचल ज़ाऩा मुब़ारक हो ।।

ज़म़ाने के हरएक हदल को, ख़ास पैग़ाम 'मुक्त़ा' क़ा ।
हकीकत प़ाऩा गर, कुछ भी न कहल़ाऩा मुब़ारक हो ।।

**

५. जजन मस्त ऑखों क़ा ये इश़ाऱा

23 ऱास्तर्र्क
24 प्रेम करने ेऱ्ाल़ा
25 जजससेप्रेम ककय़ा ज़ारे्
26 आग
27 जीर्न
28 अजस्तत्र्

जजन मस्त ऑखों क़ा ये इश़ाऱा, उन मस्त ऑखों को हम भी देखें।
जजस मस्त मस्ती में मुस्कुऱाती, उस मुस्कऱाहट को हम भी देखें ।।

तौके[29]' तमन्द्ऩा ये तकि करके, हर्र्स हुकूमत[30] से दूरू रह कर ।
दरर्ेश[31] रहते ेहैं मस्त जजसमें, उस मस्तख़ाने ेको हम भी देखें ।।

त़ाज्जुब ये कक बेइजन्द्तह़ा'[32] पे, हदूदेू गफ़लत क़ा पड़ा जो पदि़ा ।
खुद़ा क़ा खुद भी हर रौ[33] पे ह़ाजज़र, पद़ा िउठ़ा करके हम भी देखें ।।

नम़ाजज़यों'[34] क़ा कलीस़ा[35] क़ाब़ा, पुज़ाररयों क़ा जो बुतकद़ा है।
फ़कीरों की जो अनमोल दौलत, उस ख़ानेदौलत को हम भी देखें ।।

कुब़ानि होत़ा है जजसपेआलम, खूबसूरती को है ऩाज़'[36] जजस पर ।
कश्मीर है जो हरएक हदल क़ा, उस हदलरूब़ाई को हम भी देखें ।।

न मस्ती शीरो न मैकद़ा में, न इरक म़ाशूक आमशकों में।
जो जजस खज़ाने सेतनकलती मस्ती, उस कुल खज़ानेको हम भी देखें ।।

आस़ान इतऩा कक जो ल़ाज़ब़ा ाँहै, मुजश्कल भी इतऩा कक न हद जजसक़ा।
दीद़ार[37] मस्तों की मेहर[38] से मुमककन, उन 'मुक्त' मस्तों को हम भी देखें ।।

६.मुब़ारक बेज़ब़ा ाँमस्ती फ़कीरों

मुब़ारक बेज़ब़ााँमस्ती फ़कीरों' [39] की इऩायत[40] हो।

---

29 जंजीर

30 श़ासन करने ेकी इच्छ़ा

31 संत, जगद्गुरु

32 अनंत

33 र्स्ुु चीज

34 नम़ाज अद़ा करने ेऱाल़ा

35 पूज़ा घर, जजस हदश़ा में नम़ाज पढ़ी ज़ाती है ।

36 गर् ि

37 दशनि

38 कृप़ा

हुई क़ाफूर'[41] सब हस्ती'[42], फकीरों की इऩायत हो ।।

न स़ाकी है न मैख़ैाऩा न पीने ग़ल़ा पैम़ाऩा।
न जजसमें होऩा बेहोशी, फकीरों की इऩायत हो ।।

बे-बुतनय़ाद दुतुनय़ा ाँक़ा थ़ा खतऱा ख्ऱ्ाबे गफलत[43] क़ा।
हकीकत में हूाँ बुतनय़ादी, फ़कीरों की इऩाय़ात हो ।।

म ैंक्य़ा थ़ा कौन हूाँ खदश़ा[44], जो मुद्दत से खटकत़ा थ़ा।
त़ाज्जुब कैसे ेकब तनकल़ा, फकीरों की इऩाय़ात हो ।।

कह़ा ाँसेलेकह़ा ाँपटक़ा डुबोय़ा इश्क ए दररय़ा में।
भुल़ाय़ा भूल भी जजसने, फ़कीरों की इऩायत हो ।।

तज़रब़ा[45]' 'मुक्त' क़ा य़ारों ही सचमुच में तज़रब़ा है।
तज़रब़ा उसको ही होत़ा, फ़कीरों की इऩायत हो ।।

**

७.हकीकत' क़ा नज़ाऱा है

हकीकत'[46] क़ा नज़ाऱा [47] है तो देख ाँूकह़ा–ाँकह़ा ाँ।

[39] फकीर - फकीर शब्द फ़ारसी के च़ार शब्दों से बनत़ा है फ, क्र, य,. र । फ=फ़ाक़ा (भूख पर तनयंणि), क्र=सब्र य़ा संतोष (ककऱ्ाअत), य = हमेश़ा य़ादें, इल़ाही खुद़ा क़ा स्मरण, र=ररय़ाज़त (इब़ादत में सदैर् व्यस्त रहऩा)

[40] कृप़ा

[41] उडऩा

[42] अजस्तत्र् (म़ान्द्यत़ा)

[43] अज्ज़ानत़ा

[44] खटक़ा, संदेह,

[45] अनुभर्, अनुभूतत

जब खुदु क़ा पस़ाऱा'[48] है तो देख ाँूकह़ा–ाँकह़ा ाँ।।

जज़्ब़ा-ए-दैरो हरम, बुतख़ाने मैकद़ा में ।
महबूब सम़ाय़ा है तो ज़ाऊँ कह़ा–ाँकह़ा ाँ।।

प़ाने की तमन्द्ऩा से पद़ाा–नसीं[49] को ढ़ूँढ़ा ।
प़ाकर के भी न प़ाय़ा, तो प़ाऊँ कह़ा–ाँकह़ा ाँ।।

लर्रेज़'[50] जो है लज्ज़त[51], दुतुनय़ा ाँकी लज़्ज़तों में ।
ल़ाय़ा न कहीं ंसे भी, तो ल़ाऊँ कह़ा–ाँकह़ा ाँ।।

हक़्क़ानी हकीकी है और 'मुक्त' ऱाधगनी है ।
तुम भी तो ग़ाके देखो ग़ाऊँ कह़ाँ-कह़ा ाँ।।

**

८.जो बेसह़ाऱा इस गुलचमन क़ा

जो बेसह़ाऱा इस गुलचमन क़ा, उस बेसह़ारे को हम भी ज़ानें।

---

46 सत्र्

47 म़ाय़ाज़ाल

48 सम़ाऩा (पसरने ेकी कक्रय़ा)

49 पदे में रहने ़ाल़ा

50 लब़ालब

51 मज़ा

जो नूरे हस्ती'[52] है बेककनाऱा, उस बेककनारे को हम भी ज़ानें ।।

तरह-तरह की बेशुम़ार[53] कमलय़ा,ाँ कभी मसकुडती कभी उघडती।
है मुस्कऱाती जजस गुलरूब़ा में, उस गुलरूब़ाई को हम भी ज़ानें ।।
जो इश्क ए हदल है ममरले ेमजनूाँ[54], तल़ाश करत़ा है कूचे-कूचे।
ममटती है ममलते ही ख्व़ाहहश़ातें, म़ाशूके लैल़ा को हम भी ज़ानें ।।
जो ज़ानत़ा है जह़ान[55]' स़ाऱा, जो देखत़ा है हमेश़ा सबको ।
पहहच़ान जजसको भले बुरे की, पहहच़ान व़ाले को हम भी ज़ानें ।।
रहत़ा है सबमें होकर के सब कुछ, ऱ्ेइब्तद़ा और ऱ्ेइजन्द्तह़ा[56] है।
मसरूफ़[57] रहते ेहैं मस्त जजसमें, उस मस्त सूरत को हम भी ज़ानें ।।
अनमोल 'मुक्त़ा' क़ा ये खज़ाऩा, गर लूटऩा है मजेसे लूटो।
हकीकी मस्तों की जो हकीकत, ऐसो हकीकत को हम भी ज़ानें ।।

९. मंजज़ले मकसूद' पे मंजज़ल क़ा

मंजज़ले ेमकसूद'[58] पे मंजज़ल क़ा तनश़ा ाँऩाम नहीं।
खो गय़ा जो हदल तो कफर उस हदल क़ा ह़ाल ल़ाम नहीं।।

नज़र से दूरू महल ममल़ा हमेश़ा के मलए ।

52 जीर्न
53 अनधगनत,
54 प़ागलों के सम़ान
55 संस़ार
56 अऩाहद और अनंत
57 व्यस्त
58 च़ाह़ा नय़ा उद्देश्य

ज़मीं ंपे आसमा ाँपे नहींज़ीना[59] नहींब्राम नहीं।।

जजस्म छोडते ेही जजस्म जो ममलता रो् बेपैदा ।
खूबसूरती है बेममसाल जजसमें हाड नहींचाम नहीं।।

पीता हूाँ दम ब दम[60] पे मगर ज़ाके मैकदा में नहीं।
हकीकत में पूतछये तो अगर शीशा नहींज़ाम'[61] नहीं।।

फ़तेह[62] पाया जो यार मारके दुतुनया ाँफरजी[63] ।
शाहत'[64] ममली है बेमुल्के जहााँसुबह नहींशाम नहीं।।

गौर सेसुनके दोस्त तुम भी तजरर िो करो ।
हर वक़्त कह रहा 'मुक्त' दूसरा पैग़ाम नहीं।।

**

१०.खुदमस्त मस्तों की ये मस्त ऑखें

खुदमस्त मस्तों की ये मस्त ऑखें,
उन मस्त ऑखों से खुदा बचाये।
सरूरे हैरात'[65] का र्पलाती याला,
पीकर बहकने से खुदा बचाये ।।

---

59 सीढ़ी, दरवाज़ा
60 हर समय, प्रत्येक सासाँ के साथ
61 याला र्ंजय
62 असत्य संसार
63 बादशाहत
64 बेहोशी
65

हमेशा करती है तलाश उसको,

जो दम र् दम हदल ये तडपता उसको।

बरबाद करती हैं देखते ही,

बरबाद होनेसे खुदा बचाये ।।

इशारा करती हैं जबकक उसको,

समझ में आता है इशारा उनका।

छुपा इशारे में बेइशारा,

ऐसेइशारे से खुदा बचाये ।।

कोई फररश्ता कहीं ंका भी हो,

मुकात्रबले में जो आए कभी भी।

जनाज़ा तनकला हदमागो हदल का,

ऐसेजनाजे से खुदा बचाये ।।

ऑखें फ़कीरों की हीं ंपे रहतीं,ं

जहां ंपे रहता है बेहठकाना।

उन बेहठकानों का बेहठकाना,

उन बेहठकानों से खुदा बचाये।।

आबाद होना है गरचे े'मुक्ता',

उन मस्त ऑखों की तरफ तो देखो।

तनकलते ेजजनमें से मस्त शोले'े[66],

उन मस्त शोलों से खुदा बचाये।।

११.ढूँढ़ता हदल दर ब दर

ढूँढ़ता हदल दर ब दर,

ई हदलरुबा म ैंही तो हूँ।

गुलचमन गुल गुंचये[67]',

66 धचंगारी

67 कली

गुलरूब़ा म ैंही तो हूाँ।।

जजसके डर से ऩाचते,

महत़ाब[68] त़ारे आफ़त़ाब[69] ।

आसम़ा ाँदर पदि ये,

पद़ानिशीं ंम ैंही तो हूाँ।।

मैकद़ाओंऔर शीशों,

में न मस्ती है िरी।

होती मस्ती मस्त जजससे, े

मस्तीय़ााँम ैंही तो हूाँ ।।

चहचह़ाऩा बुलबुलों क़ा,

मुस्कुऱाऩा ब़ाग क़ा ।

खूबसूरती हर गुलों की,

ब़ागऱ् ाँम ैंही तो हूाँ।।

इल्म'[70] ककतने हैं जो, दुतुनय़ा ाँमें न जजनक़ा इजन्द्तह़ा'[71]।

उल्म इल्मों क़ा महल, इल्मद़ा'[72] म ैंही तो हूाँ ।।

म ैंहूाँ, म ैंहूाँ, म ैंही हूाँ, ऐ 'मुक्त' ककससे ेकह रह़ा।

कहऩा सुनऩा मसफि अफ़सों'[73], कुछ भी हो म ैंही तो हूाँ।।

१२.न मुऱादे मज' ि क़ा दुतुनय़ााँ

न मुऱादे मज[74] क़ा दुतुनय़ााँमें मसीह़ा [75] न कोई ।

---

[68] च़ादाँ

[69] सूय ि

[70] ईद्य़ा

[71] अंत

[72] ईद्ऱान

[73] हदऱ्खाटी, कह़ानी

[74] बीम़ारी

[75] ्ैद्य

हो गय़ा आज़ाद तो कफर उसक़ा नसीह़ा'[76] न कोई ।।

गम खुशी कुछ नहींचेहरे पे म़ायूसी भी नहीं।
हदलर्र की य़ाद में कहीं ंज़ाने की तत्रबयत न कोई ।।

गुऩाह बेगुऩाह सभी मौत के मुहाँ में जो गये ।
इश्क में बेनींद के अब नींदं भी आती न कोई ।।

मुद्दतों के ब़ाद में इस हदल को तसल्ली जो ममली ।
देखने ेसुननेकी कभी और ज़रूरत न कोई ।।

फजी हकीकत क़ा हकीकत पे ये पद़ा िजो पड़ा।
हकीकत तो यही पदि-ए-पद़ानिशी न कोई ।।

'मुक्त' क़ा इज़ह़ार यही तुम भी तजुब़ा ितो करो ।
मंजज़ले ेमकसूद पहुुाँचने पे दूसूऱा न कोई ।।

**

१३.बेखुदी क़ा दररय़ा उमड रह़ा

बेखुदी क़ा दररय़ा उमड रह़ा,
कब क्य़ा हो ज़ाये खुद़ा ज़ाने।
जब डूब गय़ा आलम'[77] स़ाऱा,

---

76 नसीहत करनेव़ाल़ा

कब क्या हो ज़ाये खुदा ज़ाने।।

झर रही है मस्त ब़ादलों से,

मुतऱाततर[78] मदमाती बूंदे ।

हदल तडप रहा था चैन ममला,

कब क्या हो ज़ाये खुदा ज़ाने।।

ब़ाखुदी[79] क़ा जंगल ख़ाक'[80] हुआ,

ज़ामलम थेज़ानर्र भाग गये।

ममल गई हुकूमत आज़ादी,

कब क्या हो ज़ाये खुदा ज़ाने।।

मैकदा न ज़ाकर ज़ाम पीया, मसजदा न ककया बुतख़ाने क़ा।

कफर भी ये बेहोशी आ टपकी, कब क्या हो ज़ाये खुदा ज़ाने।।

खुद के घर में आब़ाद हुआ, दुतुनय़ाँ क़ा पदा़फ़ाश हुआ ।

हो गये अलर्ग़दा[81] ऑख-क़ान, कब क्या हो ज़ाये खुदा ज़ाने।।

"म"ँ फलॉ हूाँ जुरित[82] है ककसकी, महकफल में जो कर सके बया।ाँ

ये जुम ि है सरे आम'[83] 'मुक्ता' कब क्या हो ज़ाये खुदा ज़ाने

।।

१४.हो गया हूाँ मस्त

हो गया हूाँ मस्त दुतुनय़ा ाँको ररझ़ाकर क्या करूाँ।

जज़्बे'े[84] जल्ऱा गर'[85] हूाँ दीपक ऱाग ग़ाकर क्या करूाँ ।।

---

77 संस़ार

78 लग़ात़ार

79 अमभम़ान

80 ममट्टी

81 जुद़ा

82 स़ाहस

83 सबके स़ामने

84 ठस़ाठस,

हदल ममल़ा हदलर्र से ज़ाकर खुदी बेखुदी से ममली।
हूूँ जह़ाने हस्ती म,ें हस्ती ममट़ाकर क्य़ा करूूँ ।।

पैम़ाने पीकर के हर ज़ा'[86] देखत़ा हूूँ मयकद़ा ।
म ेंहूूँ जब खुद क़ा खुदु मैकद़ा ज़ाकर क्य़ा करूूँ ।।
इज़ह़ार करते ेंऱात हदन इंजील ऱेद कुरों सभी ।
कुछ भी कहऩा शम ि है कफर म ेंबत़ाकर क्य़ा करूूँ ।।
पंडडतों को है नमस्तेमौलर्र्यों को है सल़ाम ।
दे चुक़ा मुशदि[87] को सर कफर सर झुक़ाकर क्य़ा करूूँ ।।
'मुक्त' क़ा पैग़ाम आलम में हमेश़ा छ़ा रह़ा ।
ज़ा ब ज़ा फ़रम़ान है तब कफर सुऩाकर क्य़ा करूूँ ।।

**

१५.ऑख देखते ेही ऑख

ऑख देखते ही ऑख आखाँ देखते ेही नहीं।
मंजज़ले ेमकसूद'[88] पहुुँचकर नदी बहती ही नहीं।।

खुद़ा के म़ाइने[89] हैं जो एक हीं खुद सबक़ा ।

---

[85] प्रक़ाश
[86] जगह
[87] सद्गुरु
[88] लक्ष्यपद, आखरी मुक़ाम
[89] अथि

हकीकत यही सचमुच में कोई ब़ात सूझती ही नहीं।।

हर क़्र्त है फ़रम़ान'[90] इस दुतुनय़ा ाँमें तहीदस्तों"[91] क़ा ।

खुद क़ा ही पस़ाऱा ही खुद पर लीक[92] टूटती ही नहीं।।

जो देखऩा थ़ा देख मलय़ा देखने ेऱ्ाल़ा ही कौन ।

पर ऱाज़ खोलने को भी ये ज़ब़ा ाँखुलती ही नहीं।।

फूटती तकदीर जब आत़ा है 'मुक्त' महकफ़ल में ।

फ़कीरों की इनय़ात त्रबऩा तकदीर फूटती ही नहीं।।

१६.ज़म़ाने ेकी थी जो ख्ऱ्ाहहश़ातें

ज़म़ाने की थी जो ख्ऱ्ाहहश़ातें,

गई जहन्द्नुम'[93] में तनज़ात[94] प़ाय़ा।

तमन्द्ऩा'[95] बैठी त़ाबूत'[96] अंदर,

हुआ जो म़ातम[97] तो तनज़ात प़ाय़ा ।।

---

90 बय़ान, कहऩा,

91 ख़ाली ह़ाथों ऱ्ाले, मह़ात्म़ा

92 लकीर

93 नरक

94 छुटक़ाऱा

95 आश़ा

96 मुद़ा िरखने क़ा डडब्ब़ा

97 रोऩा पीटऩा

कभी ककसी से न कोई मुहब्त,
कभी ककसी से न कोई नफरत ।
न कोई है मेऱा न म ैंककसी क़ा,
दुतुनय़ा ाँदुरुंगी से तनज़ात प़ाय़ा ।।

कभी तो आऩा कभी तो ज़ाऩा,
थ़ा मुद्दतों क़ा खय़ालेअफ़स़ॉ।
हकीकत में ही जो मनैं देख़ा,
ये ख़्व़ाब खय़ालों से तनज़ात प़ाय़ा ।।

कभी तो मौल़ा[98] कभी तो बंद़ा'[99],
कभी तो म़ाद़ा कभी पररन्द्द़ा[100]।
त्रबगडते ेबनते ेखुद ु में हमेश़ा,
त्रबगडते ेबनने से तनज़ात प़ाय़ा ।।

पलक उठ़ानेसे है ये क़ायम,
पलक धगऱानेसे है कय़ामत।
मुब़ारक हो ये खुद क़ा कररश्म़ा'[101],
क़ायम कय़ामत से तनज़ात प़ाय़ा ।।

मखलूके[102] हस्ती जो कुछ भी म ैंहूाँ,
खुद़ा परस्तों की हस्ती म ैंहूाँ।
खुद की जो हस्ती है खुद़ा परस्ती,
गफलत परस्ती से तनज़ात प़ाय़ा ।।

जो कुछ भी कहऩा बेखौफ हो,
करके तख़्ते ेसूली मंसूर म़ातनंद ।
की है इऩायत फ़कीरों ने जब,
तब से ही 'मुक्त़ा' तनज़ात प़ाय़ा ।।

---

98 म़ामलक

99 नौकर

100 पिी

101 चमत्क़ार

102 संस़ार के

**

१७. इस हदल की यकसुई' में

इस हदल की यकसुई[103]' में दीदारे हदलरूब्रा[104] है।
क्य़ा खूब गुलचमन क़ा हर ज़ा'[105] में गुलरूब्रा है ।।

ममलत़ा न स़ाकक्रय़ा'[106] जब करत़ा तल़ाश ए कूए[107] ।
पैम़ाऩा[108] पकडते ेही हरऱाय में मैकैद़ा है ।।
महबूब[109]' जुस्तजू[110] में होत़ा है क्यों परेशॉ ।

103 एक़ाग्रत़ा
104 आत्म़ा
105 हर जगह
106 सद्गुरू
107 गली
108 आत्मबोि

खुद को ही गौर कर तू कतऱा कतऱा[111] ही खुद़ा है ।।

जजस्म़ानी[112] ज ंज़दगी में दुशुऱ्ार[113]" उसक़ा ममलऩा ।

ममलत़ा है जो भी अफसॉ[114] न ममलत़ा न जुद़ा है ।।

त़ाबूते'[115] तहख़ाने[116] से भी, 'मुक्त़ा' की यह हकीकत ।

तनकलेगी हर ज़ब़ा ॅंसे नुस्ख़ा ये यकींदों[117]" है ।।

**

१८.ककय़ा जो तकि दुतुनय़ांक़ा

ककय़ा जो तकि दुतुनय़ां क़ा, मुकद्दर हो तो ऐस़ा हो।

मौत से भी नहींडरत़ा, मुकद्दर हो तो ऐस़ा हो ।।

तनग़ाहें जजसकी महबूबी[118]', न उस्म़ानी[119] न जजस्म़ानी।

मकीं[120] ख़ाऩाबदोशों क़ा, मुकद्दर हो तो ऐस़ा हो ।।

उमडती बेखुदी मस्ती की, लहरों में जो लहऱात़ा ।

हदऱ्ाऩा है जो हदलर्र क़ा, मुकद्दर हो तो ऐस़ा हो ।।

चुक़ा जल इश्क शोले ेमें, ममस़ाले ेजैस़ा परऱ्ाऩा ।

---

109 य्. ार

110 तल़ाश

111 कण-कण

112 देह़ामभम़ान

113 कहठन

114 कह़ानी

115 संदूकू जजसमें ल़ाश रखी ज़ाती है

116 कब्र

117 ईश्र्सनीय

118 जजसेप्रेम ककय़ा ज़ाये,

119 आध्य़ाजत्मक

120 मक़ान में रहने ऱ्ाल़ा

गई जन्द्नत जहन्द्नुम में, मुकद्दर हो तो ऐसा हो ।।

न रहती य़ाद रोजे'े[121] की, न रहती है नमाज़ों की ।

य़ादग़ारी है न य़ादों की, मुकद्दर हो तो ऐसा हो ।।

न ज़ाता मैकद़ा अंदंर, न ख़्ड्ऱाहहश बुतकद़ाओं की।

मुसीबत टल गई स़ारी, मुकद्दर हो तो ऐसा हो ।।

न मतलब बेगुऩाहों से, नहींमलतब गुऩाहों से ।

हुआ जो 'मुक्त' दोनों से, मुकद्दर हो तो ऐसा हो ।।

**

१९.देखनेऱ्ालों को देखत़ा हूाँ

देखने ेऱ्ालों को देखत़ा हूाँ देखनेके मलए।

करत़ा हूाँ मौत इंतज़ार करने के मलए ।।

सचमुच में तअज्जुब तो यही ख्य़ाल में दुतुनय़ा ाँहै छुपी।

खुद पे नज़र ड़ालत़ा हूाँ खय़ाल ख़ातम़ा के मलए ।।

भूल थी कैसी ये बडी हमको खुद़ा से ममलऩा।

तकि कर हदय़ा जो भूल, भूल भूलने के मलए ।।

स्ऱ्ागाँ ऱ्ाले के मलए स्ऱ्ागाँ बऩाय़ा थ़ा जो म।ैं

प़ाकर के बैठे गय़ा हमेश़ा ही बैठेनेके मलए ।।

खोलते ेथे ेऑख क़ान दोनों इस्म' जजस्मों से।

121 व्रत

खेलने ेऱ्ाल़ा हूाँ खेल खेल खेलने के मलए ।।

फ़कीरों क़ा तजद़ा िहै 'मुक्त' मस्त की तनग़ाहों में।
मकसूद है बेखुदी को दोस्त कब्र भेजने के मलए ।।

**

२०.महसूस हो रह़ा है जो सचमुचु

महसूस' हो रह़ा है जो सचमुच में बुतकद़ा[122] ।
इस बुतकदे में ज़ा ब ज़ा[123] लबरेज़' हदलकद़ा[124] ।।

पद़ा िनहींज़ऱा से भी पद़ानिर्शी कह़ा ाँ।
ज़ाहीर ज़हर सबको है कफर तनह़ााँ[125] कह़ा ाँ।।

जो भी तनश़ान उसके ही तो बेतेनह़ााँकह़ा ाँ।
दरअसल होकर मकी कफर बेमक़ााँकह़ा ाँ।।
ये ऱाज़ मुब़ारक हो हकीकत क़ा जो कद़ा ।

कहत़ा है 'मुक्त' गौर सेलेत़ा है अलर्द़ा" ।।

**

२१. य़ाद की भी य़ाद नहीं ः

य़ाद की भी य़ाद नहींककसकी य़ाद कौन करे ।
दूसऱा जब है ही नहींतब य़ाद ककसकी कौन करे ।।

म़ालूम नहींथ़ा मुझे कक मज िये आयेग़ा कभी ।

122 मंहदर
123 यथ़ाथि
124 भगऱ्ान आत्म़ा,
125 छुप़ा हुआ

मज़े ंमसीहा' नहींतब य़ाद ककसकी कौन करे ।।

हदल हदम़ाग दोनों ही मुकद्दर' से जहन्द्नुम में गये ।
य़ाद ऱाल़ा ही नहींय़ाद ककसकी कौन करे ।।
जजसमें दरो' दीव़ार नहीं ज़ीऩा नहींब़ाम नहीं।
रहत़ा हूूँ बेहद्दे' महल य़ाद ककसकी कौन करे ।।
हर गुल गुलश़ान में म ैंगुजरत़ा हूूँ ममसले भव़ूँर ।
फुसति को भी फुसति नहींतब य़ाद ककसकी कौन करे ।।
'मुक्त' मस्तों की तनग़ाहों क़ा तीर हदल को लग़ा।
होश आत़ा ही नहींय़ाद ककसकी कौन करे ।।

**

२२. देख ले हर रौ' में तू खुद क़ा नज़ाऱा

देख ले हर रौ'[126] में तू खुद क़ा नज़ाऱा ऱाह-ऱाह ।
देखते ही ख़्व़ाबे दुतुनय़ा ंूँखुद फ़ऩा[127] हो ज़ायेगी ।।
मस्त होऩा च़ाहत़ा तू हर तरह बब़ाादि हो ।
दुतुनय़ा ंूँदुरुंगी तकि' कर सब कफक्र सेआज़ाद हो ।।
जंज़दगी क़ा है मज़ा बेकफ़क्र हो ज़ाऩा ही दोस्त ।
खुद परस्ती क्य़ा बेकफ़क्री मस्त रहऩा जंजदगी ।।
ये दुतुनय़ा ंूँसच में अफ़स़ाऩा त्रबगडती बनती रोज़ाऩा।
हमेश़ा म़ारती त़ाऩा, दोस्ती न कर दोस्ती न कर ।।
तमन्द्ऩा से बरी' होऩा हरूफ़े 'मुक्त' के म़ातनंदं ।
तम़ाश़ा देख कफर अपऩा कय़ामत आनेव़ाली है ।।

---

126 स्रुतु

127 ऩाश होऩा

२३.नहीं है मशकऱ्' कभी ककसी से

नहींहै मशकऱ्' कभी ककसी से, जो एक दररय़ा के बलर्लेहैं।
धगल़ा करूँ म ैंक्य़ा और ककससे,े जो एक दररय़ा के चलर्ले हैं ।।

भल़ा कहूूँ तो शरममन्द्गी है, बुऱा कहूूँ तो बेहूूदगी है।
हदूदूी[128]' नजरों से मुड के देख़ा, जो एक दररय़ा के र्लर्लेहैं ।।

जमी न आसमों न च़ादाँ सूरज, आबोहऱ्' न कोई मसत़ारे ।
रखुद में ही खुदु क़ा ही ये पस़ाऱा, जो एक दररय़ा के बलर्ले हैं ।।

क्य़ा खूतूरबय़ा ाँहैं इन सूरतों में, कभी तो ज़ाहहर कभी तो ब़ातन[129]'।
तरह-तरह के नमूने जजनके, जो एक दररय़ा के र्लर्लेहैं ।।

बेइजन्द्तह़ा यह अप़ार दररय़ा, न कोई भी करती न कोई भी स़ाहहल'।
म़ातनदं 'मुक्त़ा' यह हज़ारों जजसमें, जो एक दररय़ा के र्लर्ले हैं ।।

**

२४. जब सह़ाऱा गय़ा तब सह़ाऱा ममल़ा

जब सह़ाऱा गय़ा तब सह़ाऱा ममल़ा, जंज़दं़ा रहने क़ा कोई सह़ाऱा नहीं ।
सच में जीऩा उसी क़ा जगत में सही, जजसके जीनेक़ा कोई सह़ाऱा नहीं।।

ये हदल ढूूँढत़ा थ़ा जजसे ेदर ब दर, कभी क़ाज़ी र् मुल्ल़ा, बरहमन बऩा ।
पर ममल़ा कैस़ा जैस़ा नहींकुछ ममल़ा, त्रबन ममले ेकोई होत़ा गुज़ाऱा नहीं।।

जजसे म़ानत़ा थ़ा हकीकत यही, थ़ा र्ो फजी र्ो फ़ानी र् फ़रेत्रबय़ााँ' ।
लेककन म़ाऩा थ़ा जजसनेई पद़ानिर्शी, दरअसल कैस़ा पद़ा िउघ़ाऱा नहीं ।।

---

128 सीममत

129 छुपे

क़ात्रबलेजज़क्र रूपोश़ा कहऩा है क्य़ा, जो कक ख़ामोश इतऩा है बेइजन्द्तहा़ ।
जो कक करता़ है दीद़ार सबक़ा हीं, कर लो दीद़ार दूजा़ दीद़ाऱा'[130] नहीं ।।
तफसीलेमहबूब त़ामील कर, 'मुक्त' महकफल की ब़ातें समझ बूझकर ।
तकि कर दो तमन्द्ऩा तसव्व़ुर सभी, और कहूाँ क्य़ा म ैंकुछ भी इश़ाऱा नहीं।।
**

२५. बक़ा' ये फनों ज्ज़ादंगी न रही

बक़ा'[131] ये फनों जंजदगी न रही,
ज्ज़ादगी जो ममली ई सद़ा के मलये।
जजसेप़ाकर हदव़ाऩा बऩा घूमता़,
जग में फेरी हमेश़ा लग़ाता़ हूाँ म ैं।।

कह़ा ाँथ़ा र्ो क्य़ा थ़ा, कह़ा ाँम ैंहूाँ, क्य़ा,
ए तसव्व़ुर थ़ा जन्द्ऩात म़ाऱा गय़ा।
कैसी खब्तुलहव़ासी[132] ये सर पे चढ़ी,
बेशरम हो करके कहकह़ाता़ हूाँ म ैं।।

गुल चमन कैस़ा कैस़ा अनोख़ा खखल़ा,
गुंचे द़ामन की क्य़ा क्य़ा यह हैंखूत्रबय़ा।ाँ
यह गमकता़ है क्य़ा गुलऱाने' गुलरूब़ा,
ममसले हो बुलबुलें चहचह़ाता़ हूाँ म ैं।।

अंदरे आसम़ा ाँमस्त दररय़ा भऱा,
जो कक बेइव्तद़ा[133]' और बेइन्द्तह़ा।

130 दशनीय
131 जजजन्द्नी (जन्द्म)
132 अथर्र्क्षित्ता, प़ागलपन

ब्रह्मा र्ष्णु मशऱ्हदक यह हैं बुलबुलें,
जजसमें हर क्त गोत़ा लग़ात़ा हूाँ म ैं।।

यकीनन अगर मुझसे पूछो सही,
ज़्ि़दा रहने क़ा मकसद मेहरब़ा ाँयहीं।
हदल ए आलम को पैग़ाम देत़ा रहूाँ,
इसमलये मस्त ब़ातें सुऩात़ा हूाँ म ैं।।

जो फ़कीरों की सुहर्त' कभी न ककय़ा,
उनके कदमों पे कुय़ा ांकभी न हुआ।
भल़ा समझेग़ा क्य़ा 'मुक्त' अल्फ़ाज' को,
ज़ा र् ज़ा स़ाज़" में गीत ग़ात़ा हूाँ म ैं।।

**

२६.खुद़ा की कमबख्ती

ख़ामोश क़ा खज़ाऩा ख़ामोश ढूाँढत़ा है ।
कदमों तलेहै दौलत दौलत को ढूाँढत़ा है ।।

कमख्र्ती'[134] कमख्र्[135] ने आकर ककिर से घेऱा ।
मखलूके[136] खुद़ा होकर खुदा को ढूाँढत़ा है ।।

जजसकी रोशनी से आलम है स़ाऱा रोशन ।
रोशन क़ा भी रोशन है रोशन को ढूाँढत़ा है ।।
महत़ाब[137]' आफ़त़ाबे[138] त़ारे हैं जगमग़ाते े।

---

133 अऩाहद

134 दरररत़ा

135 दररर

136 संस़ार के

137 च़ादाँ

इनक़ा भी जो सहारे सहारे को ढूाँढ़ता है ।।

सबकी है जो अकीदत[139] सबकी है जो तरीकत[140]' ।

हक की भी जो हकीकत' हकीकत को ढूाँढता है ।।

बंनि र् मिो जजसमें म़ातनंदं ख़्व़्ाब के हैं ।

जो 'मुक्त' है हमेश़ा मुजक्त को ढूाँढ़ता है ।।

**

२७. मुब़्ारक हो तेऱा स़ाकी

मुब़्ारक हो तेऱा स़ाकी रहे आब़्ाद मैख़ाऩा ।

जजिर ज़ाऊाँ जह़ा ाँपर हो हदलेभरपूर पैम़ाऩा ।।

र्पल़ाय़ा ज़ाम'[141] यह तूने न क़ात्रबल दीनों दुतुनय़ा ाँके ।

देखत़ा हूाँ बेहेदल होकर नज़र आत़ा है य़ाऱाना ।।

अमूमन[142] कहते ेहैं पीनेसे आ ज़ाती है र्ेहोशी ।

झुक़ा सर आ रही मस्ती हुआ ग़ायब र्ेहोश़ाऩा ।।

कय़ामत जब कभी होती ज़मी न आसम़ा ाँहोत़ा ।

कय़ामत खुद ु र् खुद 'म'ैं ही रह़ा ब़ाकी जो अफ़स़ाऩा ।।

नहींमतलब है उस मय से जो पीते हदल त्रबगड ज़ाए।

मेहरब़ा ाँगर ममल़ा स़ाकी जो पीते ेही बदल ज़ाऩा ।।

गुजज़रत़ा'[143] कौन थ़ा, क्य़ा हूाँ आइंद़ा'[144] क्य़ा रहूाँग़ा म।ैं

---

138 सूय ि

139 ईश्व़्ास,

140 कम्किाण्ड

141 ब्रह्म़ानंद महदऱा, य़्ाल़ा

142 प्ऱाय:

143 भूत

144 भर्ष्य

उलझनें हल हुई स़ारी यही दुतुनय़ा ाँक़ा मुरझ़ाऩा ।।

पीय़ा एक ब़ार मस्ती क़ा है मनैं र्हदते[145]' य़्ाल़ा ।
हमेश़ा लहरों में गोत़ा लग़ात़ा रहत़ा मस्त़ाऩा ।।

बच़ाये इंस़ा अल्ल़ाहे'[146] 'मुक्त' स़ाकी की नज़रों से ।
नज़र पडती है जब जजस पर र्ही हो ज़ात़ा नज़ऱाऩा ।।

**

२८. फ़कीरी फ़ाक़ा ककय़ा है जजसने े

हकीकी

फ़कीरी फ़ाक़ा ककय़ा है जजसने,
ऱाक्लेइल़ाही'[147] को हो मुब़्ारक।
हो करके र्ऱ्ाद र्जूदू'[148] अपऩा,
ममट़ाय़ा जजसनेहो उसे ेमुब़्ारक ।।

एतऱाज[149] दोज़ख[150] न बहहरते'[151] ख्ऱ्ाहहश,
कह़ा ाँनहीं 'म'ैं यह यकीन जजसको।
खुद में ही खुदु को देखत़ा जो,
खुदमस्ती-मस्तों को हो मुब़्ारक ।।

खुद भी सह़ाऱा है नहींककसी क़ा,
खुद क़ा सह़ाऱा भी नहींहै कोई।

---

145 अद्वैत
146 अगर ईश्वर नेच़ाह़ा
147 ईश्वर अजस्तत्र् नफरत,
148 नरक
149 स्र्ण ि
150
151

हमेशा रहता जो ऐेसहारा,
उस ऐेसहारे को हो मुब़ारक ।।

न ज़मीं ंपे रहता न आसमा ाँपे,
न रहता जन्द्नत न ही जहन्द्नुम ।
रहता है महले ेमखलूक में जो,
सलाम मसजदा हो उसे ेमुब़ारक ।।

कफ़द़ा[152] है जजस पे यह स़ारा आलम,
तलाश करता है कूए-कूए'[153]।
र्ही हकीकत है नज़र में जजसके,
इस हक परस्ती[154] को हो मुब़ारक ।।

कभी न आती है य़ाद अपनी,
कभी न आती है दूसूरों की।
है य़ाद य़ादों की य़ादग़ारी,
उस य़ादग़ारी को हो मुब़ारक ॥

ख़ाऩाबदोशों[155] खुद़ा बच़ाये,
भरी मुहब्र्त से तनग़ाहें जजसकी।
हुआ तनग़ाहों सेतनहाल 'मुक्ता',
ऐसी तनग़ाहों को हो मुब़ारक ।।

२९.सत्य क़ा पैग़ाम सुऩाने में

सत्य क़ा पैग़ाम सुऩानेमें कोई स़ाथ नहीं।
ऩाऱा-ए-हकीकत क़ा लग़ाने में कोई स़ाथ नहीं।।

बुज़हदल[156]' दुतुनय़ा ाँमें घूम घूम के कोमशश भी ककय़ा।

---

152 कुब़ानि
153 जगह जगह
154 सत्य क़ा पुज़ारी
155 घुमक्कड (जजनक़ा घर क़ांर्ी पर हो)
156 डरपोक

हर हदल में शम्पम ए[157]' 'म'ें के जल़ाने में कोई स़ाथ नहीं।।

जह़ा ाँकी ज़ान हीं, मंजज़लेमकसूद हीं।
खुद़ा क़ा खुदु भी बत़ानेमें कोई स़ाथ नहीं।।
क़ात्रबले ेत़ारीफ़ यह कैसी बेर्कूफ़ी है ।
मगर खुद को बेर्कूफ़ बऩानेमें कोई स़ाथ नहीं।।
तअज़्जुर् यह उसे ेकमबख़्ती'[158] ककिर से सूझी ।
हट़ाऩा खुद को पडेग़ा यह हट़ानेमें कोई स़ाथ नहीं।।
रहत़ा है 'मुक्त' मौज में दुतुनय़ा ाँसे बेिडक होकर ।
जो मौत की भी मौत भग़ानेमें कोई स़ाथ नहीं।।

* *

३०. हदल कद़ा -ए-कद़ा है

हदल कद़ा[159]' -ए-कद़ा है यह स़ाऱा जह़ा, ाँ
जो यकीनन है यह ज़ा ब ज़ा बुतकद़ा ।
जजसने देख़ा है हरसू[160] में नूरेज़ह़ा ाँ[161],
उसे ेहर क़्तत हर ज़ा पे है मैकद़ा ।।

थ़ा गुजज़रत़ा[162] हीं आज[163] भी सब दरअसल,
और आगे ेभी[164] उसके मसऱा कुछ नहीं।
पर इऩायत फ़कीरों की हो जब कभी,

157 दीप
158 दुभ़ााग्यि
159 जह़ांहदल लगे
160 च़ारों तरफ़ (हर हदश़ा)
161 संस़ार क़ा प्रक़ाश
162 भूत
163 र्त़िमान
164 भर्ष्य

कफर ज़रूरत न ज़ाने की है बुतकद़ा ।।

देख हहन्दू ़ूर् मुसमलम की खूंरेजज़य़ा'ाँ[165]',
तरस आत़ा है मज़हब के हैं ज़ानर्र ।
लेककन जजस क़्तं दोनों जुद़ा हो गये,
न तो क़ाब़ा कलीस़ा नहींबुतकद़ा ।।

खुद म़ायने 'म'ैं हूाँ सब क़ा सभी,
जो अमलफ़ एक मुतलक न दूज़ा कोई ।
ऐ बत़ा धगरज़ा क़ाब़ा कलीस़ा कह़ा,ाँ
आऩा ज़ाऩा कह़ा ाँऔर कह़ा ाँबुतकद़ा ।।

क़ात्रबले ेगौर एतब़ार कर 'मुक्त' क़ा,
गरचे ेदुतुनय़ा ाँमें सहदयों से बेज़ोर[166] है।
हदलकद़ा म ैंहूाँ और मैकैद़ा म ैंहूाँ जो,
मसजद़ा म ैंहूाँ म ैंहूाँ सभी बुतकद़ा ।।

**

३१. गर सल़ामत रहे मयकद़ा

गर सल़ामत रहे मयकद़ा स़ाकक्रय़ा ।
तो जगह ब जगह बुतकद़ा स़ाकक्रय़ा ।।

पीते पीते बेहोशी बेहोशी गई ।
कतऱा कतऱा है लर्रेज' ए स़ाकक्रय़ा ।।
गम खुशी दोनों यकसों जहन्द्नुम गए ।

झूमत़ा हूाँ नशे ेमें सद़ा स़ाकक्रय़ा ।।

जीनेमरने की कोई तमन्द्ऩा नहीं।

165 खूनखऱाब़ा (रक्त प़ात)

166 व्य़ाकुल

हो गय़ा खत्म क़ानून ऐ स़ाकक्रय़ा ।।

गुलरूब़ा गुाँचे े गुलश़ान हूाँ म

ैं ब़ागश़ ााँ।

चहचह़ात़ा हूाँ म ैं बुलबुले स़ाकक्रय़ा ।।

गंवबा ही में न जुगनों ने ऐ स़ाकक्रय़ा ।।

'मुक्त' कक़ा होग़ा दुुनय़ा से ऐ स़ाकक्रय़ा ।।

**

३२. चल़ा थ़ा बेपत़ा के मलये

चल़ा थ़ा बेपत़ा के मलये खुद को बेपत़ा प़ाय़ा ।
कह़ा ाँपे ककस तरह है तनश़ा ााँयह भी न बत़ा प़ाय़ा ।।

तकरीर[167]' कुऱा ााँरिेदें की सब कर थके ह़ाकफ़ज'[168] मुल्ल़ां३।
करटें बदली तो म ैंहर रों में बेपेत़ा प़ाय़ा ।।

कोमशश तो यही थी कभी प़ाने पे म ैंज़ाऊाँग़ा बदल ।
प़ाऩा न प़ाऩा ख़्व़ाब थ़ा म ैंजैस़ा थ़ा रैस़ा प़ाय़ा ।।

जजस खुद़ा के ऱासते ेरेत़ाब है स़ारी दुतुनय़ा ााँ।
अमलफ़[169] पे गौर जब ककय़ा तब खुद में ही खुद़ा प़ाय़ा ।।

मंजज़ले ेमकसूद पे ख़्व़ाहहश थी पहुाँचने की बडी ।
मंजज़ले ेमकसूद को हर ज़ा में ज़ा ब ज़ा'[170] प़ाय़ा ।।

'मुक्त' क़ा पैग़ाम मुक्त को ही मुक्त करत़ा है।
हकीकत में पूतछये अगर प़ाय़ा को भी नहींप़ाय़ा ।।

---

167 व्य़ाख्य़ान, भ़ाषण

168 जजसेकुरआन कंठस्थ हो

169 प्ऱारंभ

170 प्रत्येक स्थ़ान

३३. दीदार' ए हदलरुब़ा क़ा

दीदार' ए हदलरुब़ा क़ा दीद्ारे कहकहा'[171] है।
जजसने उिर को देख़ा र्ो कफर इिर कह़ा ाँहै ।।

हकीकत में हदल जो बेहदल ऩामो तनशॉ न कोई।
ख़ामोश बे ख़ामोशी दोनों भी न यह़ााँहै न यह़ााँहै ।।

नेकी बदी न त्रबल्कुल ख़्ि़ाब र् ख़्य़ाल'[172] समझो।
कुछ भी न दीनों दुतुनय़ााँरिती न आसम़ा ाँहै ।।

कहऩा है कुछ बेशमी सुनऩा है मसफि अफ़सों।
सबमें ऊाँच़ा है सबको लेककन र्ो ल़ाज़ब़ा ाँ[173]है ।।

है चरमदीद ए जो चरम' हमेश़ा हैरााँ।
'मुक्त़ा' मकीं ंजह़ा ाँमें कफर भी र्ो ल़ा मक़ा ाँहै।

**

३४. म ैंअपने ेआप पे हूाँ आमशक

म ैंअपनेआप पे हूाँ आमशक, कोई कुछ कहत़ा कोई कुछ कहत़ा।
म ैंआमशक क्य़ा म़ाशूक भी हूाँ, कोई कुछ कहत़ा कोई कुछ कहत़ा।।

इश्क ए लब़ालब दररय़ा में, गरक़ाब'[174] हुआ आलम स़ाऱा ।
कुछ भी न रह़ा ऩामो तनशॉ, कोई कुछ कहत़ा कोई कुछ कहत़ा ।।

द्वैत़ाद्वैत के दलदल में, फाँसऩा है त्रबल्कुल ऩाद़ानी।
रहऩा अलमस्त' फ़कीरी में, कोई कुछ कहत़ा कोई कुछ कहत़ा ।।

---

171 उपम़ा- चीन के हदि़ार की

172 -कफजुल

173 अतनर्चिनीय

174 डुबऩा

गमी खुशी क़ाफ़ूर' हुई, य़्याल़ा पीकर खुदु मस्ती क़ा।
फ़ुसति भी नहींकुछ कहने की, कोई कुछ कहत़ा कोई कुछ कहत़ा ।।

ऑख क़ान ल़ाच़ार हुए, और हदल भी चकऩाचूर हुआ।
क्य़ा नश़ा क़ात्रबले ्ाहदल पसंद, कोई कुछ कहत़ा कोई कुछ कहत़ा ।।

है सच में मज़्ा इसे ्ापीने क़ा, जब अश ि्र् ज़मी क़ा पत़ा न हो।
जजसे पीकर 'मुक्त़ा' मुक्त हुआ, कोई कुछ कहत़ा कोई कुछ कहत़ा ।।

**

३५. मस्तों के जो इश़ारे समझेग़ा

मस्तों के जो इश़ारे समझेग़ा मस्त होग़ा।
उनकी कृप़ा से उनको समझेग़ा मस्त होग़ा ।।
मस्ती में मस्त खेलें हाँस हाँस के तूफ़ान झेलें।

मस्त़ानेदीऱ्ाने को ज़ानेग़ा मस्त होग़ा ।।

अज़गैबी'[175] ब़ात बोल ्ैदुतुनयों की पोल खोलें ।
कदमों पे हमेश़ा जो लोटेग़ा मस्त होग़ा ।।

कहत़ा ज़म़ाऩा कुछ भी हदन ऱात जल रह़ा है।
मस्ती हो कफर मुब़ारक झूमेग़ा मस्त होग़ा ।।

'मुक्त़ा' की मुक्त ऱ्ाणी खोकर ज़ूद' कहती ।
सब कुछ ममट़ाके आप़ा[176] आयेग़ा मस्त होग़ा ।।

**

---

175 जजसेकोई न ज़ाने(अटपटी ब़ातें)

176 अहंक़ार

३६. तनज आतम की अनुभूतत त्रबऩा

तनज आतम की अनुभूतत त्रबऩा, तनज आत्ऩानंद को क्मा ज़ाने ।
अनब्म़ाही ककत़ाब ेंपढ़ करके, ससुय़ाल की ब़ातें क्मा ज़ाने।।

सब ऱ्ेद ऩुय़ान कुय़ान ऩढ़ा, जीर्न स़ाय़ा ऱ्ेद़ान्द्त ऩढ़ा ।
ऩय ऩढ़ने ऱ्ाले आमलम'[177] को, भुशदि[178] की भेहय त्रफन क्मा ज़ाने ।।

अस्तीतत चय़ाचय में व्म़ाऩक, ई 'भ'ैं हूॉ 'भ'ैं हूॉ फोर यह़ा ।
जो श्रुतत की टेय कबी न सुनी, अमबभ़ानी भुयख क्म़ा ज़ाने।।

हो ज़ा कुब़ाानि फ़कीयों के, कदभों ऩे झुक़ा दे सय अऩऩा ।
कपय देख नज़़ाय़ा खुद ु क़ा ही, गय देख़ा नहींतो क्म़ा ज़ाने।।

बगऱ्ान आत्म़ा गुरशन भें, बगऱ्ान 'भुक्त' ही गूॉज यह़ा ।
ज़य़ा ज़य़ा'ि 'भ'ैं हूॉ 'भ'ैं हूॉ जजसने न सुऩा ऱ्ो क्म़ा ज़ाने।।

३७. हकीकी भस्ती भें भस्त होग़ा

हकीकी भस्ती भें भस्त होग़ा,
इश़ाये भस्तों के ऱ्ो ही ज़ाने।
र्ूद खोम़ा है जजसनेअऩऩा,
नज़़ाये भस्तों के ऱ्ो ही ज़ाने ।।

नहींनसीह़ा' न कोई नसीहत,
भज़हफी झगडों से जो अरहद़ा ।
फ़कीयी ह़ामसर जजसे ेभुफ़ायक,

177 ईर्द्ऱ्ान
178 सद्गुरु

ख़ाऩाबदोशों को ऱ्ो ही ज़ाने ।।

दीऱ्ाऩा खुदु पे लहऱाऩा खुद पे,
ऱाम़ा ाँभी खुदु ही परऱ्ाऩा खुदु पे ।
छलक पडी है खुदा़ई मस्ती,
खुदा़ परस्तो को ऱ्ो ही ज़ाने ।।

ममली मुकद्दर से है बेशमी,
कभी तो रोऩा कभी तो हाँसऩा ।
र्पय़ा है कैसी अनोखी य़्ाल़ा,
य़्ाल़ा परस्तों को ऱ्ो ही ज़ाने।।

हदम़ागो हदल सब गए जहन्द्नुम,
म़िझ़िर दररय़ा में डूब़ा आलम ।
गलेर्पन्द्हाए जो ह़ार 'मुक्त़ा',
मस्त़ाऩा मुक्त़ा को ऱ्ो ही ज़ाने ।।

३८. रोकर पूछे हाँसकर बोले े

रोकर पूछे हाँसकर बोले,
टुकडों की मोहत़ाज' रे।
भ़ाई रहऩा स़ाऱ्िन,
यह दुतुनय़ा ाँिोखेब़ाज़ रे ।।

ब़ालू की दीऱ्ाल उठ़ायै,
आसम़ान में ब़ाग लग़ारै्।
देख देख के जजय़ा ललच़ारै्, ै
कभी तो रोरै् कभी तो ग़ारै्।।

खुद क़ा ख़्य़ाल करें नहहं ंकबहूाँ,
जो सबक़ा मसरत़ाज रे।
भ़ाई रहऩा स़ाऱ्िन,
यह दुतुनय़ा ाँिोखेब़ाज़ रे ॥१॥

आऱ्ागमन क़ा झूल़ा झूलै,
अपने"म"ै को हमेश़ा भूलै ।
दुखु को सुख, सुख को दुखु म़ाने,
संत शरण को नहींपहच़ानै ै।।
खुद क़ा ख़्य़ाल करें नहहं ंकबहूाँ,
जो सबक़ा मसरत़ाज रे ।
भ़ाई रहऩा स़ा़ि्नि,
यह दुतुनय़ा ाँिोखेब़ाज़ रे ॥२॥
दुतुनय़ा ाँदीखै भोली भ़ाली,
सच में पूछो ऩाधगन क़ाली।
जग ज़ानेपर ख़्व़्ाब ख्य़ाली,
सूझैस़ार्न ही हररय़ाली ।।
खुद क़ा ख्य़ाल करें नहहं ंकबहूाँ,
जो सबक़ा मसरत़ाज रे।
भ़ाई रहऩा स़ा़ि्नि,
यह दुतुनय़ा ाँिोखेब़ाज़ रे ॥ ३ ॥
द़ाऱा सुत मतलब के स़ाथी,
च़ाहै भरर भरर ल़ार् ैंथ़ाती।
रे मन चेत मुस़ाकफर मीत़ा,
समझ बूझ ले आतम नीत़ा ।।
खुद क़ा ख्य़ाल करै नहहं ंकबहूाँ,
जो सबक़ा मसरत़ाज रे।
भ़ाई रहऩा स़ा़ि्नि,
यह दुतुनय़ा ाँिोखेब़ाज़ रे ॥४॥
खुद गरज़ी से य़्ार जो करती,
ब़ाहर भीतर चलती कफरती।
सतगुरू 'मुक्त' त्रबऩा यह ठगनी,
अद्भूत ऩाच नच़ाऱ्ै नटनी ।।

खुद क़ा ख्य़ाल करै नहहं ंकबहूाँ,
जो सबक़ा मसरत़ाज रे।
भ़ाई रहऩा स़ाि़िन,
यह दुतुनय़ा ॉाँिोखेब़ाज़ रे ॥५॥

**

३९. थेगुजज़रत़ा जो भी हम

थेगुजज़रत़ा जो भी हम, ई आज भी हम हो गये।
थेजह़ा ॉाँपर जजस तरह, ई आज भी हम हो गये ॥

गफ़लत क़ा ख़्व़ाब ए ख़्य़ाल थ़ा, संस़ार कहते ेहैं जजसे।
खुद में थ़ा खुद क़ा नज़़ाऱा, आज सब हम हो गये ।।

गम खुशी थेजंज़दगी, ग़ाडी के पहहये एक सॉ ।
हो गये महरूम सबसे, ज़ा ब ज़ा हम हो गये ।।

जजस मज़े ेको ढूाँढते, म़ायूस' की दुतुनयों में हम ।
अब जो नफ़रत हमनेकी, ई खुद र् खुद हम हो गये ।।

गुलचमन ककतऩा अनोख़ा, चहचह़ाती बुलबुलें ।
खुशबू ये हर गुल गुलमसतॉ ब़ागब़ाँहम हो गये ।।
गूाँजती आलम में यह, दररे्श 'मुक्त़ा' की सद़ा' ।
हम जो थेतुम हो गये, तुम जो थेहम हो गये ।।

**

४०. जो है सरताज क़ा आलम

जो है सरताज क़ा आलम, नचाती चाह अल्लाह को ।
कररररमा क्या-क्या दुतुनयॉ क़ा, हदखाती चाह अल्लाह को ।।

तअज्जुब यह कक कुल'[179] सबमें, बना जुज़'[180] कैसी कमबखती।
गले में हार माया क़ा, पन्द्हाती चाह अल्लाह को ।।

शहनशाहों के मखलूके[181] फाँसा, खुद कम िकीचड में ।
सैर दोज़ख बहहश्तों की, कराती चाह अल्लाह को ।।

अक़्ल हैरा ाँजुबा ाँहैरा,ाँ परेशा योगी संन्द्यासी ।
भटकता दर ब दर मोहताज़, बनाती चाह अल्लाह को ।।

खौफ़ ख़ातेकमर ग़ामशो, मसतारे हटक नहींसकते ।
मगर सामनेपानी पत्थर के झुकाती चाह अल्लाह को ।।

खुदा खुद की जुदाई क़ा, शोरगुल हो रहा जग में ।
चाह गर 'मुक्त' मस्तों की, लख़ाती चाह अल्लाह को ।।

४१. ना तो ज्ंिदा रहा ना तो मुदा िरहा

ना तो ज्ंिदा रहा ना तो मुदा िरहा,
म ैंहूाँ नाचीज़ दूजा न कोई रहा ।
न ज़मीं ंपे रहा न फ़लक' पे रहा,
जहा ाँकुछ भी नहीं तो म ैंही म ैंरहा ।।

आ सकै हम र्तन तक जुरित ककसे,े
म ैंहूाँ कैसा कहा ाँतक बया ाँकर सकै ।

179 पूरा
180 टुकड़ा (अंश)
181 बनाया हुआ

आसम़ा ाँके फ़ररश्ते ेय़ा इन्द्स़ान हो,
ब़ाकी जैस़ा रह़ा र्ैस़ा म ैंही रह़ा ।।
ये मन मेरी स़ाय़ा न मुझसे जुदी,
और मन मेरी म़ाय़ा ये है मेरी खुदी ।
जह़ा ाँस़ाय़ा र्ो म़ाय़ा है कुछ भी नहीं,
ह़ााँमेरे मसऱ्ा ब़ाकी कुछ न रह़ा ।।
मेऱा मन ये कहनेमें शरममन्दगी,
और म ैंमन हूाँ कहने में बेहूदगी ।
लेककन रहत़ा हकीकत में ऩाचीज़ हूाँ,
ब़ाकी म ैंही रह़ा और कुछ न रह़ा ।।
देखत़ा हूाँ म ैंजजस क़र्त संस़ार है,
बंद करत़ा हूाँ तो ये तनऱाक़ार है।
पर ये मुझपे मुनहसर' तम़ाश़ा है क्य़ा,
ब़ाकी कहऩा र्ो सुनऩा नहींकुछ रह़ा ।।
खौफ़ ख़ात़ा नहीं मौत से ख्ऱ्ाब में,
कभी डरत़ा नहीं झुठे संस़ार से ।
'मुक्त' मस्ती के दररय़ा में गरक़ाब हो,
ब़ाकी अफस़ाऩा ये बडबड़ाऩा रह़ा ।।

**

४२. लबरेज़' है ज़रखेज़ है

लबरेज़' है ज़रखेज़े[182] है, मसजद़ा करूाँ तो कह़ा ाँकरूाँ।
करत़ा हूाँ तो ये मज़ाक है, मसजद़ा करूाँ तो कह़ा ाँकरूाँ ।।

हर ज़ा' पे हस्ती क़ा नूर है, नहीं ंप़ास है नहींदूरू है।
गर पग रख ाँूतो कह़ा ाँरख, ाँू मसजद़ा करूाँ तो कह़ा ाँकरूाँ ।।
इस जंजदगी में जो सर झुक़ा, एक ब़ार अब तक भी न उठ़ा।
अब क्य़ा झुके ककसको झुकै, मसजद़ा करूाँ तो कह़ा ाँकरूाँ ।।
तकि करके च़ाह को, बरब़ाद हूाँ म ैंहर जगह ।
दरअसल है मसजद़ा यही, मसजद़ा करूाँ तो कह़ा ाँकरूाँ ।।
कुछ न करऩा ही इब़ादत, और मसजद़ा ि़ाह-ि़ाह ।
नहींबद् हूाँ नहींमुक्त हूाँ, मसजद़ा करूाँ तो कह़ा ाँकरूाँ ।।

**

४३. अफ़स़ाऩा ए दुतुनय़ााँ तम़ाश़ा देखऩा

अफ़स़ाऩा ए दुतुनय़ााँतम़ाश़ा देखऩा ।
खुद न बन ज़ाऩा तम़ाश़ा देखऩा ।।

देखऩा सुनऩा हकीकत कुछ नहीं।
खने ेि़ाल़ा हकीकत देखऩा ।।
क़ायम कय़ामत दोनों जजसके र्लर्ले।
म ैंहूाँ सचमुच में ए दररय़ा देखऩा ।।
बेखुदी मस्ती क़ा पैम़ा ाँपी मलय़ा ।
अब, नहींपीऩा र्पल़ाऩा देखऩा ।।
जो गुऩाहों बेगुऩाहों से बरी' ।
ज़ा बज़ा हर ज़ा में ह़ाजज़र देखऩा ।।

---

182 सोऩा उगलनेि़ाल़ा

ऱाम कहत़ा है कोई कहत़ा रहीम ।
ये सभी खुद के तखल्लुस' देखऩा ।।

है मुक्रम्पमल' जजस जगह 'मुक्त़ा' मुकीम' 183 ।
दरऱ्ेश रहते ेहैं जह़ााँपर देखऩा ।।

४४. आत़ा नज़र ये गुलचमन

आत़ा नज़र ये गुलचमन' यह ऱाज़' तो देखो ।
बूये हकीकत है छुपी गुलस़ाज़ तो देखो ।।
भूल सेजजस चीज़ को तुम देखते ेआलम ।
लेककन हकीकी आखाँ से सरत़ाज तो देखो ।।

दरअसल कुछ भी नहीं पर है ये चश्मदीद ।
देखने ेऱ्ाल़ा ही है फ़नब़ाज़ तो देखो ।।

हर र्क़्त हर एक स़ाज़ से आती है सद़ा' यह ।
गौर से समझो ज़ऱा आऱ्ाज़ तो देखो ।।
ऱाही हदल की है यही अरसे ेसे जुस्तजू ू ।
'मस्त' जजस मस्ती में 'मुक्त़ा' ऩाज़" तो देखो ।।

४५. दीद़ार होती है हकीकत

दीद़ार-ए-हकीकत

दीद़ार होती है हकीकत, अमन हो ज़ानेके ब़ाद ।
मन अमन होत़ा ही जब, दीद़ार हो ज़ानेके ब़ाद ।।

183 ठहऱा हुआ (जस्थर)

यू ाँूतो कोमशश करने से, मन ठहरता है चंद क़र्त ।
पर अमन होता नहीं, होता अमन होनेके ब़ाद ।।

मन अमन से ज़ाहहऱा, ए आसमानेआसमा ाँ।
समझ में आती हकीकत, मेहर हो ज़ानेके ब़ाद ।।

म़ाइने अमन ने खुदु ब खुद, जो खुद ब खुदु ई है अमन ।
लेककन यह होता है तजरब़ा, खुदुी खो ज़ानेके ब़ाद ।।

अमन स़ागर में ए करती, छोड त्रबन मल्ल़ाह के ।
प़ार होगी ही यकीनन, बेपरव़ाह हो ज़ानेके ब़ाद ।।

है नहींआस़ान यह, तौहीद' क़ा मसल़ा है दोस्त ।
उसको ही आती है मस्ती, 'मुक्त' हो ज़ानेके ब़ाद ।।

**

४६. हदल ममला हदलर्र

हदल ममला हदलर्र' से ज़ा, कफर आमशक़ाऩा है कह़ा।ाँ
दसग़ि़ाहे[184]' इश्क में, कफर शम्पम़ा परव़ाऩा' कह़ा ाँ।।

शहंश़ाही' क्य़ा ममली, दुतुनयों की बरब़ादी हुई ।
ख्व़ाहहश ेंसब खत्म होने पर गरीब़ाऩा' कह़ा ाँ।।
बैठ़ा हूाँ म ैंबेखौफ से तख़्ते ेबलंदी'[185] आसम़ा ाँ।
आल़ा न अदऩा' है कोई तो कफर श़ाहंश़ाऩा कह़ा ाँ।।

पी मलय़ा एक मतबेि ेकफर तब दुब़ाऱा न पीय़ा ।
त्रबन पीये रहती जो क़ात्रबल स़ाक़ी" मयख़ाऩा' कह़ा ाँ।।

---

184 प्रेम की प़ाठश़ाल़ा

185 मसंह़ासन के ऊपर

खुद मसऱ्र जब कुछ नहीं जो है लब्रालब एक स्रा ।
दुश्मुनी गर है नहींतो है कफर ग़्राऱ्राना कहा ॉं।।

दरऱेश 'मुक्ता' क़्रा यही हर क़्तं हर पल हर कल़ाम ।
देखखये खुद की नजर से तो कफर बेग़ाऩा" है कहा ॉं।।

**

४७. द़ाल' त्रबन देऩा कहा ॉं

द़ाल'[186] त्रबन देऩा कहा ॉंऔर ल़ाम[187] त्रबन लेऩा कहा।ॉं
हदल ममल़ा हदलर्र' से ज़ा कफर म ैंकहा ॉंऔर तू कहा ॉं।

रोख को क़ाब्रा मुब्रारक, बरहमन को बुतकद़ा ।
य़ार तै होनेसे मंजजल में कहा ॉंऔर तू कहा ॉं।।

दरअसल पीऩा र्ही पीकर दूब्राऱा न र्पय़ा ।
होश भी बेहोश है कफर म ैंकहा ॉंऔर तू कहा ॉं।।

इरक़्र कहते ेहैं ककसे ेसीखो सबक परऱ्र ॉंसे दोस्त ।
ऱाम्पमों परऱ्र ॉंएक हो कफर म ैंकहाॉंऔर तू कहा ॉं।।
चल रह़ा म ैंतू क़्रा झगड़ा मुद्दतों से आज तक ।
आप़ा खोकर के जो देखो म ैंकहाॉंऔर तू कहा ॉं।।

'मुक्त' दररय़ा ये तरंगों की अनोखी यह सद़ा ।
र्लर्ा[188] ही न रह़ा कफर म ैंकहा ॉंऔर तू कहा ॉं।।

४८. कहते ेहैं मुझुको बेतनश़ा ॉं

कहते ेहैं मुझको बेतनश़ा ॉंपर बेतनश़ा ॉंम ैंहूॉं कहा।ॉं

186 हदल क़्रा देऩा
187 हदल क़्रा लेऩा
188 जल क़्रा अंश

हर तनशा ाँजब म ैंही हूाँ तब बेतेनशा ाँम ैंहूाँ कहा ाँ॥

ज़रें ज़रे' में समाया़ कतरे कतरे में मकी ।

म ैंमकीं ंआलम मक़ााँतब ला़ मक़ााँम ैंहूाँ कहा़ ाँ।।

बेज़बाााँफ़रमा़न सबक़ा रे्द शास्त्र कुरा़न दे ।

गर हूाँ म ैंसबकी ज़बा़ ाँतब बेजबाााँम ैंहूाँ कहा़ ाँ।।

हर एक कुल' हर एक जुज़' जो मुझसे है ज़ाहहर' ज़हूर[189]।

कब तनहा़ ाँकैसे ेतनहा़ ाँककससे ेतनहाााँम ैंहूाँ कहा़ ाँ।।

देखना़ है गर कररररमा़ खुदु-ब-खुद चा़रों तरफ़ ।

जब तनहा़ ाँ'मुक्ता' नहींतब कफर अया़"ाँ[190] म ैंहूाँ कहा़ ाँ।।

**

४९. जो तेरी रा़ह' में

जो तेरी रा़ह' में बेना़मो तनशा ाँहोता़ है।

एक न एक हदन महबूबेजहा़ ाँहोता़ है ।।

जो हर तरह से तेरे मलए संसा़र में बरबा़द हुआ।

ज़रें ज़रें में तू उसको ही अया़ ाँहोता़ है ।।

ना़मो तनशा ाँरा़लों को बेना़मो तनशा ाँकैसे ेममले े।

हकीकत में बेतेनहा़ ाँतू कफर तू कैसे ेतनहा़ ाँहोता़ है ।।

इश्क मुबा़रक है तो बस एक हदन इंसा़ अल्ला़ह'।

बा़द जलने के सही परवा़ ाँशाम्पमों होता़ है ।।

कैदख़ाने से तनकलकर के ही पा़ता़ है तुझे े।

मस्त होनेपे कहा़ ाँकौन 'मुक्त' होता़ है।

---

189 आखाँ से हदखनेवा़ला़

190 प्रगट

**

५०. मज़हबी कैदख़ाने ेसे

मज़हबी कैदख़ानेसे तनकलती बेखुदी' य़ाला ।
जो हरदम खखंचं रही छोड दे पीकर ब़ाखुदी य़ाल़ा ।।

लब़ालब है भऱा शीश़ा जजसे ेदरवे्श हैं पीते ।
न पूऱा है न ख़ाली है नहीं गोऱा नहींक़ाल़ा ।।

अचंभ़ा है यही हर रौ में हर ज़रें र्ो कतरे में।
इश़ाऱा स़ाकक़्य़ा लेकेर तोड मैखै़ाने ेक़ा त़ाल़ा ।।

य़ार पी तो ज़ऱा एक ब़ार कररशम़ा देख इस मय क़ा।
कह़ा ँदीनों कह़ा ँदुतुनय़ा ँकह़ाँअदऩा' कह़ा ँआल़ा' ।।

अमूमन कहते ेहैं आमलम मसय़ाय उसके नहींकुछ भी।
नज़ररय़ा है नहींऐसी दूरू कर मोततय़ा ज़ाल़ा ।।

नहींम़ालूम है कैसी कक जजसको कोसती दुतुनय़ा ँ।
'मुक्त' पीत़ा हमेश़ा ही हुआ पीकर के मतव़ाल़ा ।।

**

५१. ख़ामोश हो ज़ात़ा है हदल

ख़ामोश हो ज़ात़ा है हदल ख़ामोश हो ज़ानेके ब़ाद ।
ऱास्त़ा होत़ा है तय, मकसूद' प़ा ज़ानेके ब़ाद ।।

च़ाह में ज़र-जन-ज़मी के भटकत़ा हदल ऱात हदन ।

च़ाह होती है फऩा' बेच़ोह हो ज़ाने के ब़ाद ।।

जजस सकूने हदल को दुतुनय़ााँढूाँढ़ती है दर ब दर ।
लेककन ऱ्ो ममलती है हकीकत खुद को प़ा ज़ानेके ब़ाद ।।

आमशको म़ाशूक दोनों दो शकल हैं मुख्तमलफ़' ।
एक होते ेदस़्गाहे इश्क हो ज़ाने के ब़ाद ।।

हो मुब़्ारक इश्क ऐस़ा ग़़ाम्पम़ा ाँपरऱ्ाँकी तरह ।
पर ग़़ाम्पम़ा ाँपरख़ााँ दो कह़ा ाँपरऱ्ाँजल ज़ाने के ब़ाद ।।

गूाँजती है ये सद़ा च़ारों तरफ़ दुतुनय़ााँमें दोस्त ।
दरअसल समझेर्ी पर 'मुक्त' हो ज़ानेके ब़ाद ।।

**

५२. खुल़ा ब़ाज़़ार मुक्त़ा क़ा

खुल़ा ब़ाज़़ार मुक्त़ा क़ा खरीदो बेखुदी मस्ती ।
अगर कीमत चुक़ाऩा है तो दे दो ब़ाखुदी मस्ती ।।

न कुछ करने से है ममलती य़ा कुछ करने से ममलती है।
दरवे्शों के कदमों पे ममट़ा दो हदल की तंगदस्ती' ।।

दुरुंगी त्य़ाग कर हदल सेपहन इकरंगी ए ब़ाऩा' ।
सह़ाऱा ले फ़कीरों क़ा छोड दे जज़न्दगी करती ।।
न ज़ा क़ाबे ेकलीस़ा में न मैख़ाऩा न बुतख़ाऩा ।

तमन्द्ऩा गरचे ेपीने की तो ज़ा मस्तों की जो बस्ती ।।

जो हस्ती इंस़ा हैऱ् ाँमें, जो नर म़ाद़ा पररंद़ा' में।
जो है ख़ाऩाबदोशों की हकीकत में र्हींमस्ती ।।

जब तक न ममल़ा 'मुक्त़ा' ये मस्ती महंगी से मंहगी।
मेहर स़ाकी की हो ज़ाए तो मस्ती सस्ती ही सस्ती ।।

**

५३. ख़ामोशी की दुतुनय़ााँमें ये हदल

ख़ामोशी की दुतुनय़ा ाँमें ये हदल ख़ामोश हो बैठ़ा।
न ज़ानेकब हुआ कैस़ा र्ज़ूदे अपऩा खो बैठ़ा ।।

गुज़ारी जज़न्दगी स़ारी अज़ााँरोज़़ा नम़ाज़ों में ।
न ह़ामसल जब हुई मंजंज़ल परेश़ााँहोके रो बैठ़ा ।।
गुऩाहों बेगुऩाहों' की ये गठरी ढोय़ा मुद्दत से ।
नज़र जब हो गई मुऱादि' की ढोऩा थ़ा सो बैठ़ा ।।

जह़ा ाँपे हदलकशी होती जह़ा ाँदरर्ेश हैं सोते।
छोडकर सब र्ख़ालों को हीं ंपे ज़ाके सो बैठ़ा ।।

न कुछ करऩा ही करऩा है न कुछ प़ाऩा ही प़ाऩा है।
ज़ाऩना कुछ नहींज़ाऩा सभी से ह़ाथ िो बैठ़ा ।।

करने सेजो हो पैद़ा न करने से जो मर ज़ात़ा ।
यही पैग़ाम मस्ती क़ा जो सुनकर 'मुक्त' हो बैठ़ा ।।

**

५४. उफ है ऐसी जज़न्दगी

उफ है ऐसी जज़न्दगी जजसको ममल़ा स़ाकी' नहीं।
शम िको भी शम िहै पीऩा कभी ब़ाकी नहीं।।

ओ नश़ा क्य़ा जजसको तुरशी एकदम देर्े ेउत़ार ।
एक मतबिे ेचढ़ के उतरऩा कफर कभी ब़ाकी नहीं ं।।

सूरतें ल़ाखों हैं पर सूरतगरी है एक की ।

देखते ही जीऩा मरऩा कफर कभी ब़ाकी नहीं।।

होश को बेहोश करती ल़ानते ेदेते ेहैं लोग ।
बेहोश भी बेहोश कफर होश आऩा ब़ाकी नहीं।।

स़ाकक्रय़ा ने क्य़ा र्पल़ाय़ा कब र्पल़ाय़ा य़्ाह य़्ाह ।
म ैंकह़ा ाँऔर तू कह़ा ाँदुतुनय़ााँकह़ााँब़ाकी नहीं।।

जो मय है एक सी पैम़ानेहदल में भरी ।
'मुक्त' पीत़ा र् र्पल़ात़ा ब़ाकी भी ब़ाकी नहीं।।
**

५५.दीय़्ानों की ब़ातों को

दीय़्ानों की ब़ातों को, र्ही समझेजो दीय़्ाऩा ।
दीय़्ानों की ही खखदमत से, हकीकत में जो दीय़्ाऩा ।।

तनग़ाहें जजनकी मदम़ाती, चढ़ी रहती बलंदी पर ।
जजिर जब देख दे जजसको, र्ही हो ज़ात़ा मस्त़ाऩा ।।

अज़गैबी' कल़ामों से है, झरती बेखुदी मस्ती ।
जह़ा ाँजजस ज़ा पे ज़ा बैठै, र्ही क़ाब़ा र् बुतय़्ाऩा ।।

ककसी पर हैं नहींआमशक नहींम़ाशूक है कोई।
य़ाम़ा ाँये इश्क आततश' में, ममस़ाले ेख़ाक परय़्ाऩा ।।

ककसी के हैं नहींत़ाबे, ज़ा बैठै तख्ते ेआज़ादी ।
दुरंगी दुतुनय़ा ाँक्य़ा ज़ाने, लग्ब ए फ़ानी अफस़ाऩा ।।

कभी आती न बेहोशी, न होशी की हर्स जजनको ।
मगर पीते हमेश़ा ही, जजन्द्हें हर रौ में मैखै़ाऩा ।।
न रहते ेश़ाही महलों में, न रहते ेक़ाकफले ेअंदर ।

जह़ा ाँपर हदलकशी होती, र्ही घर उनक़ा र्ीय़ाऩा ।।

जजन्द्हें हसरत न शोहरत की, तमन्द्ऩा है न दौलत की।

सभी से 'मुक्त' है हरदम, मुब़ारक हो फ़कीऱाऩा ।।

५६. हठक़ाऩा सबक़ा जजस ज़ा पे

हठक़ाऩा सबक़ा जजस ज़ा पे, जहाँन अपऩा बेग़ाऩा'।
सज़ार्ट क्य़ा अनोखी है, दीव़ाने आम शाहाऩा ।।

छोड आनन्द स़ागर को, फाँस़ा है कम िकीचड में।
तडपत़ा पीछे शबनम' के, ऱात हदन होके दीव़ाऩा ।।

च़ाह चक्कर में पड करके, पड़ा गुरर्त' के फंदे में।
अगर बेच़ाह हो ज़ा तू, ककसे ेकहते ेहैं गरीब़ाऩा ।।

ऱाहाँश़ाह होके तू करत़ा, परस्ती ज़र परस्तों की।
खज़ाऩा तेऱा तुझमें ही, न बढ़कर के अमीऱाऩा ।।

अक़्लमंदों की दुतुनय़ा ाँमें, ज़ाऩा ही मुसीबत है।
अकल भी बेअेकल जजस ज़ा पे, न बढ़ करके अक़्लमंद़ाऩा ।।

य़ार दुतुनय़ा ाँकी म ैंपीकर, तसल्ली ककसको कब होगी।
उमडत़ा हर घडी हरदम, हर एक ज़रें में मैख़ाऩा ।।

इसमलए कहीं ंमत ज़ा न कर कुछ, तू फकीरों की ही खखदमत कर।
तम़ाश़ा देख ए 'मुक्त़ा', मुब़ारक हो फ़कीऱाऩा ।।

**

५७. म ैंहूाँ दररय़ा एक स़ा

म ैंहूाँ दररय़ा एक स़ा, ब़ाकी हैं ये सब लर्ले।
म ैंहूाँ सन्द्ऩाट़ा ये हरदम, शोरगुल सब लर्ले।।

नक़्क़ाशी की यह बऩार्ट, और सज़ार्ट बेशुम़ार ।

लेककन यह मेऱा ही करररम़ा, और सब हैं र्लर्ले।।

रंग त्रबरंगेगुलश़ाने, गुल खखलते ेमुस्क़ाते बरोज़' ।
है मुब़ारक मुझको ही, गुल गुंचे ेहैं सब र्लर्ले।।

गूाँजत़ा है भऱाँर जजसमें, चहचह़ाती बुलबुले ।
दरअसल म ैंही तो हूाँ, जो कुछ भी है सब र्लर्ले।।

मुद्दतों से आ रह़ा, आलम त्रबगडत़ा बनत़ा रोज़ ।
बनत़ा त्रबगडत़ा जजसमें म ैंहूाँ, और सब हैं र्लर्ले।।

'मुक्त' दररय़ा मुक्त स़ाहहल, मुक्त करती' ही ऩाखुद़ा'।
कहऩा सुनऩा कुछ नहीं, जो कुछ भी है सब र्लर्ले ।।

५८. पत़ा न थ़ा ये मज िजज़न्दगी

पत़ा न थ़ा ये मज िजज़न्दगी में आयेग़ा ।
यकींन थ़ा ये मज़ िजज़न्दगी हो ज़ायेग़ा ।।

जजतने थे ेत़ाल्लुक़ात' हदल से टूट गये दुतुनय़ा ाँक़ा ।
ये भी पत़ा न थ़ा हमें ऐस़ा भी इक हदन आयेग़ा ।।

हदल हदम़ाग दोनों ही दररय़ा ए हकीकत में गये ।
सूझबूझ कुछ न रही कौन क्य़ा बत़ायेग़ा ।।

म़ातनंदं ये ख़्व़ाब खेल खुद ब खुदु ये कैस़ा रच़ा।
इल्मकदी ये भी नहींखुदु ही से ममट ज़ायेग़ा ।।

खुद पे खुद जो परद़ा बनके बन गय़ा पद़ानिीं ं।
गर नहींहै खुद की मेहर कौन जो हट़ायेग़ा ।।

गम खुशी की आग में जलत़ा ये ज़म़ाऩा कैस़ा ।
दीद़ारे हदलरूब़ाई नहींजो कौन ये जल़ायेग़ा ।।

दुई दफ़ना गई आलम क़ा जनाज़ा तनकला ।
रोनेग़्ला ही नहींकौन क्या जजलायेग़ा ।।

खुद मस्ती क़ा मस्त मज़ िइंशा ाँअल्ला सबको लगे।
'मुक्त' मस्त की नज़र जब खुदु आप ही लग़ायेग़ा ।।

५९. गर म ैंन होता तो खुदा न होता

गर म ैंन होता तो खुदा न होता,
यह ज़ानन्ना ग़ज़' बड़ा ही मुररकल ।
खुद मस्त मस्तों की न हो इन्नायत,
ये ज़ानन्ना ग़ज़ बड़ा ही मुररकल ।।

खुदा की हस्ती र् खुदा की नेस्ती',
दोनों ही मसलों को म ैंज़ानता हूँ।
खुदा से बढ़कर के खुद क़ा मसला,
ये ज़ानन्ना ग़ज़ बड़ा ही मुररकल ।।

खुद की जो हस्ती है खुदा की हस्ती,
खुद की परस्ती है खुदा परस्ती ।
हस्ती परस्ती क़ा सहाग़ा म ैंहूँ,
ये ज़ानन्ना ग़ज़ बड़ा ही मुजश्कल ।।
हालॉकक आसान है खुद क़ा मसला,
लेककन ज़माननेसे है परेशॉं।
आसान कैसा है क्यों परेशॉं,
ये ज़ानन्ना ग़ज़ बड़ा ही मुजश्कल ।।

जजतने हुनरमंद और बेहुनर हैं,
सभी को मालूम है यह कक म ैंहूँ।
लेककन न एतबार कभी ककसी को,
ये ज़ानन्ना ग़ज़ बड़ा ही मुजश्कल ।।

खुद को न ज़ाऩा कुछ भी न ज़ाऩा,
जजसने भी ज़ाऩा ई भी न ज़ाऩा ।
ज़ानेन ज़ानेको जजसनेज़ाऩा,
ये ज़ानऩा ऱाज़ बड़ा ही मुजश्कल ।।

न ज़ानऩा ही सब ज़ानऩा है,
न समझऩा ही सब समझऩा है ।
उन 'मुक्त' मस्तों की मेहर से मुमककन,
ये ज़ानऩा ऱाज़ बड़ा ही मुजश्कल ।।

**

६०. खत्म हो ज़ाती है गुरर्त'

खत्म हो ज़ाती है गुरर्त' ख्व़ाहहरो ज़ानेके ब़ाद।
ख्व़ाबे परद़ा फ़ाऱा' होत़ा आखाँ खुल ज़ानेके ब़ाद ।।

स़िाऩा मंजजल क़ा चलऩा अंतं होत़ा है जभी ।
खुद ब खुद ए मंजज़ले ेमकसूद' प़ा ज़ानेके ब़ाद ।।

रोज़ा नम़ाज़ों में ऐ ज़ाहहद' जज़न्दगी क्यों खो रह़ा ।
होती तेरी ही इब़ादत कुछ भी न करने के ब़ाद ।।

म़ायूस होऩा कहकह़ाऩा ये है कुदरत क़ा मज़ाक ।
लेककन ये म ैंहूाँ एक स़ा महसूस हो ज़ानेके ब़ाद ।।
मरमसय़ा पढ़ते ेही पढ़ते ेककतनी सहदय़ा ाँ हो चुकीं ।
मरमसय़ा मर ज़ाती है जंज़द़ा ही मर ज़ानेके ब़ाद ।।
महकफ़ल ये मस्ती क़ा ऩाऱा समझनेकी च़ाह गर ।
मस्त कदमों की मेहर से'मुक्त' हो ज़ानेके ब़ाद ।।

**

६१. मेरे मसऱ्ा कोई नहीं

. मेरे मसऱ्ा कोई नहींडरने की ज़रूरत क्ऱ्ा है ।
कज़्ा भी स़्ामनेहो गर डरने की ज़रूरत क्ऱ्ा है ।।

मरऩ्ा थ़्ा जजसको मर चुक्ुा मरनेमें जज़न्दगी क़्ा मज़्ा ।
हर वक़्त जऩ्ाज़्ा है गर रोने की ज़रूरत क्ऱ्ा है ।।
बेकऱ्ार थ़्ा ए हदल जो खुद की जज़न्दगी के मलए ।

जज़न्दगी गर खुद ब खुद हाँसनेकी ज़रूरत क्ऱ्ा है ।।

संस़्ार में च़्ारों तरफ फैल़्ा है ज़्ाल म़्ाय़्ा क़्ा ।
मुशदि की मेहर हो गई फाँसनेकी ज़रूरत क्ऱ्ा है ।।

क्ऱ्ा हूाँ म ैंकौन कह़्ा ाँहूाँ म ैंककस तरह कैस़्ा ।
कहूाँ तो हकीकत नहींकहनेकी जरूरत क्ऱ्ा है ।।

जब कभी अफ़स़्ाऩ्ा ए दुतुनय़्ााँकी कय़्ामत होगी ।
सचमुच में गचे'मुक्त' हूाँ मरने की ज़रूरत क्ऱ्ा है ।।

६२. हो गय़्ा आनंद दुतुनय़्ा ाँको

हो गय़्ा आनंद दुतुनय़्ााँको ररझ़्ाकर क्ऱ्ा करूाँ।
हदल मुनव्र'[191] है तो दीपक ऱ्ाग ग़्ाकर क्ऱ्ा करूं ।।।

चक्रती कर हदय़्ा गुरू ने बत़्ाकर आत्मज्ञ़्ान ।
कफर भल़्ा मह़्ाऱ्ाज दुतुनय़्ााँसे कह़्ाकर क्ऱ्ा करूाँ ।।

रोम रोमों में रम़्ा है आत्मज्ञ़्ान मेरे सनम ।
ख़्ाक में भी रम रह़्ा ख़्ाके रम़्ाकर क्ऱ्ा करूाँ ।।

---

191 रोशनी

सब सज़ार्ट और बऩार्ट क़ा मेहर है आत्म़ा ।
कफर भल़ा हड्डी ऱ्ो चमडे को सज़ाकर क्य़ा करूाँ ।।

चढ़ गय़ा अद्वै्त क़ा रंग हदल में सुखी आ गई ।
कफल भऱा ममट्टी में कपडे को रंग़ाकर क्य़ा करूाँ ।।

आ गई 'मुक्त़ा' को मस्ती पढ़ के एकऩामी कल़ाम ।
तो भल़ा उन पोधथयों में सर पच़ाकर क्य़ा करूाँ ।।

**

६३. क्य़ा क्य़ा न सहे हमने ◌ेमसतम'

करूण कह़ानी

क्य़ा क्य़ा न सहे हमनेमसतम' य़ार की ख़ाततर ।
ककसको न बऩाय़ा सनम[192], य़ार की ख़ाततर ।।

पढ़ पढ़ के ऱ्ेद श़ास्ि्दशर्नों को भी देख़ा ।
और कम ि◌उप़ासन में ककय़ा ऩाम क़ा लेख़ो ।।
अज्ञ़ान की रेख़ा न ममटी, य़ार की ख़ाततर ।
क्य़ा क्य़ा न सहे हमनेमसतम य़ार की ख़ाततर ।।

घर ब़ार छोड करके मलय़ा खोह में डेऱा ।
भूख़ा मऱा प्य़ास़ा मऱा, ऱ्ैऱाग ने घेऱा ।।
सब कुछ ककय़ा अपनी कसम उस य़ार की ख़ाततर ।
क्य़ा क्य़ा न सहे हमनेमसतम य़ार की ख़ाततर ।।

बहुरुपपय़ा बन बनके म ◌ैंसंस़ार में घूम़ा ।
उन पंथ के गुरुओं के भी चरणों को म ◌ैंचूम़ा ।।
पर कुछ भी बत़ा के न हदय़ा य़ार की ख़ाततर ।
क्य़ा क्य़ा न सहे हमनेमसतम य़ार की ख़ाततर ।।

192 गुरु

मुद्दत से कफऱा य़ार के पीछे म ैंदीऱ्ाऩा ।
सद्ग़ुरू की कृप़ा जब भई तब य़ार दीऱ्ाऩा ।।
अब क्य़ा कहूाँ, क्य़ा न कहूाँ उस य़ार की ख़ाततर ।
क्य़ा क्य़ा न सहे हमनेमसतम य़ार की ख़ाततर ।।

'म' ैं को ही य़ार म़ान बनी करूण कह़ानी ।
सुन करके दोस्त गौर करो 'मुक्त' की ब़ानी ।।
हो सफल तुम्पह़ाऱा जनम उस य़ार की ख़ाततर ।
क्य़ा क्य़ा न सहे हमनेमसतम य़ार की ख़ाततर ।।

६४. न कोई तमन्द्ऩा न ख्ऱ्ाहहश़ातें

फ़कीरी

न कोई तमन्द्ऩा न ख्ऱ्ाहहश़ातें, दुरुंगी दुतुनयों से शम ि क्य़ा है।
पीय़ा हूाँ य़्ाल़ा जो बेखुदी क़ा, मन म़ानेऩाचूाँ तो शम ि क्य़ा है ।।

खुद पे ही कुब़ा ि म ैंहो चुक़ा हूाँ, जूंद स़ाऱा ममट़ा चुक़ा हूाँ।
यह ख़ाके पुतल़ा अभी फऩा हो, अगर नहींडर तो शम ि क्य़ा है ।

नहीं है परऱ्ाह कभी ककसी की, न कुछ भी लेऩा न कुछ भी देऩा।
रहूाँ बरहऩा' य़ा पहनूं बुक़ा,ि ऐसेबेशमों से शम ि क्य़ा है ।।

सम्पभ़ालने से नहींसम्पभलती, रग-रग में आकर सम़ा गई है।
छलक रही है अलमस्त मस्ती, मस्ती परस्तों को शम ि क्य़ा है ।।
म ैंगुलरूब़ा हूाँ इस गुलचमन क़ा, म ैंहदलरुब़ा हूाँ हर एक हदल क़ा।
दररय़ा ए बेहेदल हुआ हूाँ बेहेदल, बेहदल परस्तों को शम ि क्य़ा है ।।

फ़ॉक़ा ककय़ा हूाँ ये गम खुशी क़ा, है कोई मेऱा न दोस्त दुश्मन ।
हदम़ागों हदल से मोहत़ाज 'मुक्त़ा', खफतुलहऱ्ासों को शम ि क्य़ा है ।।

**

६५. कुछ न हदय़ा कुछ न मलय़ा

य़ार की य़ारी ने मुझे,
कुछ न हदय़ा कुछ न मलय़ा।
गर हदय़ा भी है तो यही,
कक बस कफ़क्र सेआज़ाद ककय़ा ।।

य़ार की दुतुनय़ााँमें मसऱ्,
य़ार के कोई और नहीं।
अरों' नहीं ज़मीं ःनहीं,
जजस मुल्क में आब़ाद ककय़ा ।।

आमशक म़ाशूक दो,
एक स़ाथ जहन्द्नुम में गए।
इश्क मुब़ारक हो,
जजसने 'मुक्त' को र्ऱ्ाद ककय़ा ।।

**

६६. बत़ा दे स़ाककय़ा

बत़ा दे स़ाककय़ा तेऱा ककिर रहत़ा है मैख़ाऩा ।
ककिर क़ाब़ा ककिर मक्क़ा ककिर रहत़ा है बुतख़ाऩा ।।

दुरुंगी च़ाल है जजसकी कभी रोऩा कभी हाँसऩा ।
ममस़ाल ए ख़्ब़ाब के म़ातनंदं ककिर दुतुनय़ा ाँहै अफस़ाऩा ।।

हर्स' दौलत के तहख़ानेतमन्द्ऩा भर रही हरदम ।
हुआ महरूम दोनों से ककिर रहत़ा है अमीऱाऩा ।।

नहींपरव़्ाह कभी कुछ भी जुद़ाई एक-त़ाई से ।

बेमुल्के ताज है मसर पे हकीकत में ये शाहाना' ।।

हठक़ाना है नहींजजसक़ा हठक़ाना बेहठक़ाना है ।
हमेशा बेखुदी मस्ती मुबारक हो फ़कीराना ।।

शौकक्रया हदल की ख़ामोशी जजसे ेदरवेश हैं पीते ।
अगर पीना कोई चाहै, र्पलाता 'मुक्त' रोज़ाना ।।

**

६७. बुज़हदली' के चक्कर में पडकर

बुज़हदली' के चक्कर में पडकर, म ैंअपनेआपको खो बैठा।
तस्वीर तमन्द्ना में फाँसकर, कैसा था अब क्या हो बैठा ।।

इल्ज़ाम लगाऊँ म ैंककस पर, ममन्द्नत भी करूँ ककसके आगे।
खुद पे खुद की कमबख़्ती से, जैसा था उसको खो बैठा ।।

हालाकाँक हीं हूँ जो म ैंथा, न बदला हूँ न बदल सकूँ ।
लेककन ये हकीकत है कैसी, बस इसको ही म ैंखो बैठा ।।

अनबने अंदर ए बुतख़ाना, ज़ाहहर ज़हूर ये परदानीं ं।
पर बेसमझी सेसमझ पडे, उस बेसमझी को खो बैठा ।।

जजतने हैं जो मंहदर मजस्ज़द, ममलने के ये नहींइबादत के ।
ममलने की हर्स जजस ज़ा पे खतम, ज़ा ब ज़ा उस ज़ा को खो बैठा ।।

मातनन्द आइनेखुदु पे जो, हदखता ई मुझसे जुदा नहीं।
ज़ंजीर मज़हबी क्यों कैसी, इस ख़्वाब खयाली को खो बैठा ।।

समझेगा हीं सोहबत पसंद, बन गया दोस्त दरवेशों का ।
यह हदल हदमाग की चीज़ नहीं, जो करता है सो खो बैठा ।।

दरअसल 'मुक्त' है हीं मुक्त, होता है नहींजो मुक्त सही ।
मगर बद्मुक्त है अफ़साने, म ैंदोनों को ही खो बैठा ।।

६८. बरहऩा हूाँ हकीकत में

बरहऩा हूाँ हकीकत में मुब़ारक हो बेशरम़ाऩा ।
करूाँ क्य़ा शम िइस दुतुनय़ा ाँसेसचमुच में जो अफस़ाऩा ।।

ममट़ा कर खुदु को ज्यों नहदय़ााँ हमेश़ा करती तय मंजंज़ल ।
गुजज़रत़ा कौन थी अब क्य़ा खतम हो ज़ात़ा फरम़ाऩा ।।

दरसग़ाहे इश्क ज़ाके परव़ाने से ज़ा पूछो ।
बत़ाऩा गैर मुमककन है शम्पमों ज़ानेय़ा परव़ाऩा ।।
नज़र में मुख्तमलफ दोनों ही आए मैकद़ा दर पर ।
मगर जब कफर गई आखोँ न स़ाकी है न मैख़ाऩा ।।

अनोख़ा गुलचमन कैस़ा हऱा होत़ा न मुरझ़ात़ा ।
बह़ारें एक सी रहती, खखल़ा रहत़ा गुमलस्त़ाऩा ।।

कल़ामे 'मुक्त' क़ा य़ारो गौर करऩा मुऩामसब है ।
जज़न्दगी क़ा मज़ा प़ाकर बनोगे ेमस्त मस्त़ाऩा ।।

**

६९. जो डर रह़ा है मुसीबत से

"ऩामदि उसे ेकहते ेहैं"

जो डर रह़ा है मुसीबत से उसे ेऩामदि कहते ेहैं।
जो घबऱात़ा कय़ामत सेउसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

त्रबगडऩा बनऩा दोनों ही ये दुतुनय़ााँके कररश्में हैं।
कभी रोत़ा कभी ह़ाँसत़ा उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

गरीबों की न गुरबत है अमीरों की न दौलत है।
न समझ़ा जजसने अफ़स़ाऩा उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

कमबख्ती के चक्कर में भटकता ग़ात हदन ऩाद्दा।ाँ
न देखे खुद को जो सबमें उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

सोहबत बुज़हदलों की करके सहदयों से बऩा बुज़हदल ।
ककय़ा सोहबत न बेहेदल क़ा उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

फलक में ऩाचतेहैं च़ादाँ सूरज हुक्म से जजसके ।
न प़ाय़ा गर हुकूमत को उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

हदल की यकसुई' जब कभी होती है सुख ह़ामसल।
ज़ानत़ा भी नहींज़ाऩा उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

न कुछ करऩा परस्ती है अगर कुछ करऩा गलती है।
मगर करत़ा न जो एतब़ार उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

म ैंही नर हूाँ म ैंही म़ाद़ा म ैंही ख्ऱ्ाद़ाँ हूाँ बेख्ऱ्ाद़ाँ'।
म़ानत़ा फकि जो इसमें उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

म ैंजैस़ा हूाँ रै्स़ा ही हूाँन ऐस़ा हूाँन रै्स़ा हूाँ।
मगर कहत़ा जो ऐस़ा हूाँ उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

सद़ा' म ैं'मुक्त' हूाँ सबसे यही मद़ाानिगी सच में।
नहींमद़ाानिगी जजसमें उसे ेऩामदि कहते ेहैं ।।

**

७०. पी मलय़ा गर ज़ाम' तो

क़ानून ए हमर्तन

पी मलय़ा गर ज़ाम' तो कफर य़ाद करऩा जुमु िहै।
कब्र में पड करके चीखें म़ारऩा कफर जुम िहै ।।

सोचऩा थ़ा पहले ेही होऩा थ़ा जो कुछ हो चुक़ा ।
कट गय़ा गर सर ज़मीं ंपर देखऩा कफर जुमु िहै ।।

दोज़ख बहहश्तों क़ा यह नक्शा देखऩा तू बंदं कर ।

बेगुऩाह गुऩाहों के चक्कर में पडऩा जुम िहै ।।

ज़िदगी करती ए दररय़ा प़ार हो हरधगज़ न हो ।
ज
हो करके बेपरऱ्ाह कफर परऱ्ाह करऩा जुम िहै ।।

हमशकल होनेके ऩाते ेहमशकल जो कुछ भी है।

खुद मसऱ्ा जब कुछ नहीं संस़ंार कहऩा जुम िहै ।।

हदलरुब़्ा हूाँ जबकक हदल क़ा और म ैंहदल क़ा सकून ।

ज़्ीरे आलम हदल है मेऱ्ा रोकऩा तब जुम िहै ।।

क़ानून ए पैग़ाम 'मुक्त़ा' को फ़कीरों से ममल़ा ।

अमल' करऩा है सभी को गर न करऩा जुम िहै ।।

**

७१. हर रोज़ जऩाज़्ा होत़ा है

हर रोज़ जऩाज़्ा होत़ा है हर रोज़ बऱ्ातें होती हैं।

मंजज़ल पे पहुाँचनेके ख़ाततर मुतऱ्ाततर' ब़्ातें होती हैं ।।

कोई मसजद़्ा करत़ा क़ाबे ेमें,

और कोई ज़्ात़ा बुतख़ाऩा,

कोई आमशक ऱ्ो म़ाशूक हुआ,

कोई दौड के ज़्ात़ा मैख़्ाऩा,

कोई लटक रह़ा कोई भटक रह़ा,

कोई ऩाक रगडत़ा रो रो के,

गम में कोई म़ायूस हुआ,

कोई खुशी मऩात़ा हाँस हाँस के,

हर रोज़ इब़ादत करते ेहैं हर रोज़ नमाज़ें होती हैं।
मंजज़ल पे पहुुँचने के ख़ाततर मुतऱाततर ब़ातें होती हैं ।।
कोई स्ऱ्ांग बऩात़ा योगी क़ा,
और कोई बनत़ा है रै्ऱागी,
कोई. िारण कर संन्द्य़ास रे्श,
कोई र्ष़यों से है अनुऱागी,
कभी तो हसरत दौलत की,
और कभी तमन्द्ऩा शोहरत की,
कोई कफ़कर में मरत़ा बच्चों की,
कोई धचंतंन करत़ा औरत की,
पैद़ाइश सेमरने तक लेकर जो कुछ भी की ज़ाती है।
मंजज़ल पे पहुंचने के ख़ाततर मुतऱाततर ब़ातें होती हैं ।।
भले बुरे जजतनेहैंकरम,
जो भी होते ेहैं इस दुतुनयों में,

ज़ज़ंदगी क़ा मकसद सबक़ा एक,
ऊाँच़ा नीच़ा इस दुतुनय़ा ाँमें,
ऱाहें अनेक ऱाही अनेक,
पर सबकी मंजज़ल एक सही,
कोई कब पहुुँच़ा कोई कब पहुुँच़ा,
पहुुँचेग़ा जल्द जो तडप सही,
रे्द श़ास्ि इंजजल कुऱां, सबकी ये सद़ाएं ंआती हैं।
मंजज़ल पे पहुुँचने के ख़ाततर मुतऱाततर ब़ातें होती है ।।
त़ारीफ़ यही खुदु मंजज़ल है,
मंजज़ल की तमन्द्ऩा में कफरत़ा,
कैस़ा ये अचम्पभ़ा कुदरत क़ा,
दर ब दर भटकत़ा है कफरत़ा,
जो एक सम़ाय़ा आलम में,
ई म ैंहूाँ म ैंहूाँ बोल रह़ा,
अपनी ही कमबख्ती से,

खुद को हर जगह टटोल रहा,

हर ड़ार ड़ार हर प़ात प़ात बुलबुलें भी ग़ाऩा ग़ाती हैं।
मंजज़ल पे पहुुँचने के ख़ाततर मुतऱ्ाततर ब़ातें होती हैं ।।

ब्रह्म़ा र्ष्णु मशऱ्ाहदक भी,
ये तनमशहदन जजनक़ा ध्य़ान िरें,
ऩारद शेष श़ारद़ा आहदक,
र्ीण़ा में गुणग़ान करें,
ज़ाहहर ज़हूर मशहूर जगत में,
सबक़ा सब कुछ है य़ाऱा,
सर् िरूप में सबमें होकर,
कफर भी है सबसेन्द्य़ाऱा,
जो मन क़ा मन है मन नहहं ंज़ात़ा आखों देख न प़ाती हैं।
मंजज़ल पे पहुुँचने के ख़ाततर मुतऱ्ाततर ब़ातें होती हैं ।।

ज्ञ़ान से न मंजंज़ल तय होती,
तप से न ये मंजज़ल तय होती,
च़ाहे ल़ाखों जनम उप़ाय करो,
तब भी न ये मंजज़ल तय होती,
मंजज़ले ेहकीकत प़ाऩा गर,
मस्तों की आखाँ से आखाँ ममल़ा,
म ैंही तू है तू ही म ैंहूाँ,
मस्ती क़ा हदल को ज़ाम र्पल़ा,
कफर देख तम़ाश़ा ए 'मुक्त़ा' कब हदन और ऱातें आती हैं।
मंजज़ल पे पहुुँचने के ख़ाततर मुतऱ्ाततर ब़ातें होती हैं ।।

**

७२. हदल बेहदल हो ज़ाता है पर

हदल बेहदल हो ज़ाता है पर हदलरुब्रा प़ाने के ब्राद ।
खुश हो ज़ात़ा है गुलज़ान गुलरूब्रा आनेके ब्राद ।।

ल़ाज़ब्रा ाँलहऱातेदररय़ा में हज़ारों बुलबुले ।
ंज़्ादगी क़ा है मज़ा मस्ती में लहऱानेके ब्राद ।।
हो ज़ा बेपरव़्ाह' करती खुद ककऩारे ज़ा लगे।

मुल्के ममल ज़ाती हुकूमत कुछ न कहल़ानेके ब्राद ।।

लुत्फ़ बेकफ़करी में य़ारों भ़ाड में ज़ाये बल़ा ।
गूाँजती है यह सद़ा अंदर में ठहऱानेके ब्राद ।।

स़ाककए मैख़्ाऩा ज़ाने से ही आत़ा है सरूर ।
खत्म हो ज़ाती है दुतुनय़ााँपैम़ाऩा पीने के ब्राद ।।

आमशको म़ाशूक दोनों दरसग़ाहे ज़ा ममले े।
इश्क की त़ारीफ़ क्य़ा त़ालीम मसखल़ानेके ब्राद ।।

बेसऱाप़ा ब्रातों को समझेग़ा बेमसर पैर क़ा ।
समझऩा आस़ान होग़ा 'मुक्त' मुसक़ाने के ब्राद ।।

**

७३. म ैंहूाँ सन्द्ऩाट़ा' मक़ा ाँ

मन की नसीहत

म ैंहूाँ सन्द्ऩाट़ा' मक़ा ाँऔर तू है हाँग़ाम़ा' मकीं ं।
म ैंही तू और तू ही म ैंहूाँ, म ैंमक़ा ाँतू है मकी ।।

म ैंही हूँ तेऱा सहाऱा म ैंही हूँ तेऱा ज़ूद ।
देख तू खुद की नज़र में म ैंमक़ााँतू है मकीं ं।।

दौडतेही दौडतेपर आज भी तू न थक़ा ।
बैठ ज़ा आऱाम कर म ैंहूँ मक़ा ाँतू है मकीं ं।।

मेरे ऩबऩा तू है नहींतेरे ऩबऩा म ैंहूँ ज़रूर ।
शोरगुल जब है नहींम ैंहूँ मक़ा ाँतू है मकीं ं।।

म ैंहूँ सब कुछ सर्ि क़ा और म ैंहूँ हक तेऱा सकून ।
मंजज़ले ेमकसूद तेऱा म ैंमक़ा ाँतू है मकीं ं।।

'मुक्त' होकर खोजत़ा रे मन मुक्त होनेके मलए।
ढूाँढ़े महल में मंजंज़लेमन म ैंमक़ााँतू है मकीं ं।।

७४. आज़ाद हूँ म ैंहरदम

आज़ादी

आज़ाद हूँ म ैंहरदम डरने की ज़रूरत क्य़ा ।
महफूज़ मुझसे आलम डरनेकी ज़रूरत क्य़ा ।।

पैद़ा न होत़ा कुछ भी जीने की कल्पऩा क्य़ा।
ज़्ज़्ाद़ा न ज ़दंगींभी मरने की ज़रूरत क्य़ा ।।

ि़िकरम हैं जजतनेख़्ाबे खय़ाल झूठे ।
म ैंखुद ब खुद हूँ सबक़ा करने की ज़रूरत क्य़ा ।।

'म' ैं ही सम़ाय़ा सबमें म़ातनन्द आसम़ा ाँके ।
ख़्ाहहऱा नहींहै मुझको फाँसने की ज़रूरत क्य़ा ।।

गम खुशी के तूफ़ा ाँदुतुनय़ा ाँके जजलजज़लेहैं।
होत़ा कभी न टसमस टलने की ज़रूरत क्य़ा ।।

म ैंमीं ंजह़ा ाँक़ा मेऱा मक़ााँजह़ा ाँहै ।

कफर ईंट पत्थरों को गढ़नेकी ज़रूरत क्या ||

दुतुनयों के खज्ज़ानेजो मेरे ही खज्ज़ानेहैं|
तब ममसले ख़ाक मसक्के रखने ेकी ज़रूरत क्या ||

आज़ादी मुब़ारक हो बरब़ादी मुब़ारक हो |
मुमशदि इशारे 'मुक्ता' बंनिकी ज़रूरत क्या ||

७५. अरम़ान जंजदंगी के

हदल की जंजदंगी

अरम़ान जंजदंगी के इस हदल की जंजदगी है|
पूरे कभी न होंगे ेजब तक ये जंजदगी है ||

शोहरत की जो ये हसरत दौलत की ये तमन्द्ऩा |
प़ाने की जो ये ख्ा़हहश तब तक ये जंज़दंगी है ||

खुद को न देख़ा जजसने ज़ाऩा न जो हकीकत |
जब तक ममल़ा न स़ाक़ी तब तक ये जंज़दंगी है ||

खुद को जल़ाके परऱ् ाँहोत़ा ग़ाम़ा ग़ामों में |
ऐस़ा जल़ा न जब तक तब तक ये जंज़दगी है ||

मस्तों क़ा मस्त पैश़ा ाँसुनके हुआ न बेहदल |
कतऱा न समझ़ा दररय़ा तब तक ये जंज़दंगी है ||

जो है जूंदे आलम 'म'ैं हूाँ आऱ्ाज़ जजसकी |
खुद पे हुआ न कुब़ा ितब तक ये जंज़दगी है ||
मस्ती क़ा ज़ाम पीके 'मुक्त़ा' हुआ दीऱ्ाऩा |

कुछ भी रह़ा न ब़ाकी ब़ाकी ही जंजदगी है ||

* *

७६. म ैंहूॅं कौन क्या हूॅं

ऱाज़े ेखुदा *

म ैंहूॅं कौन क्या हूॅं न कहने के क़ात्रबल ।
अगर बेज़ब़ााँहूॅं न सुननेके क़ात्रबल ।।
कहते ेहैं संस़ार जजसको जुब़ा ाँसे।े
ई भी हमऱाकल है न देखने ेके क़ात्रबल ।।
भरी खूत्रबय़ा ाँक्या क्या इन सूरतों में।
न जीनेके क़ात्रबल न मरने के क़ात्रबल ।।
मलय़ाकत' हो गर कोई आके बत़ाये।
मलह़ाज़़ा ये क्या न पकडनेके क़ात्रबल ।।
है में जो 'है' है, नहींमें 'नहीं' है।
ये ख़ामोश मलखनेन पढ़ने के क़ात्रबल ।।
गुमलस्त़ा ाँसज़ा मुझमें कैस़ा अनोख़ा ।
मौज' लेये 'मुक्त़ा' न फाँसने के क़ात्रबल ।।

**

७७. ज़र' की मुझे ेदरक़ार नहीं ं

फ़कीरी

ज़र' की मुझे दरक़ार नहींज़रद़ार के दर पर ज़ाऩा क्यू।ाँ़ू
इज़्ज़त र् बेइज़्ज़त तकि ककय़ा दुतुनयों से आखाँ ममल़ाऩा क्यूाँ।।

भलेबुरे जजतने भी करम दरअसल सभी है अफ़स़ाने ।
ज़ाऩा ही नहींदोजख बहहरत तब इिर दुबुाऱा आऩा क्यू ाँ़ू॥

हो गय़ा दीऱ्ाऩा मस्तों क़ा मस्ती क़ा ज़ाम ऐ पी करके ।
जब हदल हदम़ाग में सूझ नहीं तब पीऩा और पल़ाऩा क्यू ाँ़ू॥

च़ाह नहींकुछ लेनेकी कोई भल़ा कहे य़ा बुऱा कहे ।
बैठ़ा हूाँ ये तखतेश़ाह़ाऩा कफर गैरों के गुन ग़ाऩा क्यू ाँ़ू!!

कर चुक़ा हूाँ जो कुछ करऩा थ़ा पढ़ चुक़ा हूाँ जो कुछ पढ़ऩा थ़ा।
देखऩा थ़ा जो कुछ देख चुक़ा संस़ार में िक्के ख़ाऩा क्यूाँ।।

बेशुम़ार और बेममस़ाल मेरे ही अनोखे ब़ाने हैं ।
पचरंगी बुरक़ा पहन मलय़ा तब कफर बहरूपय़ा ब़ाऩा क्यू ाँ़ू।।
पैग़ामे े'मुक्त' हकीकी ये समचमुच में क़ात्रबले ेगौर सही ।

हर एक स़ाज़ से तनकल रह़ा म ैंहूाँ म ैंहूाँ शरम़ाऩा क्यू ाँ़ू।।

**

७८. जजस्म़ानी खुदी जजसमें नहीं ें

जजस्म़ानी खुदी जजसमें नहीं कहते ेहैं उसे ेदीऱ्ाऩा ।
मस्ती में हुआ मस्त जो कहतेहैं उसे ेदीऱ्ाऩा ।।

खोजते ेहैं य़ार को पर य़ार ममसऱ्ा कुछ भी नहीं।
खोजी भी खो ज़ाय हकीकत में यही य़ाऱाऩा ।।
दुरुंगी दूरू भई दुतुनय़ा ाँक़ा जऩाज़़ा तनकल़ा ।
फाँसऩा नहींफाँद़ा भी नहींसच में ये फ़कीऱाऩा ।।

दौलत की च़ाह है नहींगुरबत भी जहन्द्नुम में गई ।
दोस्त ऱ् दुशुमन भी नहींकहतेहैं इसे ेशाहाऩा ।।

ऩाचत़ा है जो हर्ऱ्श हाककम की जी हुजूरी में ।
सकूने ख़्ऱ्ाब ये सचमुच में ये गरीब़ाऩा ।।
दररे्श अपनी मौज में जब ज़ाके बैठते ेहैं जह़ा ाँ।
रोख क़ा क़ाब़ा र्ही बरहमन'[193] क़ा र्ही बुतख़ाऩा ।।
बक़ा फ़ऩा एक संग दो रहतेहैं कक दुतुनय़ा ाँमें कह़ा ाँ।
ककसक़ा बक़ा ककसक़ा फ़ऩा कहते ेहैं इसे ेअफ़स़ाऩा ।।
उस मै को मुब़ारक हो जो कक पीके उतरती ही नहीं।
स़ाककय़ा ममल ज़ाय गर हर ज़ा ब ज़ा पे मैखैऩा ।।
मस्ती मैकद़ा की नहींऔर बुतकद़ा की नहीं।
मस्ती खुदुकशी की ये कहत़ा है 'मुक्त' मस्त़ाऩा ।।

७९. ख़्ऱ्ाहहरौं जब खत्म हुई

ख़्ऱ्ाहहरौं जब खत्म हुई तब ममल़ा फ़कीऱाऩा ।
बेत़ाज हुकूमत है, हकीकत में ये ज़ागीऱाऩा ।।

खुद़ा की जूसूतजू ूमें हुई दर ब दर परेश़ानी ।
ममहर मुमशदि की भई क़ाफ़ी'-दरे-ज़ाऩाऩा ।।

सैल़ाब ये मस्ती क़ा मस्त उमडत़ा है पल पल में।
क्य़ा कहूाँ क्य़ा ऩा कहूाँ कहत़ा भी हूाँ तो अफ़स़ाऩा ।।

मस्ती क़ा मस्त ये सुरूर भर गय़ा है रग-रग में ।
देखत़ा हूाँ जब कभी हदखत़ा न कोई बेग़ाऩा ।।

---

193 ब्ऱाह्मण

दौलत की तमन्द्ना नहींहसरत भी नहींशोहरत की ।
जीनेक़ा भी मकसद नहींसचमुच में ये अमीऱाऩा ।।

पैग़ाम ये मस्ती क़ा मस्त दे रह़ा हूाँ मुद्दत से ।
क़ात्रबले ेजज़्क्र है समझेग़ा अक्लमंद़ाऩा ।॥

पीऩा है अगर एक ब़ार कफर कभी नहींपीऩा ।
म ैंपीऩा बुऱा नहींबशते हदले ेपैमै़ाऩा ।।

ईदतेपीऩा है ज़ाम 'मुक्त' स़ाकक्रय़ा से ममलो ।
मगर पीने क़ा मज़ा इसमें ही पीते ेही तुम बहक ज़ाऩा ।।

८०. कसम खुद़ा की य़ार

कसम खुद्ा की य़ार मंजज़ले ेमकसूद तू ही।
नज़रे हकीकत से देख मंजज़ले ेमकसूद तू ही ।।

बुज़हदलों के बीच बैठै करके बन गय़ा मेमऩा ।
कमबख़्ती तकि करदे य़ार मंजंज़ले ेमकसूद तू ही ।।

चरमे ेबंद करत़ा ध्य़ान जजसक़ा तू तनह़ााँहोके ।
ई तू ही है ई तू ही य़ार मंजंज़ले ेमकसूद तू ही ।।

ब़ाखुदी दुतुनय़ा ााँको छोड बेखुदी में आ तो ज़ऱा ।
कफर ज़ऱा–ज़ऱा िहै तू ही मंजज़ले ेमकसूद तू ही ।।

'मुक्त' पैग़ाम हकीकत पे गौर करके दोस्त ।
जो म ैंहूाँ ह्हीं तू है य़ार मंजज़ले ेमकसूद तू ही ।।

**

८१. जजस पै ये हदल कफदा़ है

जजस पै ये हदल कफदा़ है ई सबसेहै तनराल़ा ।
ममलत़ा है हदलकशी से, पर सबसे ेहै रो् आल़ा ॥

क़ाब़ा र् बुतकदा़ में पैम़ा ाँमें मयकदा़ में ।
हर जॉ ज़हर ज़ाहहर पर सबसे है तनराल़ा ॥

कफरक़ा परस्त बनकर प़ाऩा बड़ा ही मुररकल ।
बुरक़ा उत़ार फेंको सबसेहै रो् तनराल़ा ॥

त़ारे भी आसम़ा ाँके फरों ज़मीं ंपे आये ।
ममलत़ा न करने से कुछ क्योंकक है रो् तनराल़ा ।।

ममलने ऱाल़ा खुद में खुद को ही ढूाँढ़त़ा है ।
कफर क्यू ाँूममलेग़ा ककसको जो सबक़ा है उज़ाल़ा ।।

दीद़ारे हदलरुब़ा क़ा होत़ा ज़रूर 'मुक्त़ा' ।
इऩायत हो फ़कीरों की क्योंकक है सबमें आल़ा ।।

**

८२. एक पहलू ूऩाम दो

एक पहलू ऩाम दो म़ाय़ा कहो य़ा मन कहो ।
ईश्र्र की म़ाय़ा मेरे़ा मन म़ाय़ा कहो य़ा मन कहो ।।

म़ाय़ा नहींतो मन नहींऔर मन नहींम़ाय़ा कहा़।ाँ
क़ात्रबले ेयह जज़क्र है म़ाय़ा कहो य़ा मन कहो ।।

ईश़ा की दुतुनय़ााँमें म़ाय़ा 'म'ै की दुतुनय़ा ाँमें है मन।
ऱाज़ यह संतों से पूछो म़ाय़ा कहो य़ा मन कहो ।।

मन क़ा बुरक़ा मुझपे है म़ाय़ा क़ा बुरक़ा ईश पर ।
पर न बुरक़ा 'म'ैं पे हरधगज़ म़ाय़ा कहो य़ा मन कहो ।।

बुरक़ा जब तक जीर् हूाँ बुरक़ा है जब तक ईश हूाँ।
बुरक़ा नहींतब खुद ब खुद म़ाय़ा कहो य़ा मन कहो ।।

मन र् म़ाय़ा क़ा ये परद़ा फ़ाश करऩा है अगर ।
बरब़ाद होकर 'मुक्त' हो म़ाय़ा कहो य़ा मन कहो ।।

* *

८३. न ककसी से नफरत न कोई मुहब्बत

न ककसी से नफरत न कोई मुहब्बत, गर म ैंकरूाँ तो बेहूदगी है ।
गर कुछ भी है भी तो हमशकल है, गर फ़कि म़ानें तो बेहूदगी है ।।

मसत़ारे जजतने इक आसम़ा ाँके, कोई तो रोशन है कोई बेरोशन ।
इसी तरह 'म'ैं हूाँ जह़ान स़ाऱा गर फ़कि म़ानें तो बेहूदगी है ।।

हहन्दू ूमुसलम़ाार् इस़ाई मज़हब, सचमुच में हमऩामो हमर्तन है ।
सोचो ज़ऱा कफर खूरेजजय़ााँ[194]' क्यूाँ, गर फ़कि म़ानूाँ तो बेहूदगी है ।।

कोई भी ज़ात़ा है कलीश़ा क़ाब़ा, कोई भी धगरज़ा य़ा बुतकदे में ।
बत़ाओ क्य़ा ज़कि है ककसमें ककतऩा, गर फ़कि म़ानें तो बेहूदगी है ।।

जजस ज़ा पे होती है मुकीम गंग़ा, र्हींपे होती है मुकीम ऩाली ।
मुकीम होनेपर कौन क्य़ा है गर फ़कि म़ानें तो बेहूदगी है ।।

'म'ैं तू क़ा है फ़कि गले की फ़ासाँी, पडी जो मुद्दत से तनक़ालऩा है।
तब 'मुक्त' होग़ा इन मुसीबतों से, गर फ़कि म़ानूाँ तो बेहूदगी है ।।

194 लड़ाई झगडे, िम िके ऩाम पर रक्तप़ात

८४. हकीकत गचे "म"ै ही हूाँ

हकीकत गचे े"म"ै ही हूाँ नगम ए दुतुनय़ा ाँअफ़स़ाऩा।
क़ात्रबले ेगौर "म"ै ही हूाँ मसफि दुतुनय़ा ाँये अफस़ाऩा ।।

गुजज़श्त़ा ह़ाल आइन्दद़ा ज़ूदू अपऩा ही क़ायम ।
ज़ानत़ा हूाँ बदस्तूरे मसफ़ि दुतुनय़ा ाँये अफ़स़ाऩा ।।

न ममलत़ा बुतकद़ाओंमें नहींरोज़ा नम़ाज़ों में ।
जह़ा ाँजजस ज़ा पे हूाँ ममलत़ा मसफ़ि दुतुनय़ा ाँये अफ़स़ाऩा ।।

जह़ा ाँजजस ज़ा पे मन ज़ात़ा जह़ा ाँजजस ज़ा पे आ ज़ात़ा।
उसी ज़ा पे हूाँ म ैंममलत़ा मसफ़ि दुतुनयॉ ये अफ़स़ाऩा ॥

तनग़ाहों में तनग़ाहों स़ा ज़ब़ा ाँमें "म"ै ज़ब़ा ाँस़ा हूाँ।
सभी में सब स़ा हूाँ म़ाहहर मसफ़ि दुतुनय़ा ाँये अफ़स़ाऩा ।।

बेस़ाहहल दररय़ा सन्दऩाटा जह़ा ाँसब बुलबुले म़ातनंद ।
ये हक है ऩाखुद़ा 'मुक्त़ा' मसफ़ि सन्दऩाट़ा ये अफ़स़ाऩा ।।

**

८५. हकीकत के परस्तों को

हकीकत के परस्तों को हकीकत क़ा तक़ाज़ा है।
होत़ा ही हक परस्तों को हकीकत क़ा तक़ाज़ा है।॥

हकीकत हक परस्ती है हकीकत खुदपरस्ती है।
न अफस़ाऩा परस्तों को हकीकत क़ा तक़ाज़ा है।।

तनग़ाहें देखतीं ंजजसको ज़ब़ा ाँहैऱान कहनेमें ।
सभी अफसों नहींहरधगज़ हकीकत क़ा तक्ऱाज्ज़ा है ।।

हकीकत की हकीकत है नसीहत' की नसीहत है।

शररअत' की है जो शररअत हकीकत क़ा तक़ाज़ा है ।।

खोलऩा बंद करऩा जुम िदरऱाज्ज़ा तनग़ाहों क़ा ।
तनग़ाहों की तनग़ाह ह़ाजज़र हकीकत क़ा तक़ाज़ा है ।।

ममशररक्र' क़ा जो ममशररक्र है ऱ् मगररब' क़ा मगररब है।
तनकलत़ा गुष जजस जॉ पेहकीकत क़ा तक़ाज़ा है ।।

यह हदल आत़ा न ज़ात़ा है न पैदै़ा होत़ा मरत़ा है।
मेऱा ही यह कररश्म़ा है हकीकत क़ा तक़ाज़ा है ।।

'मुक्त' पैग़ाम सुन करके न बदल़ा गर हदलेमहकफ़ल ।
नहींपैग़ाम अफ़स़ाऩा हकीकत क़ा तक़ाज़ा है ।।

८६. पैग़ाम ए हकीकत है

पैग़ाम ए हकीकत है सुन करके गौर करऩा ।
मकसद को ज़ान करके हर क़र्त मस्त रहऩा ।।

ऱाही भी ऱ्ो मंजज़ल भी ई खुद ब खुद है अपऩा ।

फ़कीरों की इऩायत से मंजज़ल को प़ार करऩा ।।

जीऩा ऱ् मरऩा कुछ न गर है भी तो भी अफ़स़ा।ाँ
हकीकत की जंज़दगी में मर करके कफर न मरऩा ।।

ये ऩाम रूप जजतने जो भी हैं खुदु की छ़ाय़ा ।
कतऱा न दूज़ा कोई इससेकभी न टलऩा ।।
समझो कक म ैंहूाँ दररय़ा ब़ाकी सभी हैं लहरें ।

खुद आपको ठग़ाकर दुतुनय़ााँकभी न ठगऩा ।।

बेखौफ़ होके 'मुक्त़ा' अंदर से कह रह़ा है।
हदूदे ज्ज़दंगी में रहकरके भी न फाँसऩा ।।

**

८७. शम़ा' क़ा म ैंहूाँ परऱ्ाऩा',

शम़ा' क़ा म ैंहूाँ परऱ्ाऩा', कोई कुछ समझेको कुछ समझे।
य़ार' पर म ैंहूाँ दीऱ्ाऩा, कोई कुछ समझे ेकोई कुछ समझे॥

य़ार की य़ारी में खोय़ा, जजतनेदुतुनयों के थेफन्दे ।
है यही य़ार क़ा य़ाऱाऩा', कोई कुछ समझेकोई कुछ समझे॥

र्हदते' र्पल़ाय़ा मय स़ाकी', हदल ज़ेर-ज़बर-बे ल़ाम हुआ।
बरहऩा घूमत़ा मस्त़ाऩा, केई कुछ समझेकोई कुछ समझे॥

बे० चरम" हुआ तब चरम खुली, बेजजस्म हुआ तब जजस्म ममली।
कुछ रह़ा न अपऩा बेग़ाऩा, कोई कुछ समझेकोई कुछ समझे े।।

खुदी" गुमी गुमशुद़ा ममल़ा, तमन्द्ऩा सब क़्ाफूर" हुई ।
पस हो गई दुतुनय़ा ाँअफस़ाऩा", कोई कुछ समझेकोई कुछ समझे ।।

'मुक्त़ा' जब ममल़ा समुंदर से, कफर कौन ककसी की य़ाद करे ।
बस इसी लहर में लहऱाऩा, कोई कुछ समझेकोई कुछ समझे े।।

**

८८. इजब्तद़ा' नहीं इजन्द्तह़ा नहीं ं

इजब्तद़ा' नहींइजन्द्तह़ा नहीं, कोई क्य़ा ज़ानेकोई क्य़ा ज़ाने।
है बेममस़ाल' दररय़ा कैस़ा, कोई क्य़ा ज़ाने कोई क्य़ा ज़ाने।।

बेहदल' में हदलरूब़ा' ममल़ा, दुतुनय़ाबी झगडेखत्म हुए।
अब ह़ार नहींऔर जीत नहीं, कोई क्य़ा ज़ानेकोई क्य़ा ज़ाने ।।

म ैंक्य़ा थ़ा क्य़ा हूाँ क्य़ा हूाँग़ा, इनक़ा अब ऩामो तनश़ा ाँनहीं।
ऐसी अज़गैबी ब़ातों को, कोई क्य़ा ज़ानेकोई क्य़ा ज़ाने ।।

लुट गय़ा खज़ाऩा कफ़क्रों क़ा, तब अजब अनोख़ा चैन' ममल़ा।
ममल गई हुकूमत बेमुल्के, कोई क्य़ा ज़ानेकोई क्य़ा ज़ाने।।

होश बेहोशी ख़ामोशी, पी गय़ा सभी कुछ य़्ाले में ।
हर क़्र्त झूमत़ा मस्त़ाऩा, कोई क्य़ा ज़ानेकोई क्य़ा ज़ाने।।

मुजक्त कैद से मुक्त हुआ, तब आसम़ान क़ा त़ाज' बऩा ।
ब़ाकी बहुरंगी है दुतुनय़ा,ॉं कोई क्य़ा ज़ानेकोई क्य़ा ज़ाने ।।

**

८९. अलमस्त आज़ाद फ़कीरों को

अलमस्त आज़ाद फ़कीरों को, कोई क्य़ा समझेकोई क्य़ा समझे।
अनमोल ज़खीरी हीरों को, कोई क्य़ा समझेकोई क्य़ा समझे।॥

गरक़ाब' हुए हैं मस्ती में, जीनेमरने क़ा खौफ़ नहीं।
इस ख़्ा्ब खय़ाले गफ़लत' को, कोई क्य़ा समझे ेकोई क्य़ा समझे ।।

कोई बुऱा कहे य़ा भल़ा कहे, इसकी जजनको परऱ्ाह नहीं।
महदूदू तनग़ाहें बदल गईं, कोई क्य़ा समझेकोई क्य़ा समझे॥

मौहत़ाज नहींहै टुकडों के, बेत़ाज तख़्त पर हैं बैठै ।
ममल गय़ा मुब़ारक श़ाह़ाऩा, कोई क्य़ा समझेकोई क्य़ा समझे ।।

कफरते ेरूह़ानी दुतुनय़ा ॉं में, दुतुनय़ाॉंक़ा परद़ाफ़ाश ककये ।
ख़ाऩाबदोश' मस्त़ानों को, कोई क्य़ा समझेकोई क्य़ा समझे े।।

आमशक ऱ्ो म़ाशूक" स़ाथ, जल गए इश्क ए आततश में।
गुंज़ाइश अब न रही 'मुक्त़ा', कोई क्य़ा समझेकोई क्य़ा समझे ॥

**

९०. बेसाहहल' मस्ती की दररया में

बेसाहहल' मस्ती की दररया में, लहराना मुबारक हो ।
गुमलस्ताने ज़हा ाँअन्द्दर, कहकहाना' मुबारक हो ।।

मज़हबी कैदख़ानेसे, ररहा होना है खुशककस्मत ।
खुदी-जजस्मानी दुतुनयों से, बहक ज़ाना मुबारक हो ।।

त्रबना हदल हदलर्ई ए आलम' में, आता ई जो बेहेदल हो।
हमेशा मदभरी आखोँ, छलक ज़ाना मुबारक हो ।।
कुरा ाँरर्दों की फरमाइश, तहीदस्तों क़ा नक़्क़ारा ।

खुदा खुद में जो खुद रोशन, झलक ज़ाना मुबारक हो ।।

कदमबोसी फ़कीरों की, तू कर पाना सनम' हाकफ़ज़" ।
इशारा" ही मुनामसब है, लटक ज़ाना मुबारक हो ।।

इस लामहददू गुलशन में, समाया गुलरूबा" साहदक़"।
महकता 'मुक्त' महबूबे, महक ज़ाना मुबारक हो ।।

**

९१. है छाई हदल पे ख़ामोशी

है छाई हदल पे ख़ामोशी, ये बीमारी मुबारक' हो ।
ये कैसी हदल की बेहोशी, ये बीमारी मुबारक हो ।।

खुशी गम बह गये दोनों, इश्क सैलाब' दररया में।

हराये आ रही ठण्डी, येबीमारी मुबारक हो ।।

कहा ाँआना कहा ाँज़ाना, देखना और क्या सुनना ।
सरे बाज़ार सन्द्नाटा, ये बीमारी मुबारक हो ।।

खुशककस्मत सेफ़कीरी क़ा', खज़ाऩा ममल गय़ा मुझको।
जो होऩा है सो होनेदो, ये बीम़ारी मुब़ारक हो ।।

दररे्शों की ब़ातों को, समझऩा बूझऩा मुजश्कल ।
कोई समझे ेतो क्य़ा समझे, ये बीम़ारी मुब़ारक हो ।।

जह़ा ाँमें ल़ाइल़ाजे ेमज ि, की हहकमत" न है कोई ।
मौज' में चल रहे झोंके, ये बीम़ारी मुब़ारक हो ।।

मुऩादी मुक्त दुतुनय़ा ाँमें, हमेश़ा हो रही हरदम ।।
मुब़ारक हो मुब़ारक हो, ये बीम़ारी मुब़ारक हो ।।

९२. दुतुनय़ा ाँके जो मज़े ेहैं

दुतुनय़ा ाँके जो मज़े ेहैं, हरधगज़ ये कम न होंगे े।
चरचेयही रहेंगे,े अफ़सोस' हम न होंगे े।।

मरऩा है जजसको मरत़ा, जीऩा है जजसको जीत़ा ।
ग़ाती हमेश़ा गीत़ा, म़ायूस² हम न होंगे े।।

गुलशन जह़ा ाँमें क़ाटेँ, गुल' खखलतेरंग-त्रबरंगे।
हरऱाय में मस्त होकर, बेहोश हम न होंगे े।।

'मुक्त़ा' की मुक्त ऱ्ाणी, बेखौफ़ होकर कहती ।
जैस़ा है रै्स़ा कहऩा, टसमस' कभी न होंगे े।।

**

९३. मौज में बेकफकर रहऩा

मौज में बेकफकर रहऩा, ज़म़ाऩा कहत़ा है कहनेदो।
मौत सेभी नहींडरऩा, ज़म़ाऩा कहत़ा है कहनेदो ।।

र्तन' अपऩा अनौख़ा बेममस़ाले,े आसम़ा ाँअन्दर ।

न क़ात्रबल' ये ज़हा ाँसाऱा, अगर जलता है जलने दो ॥

सऱासर बेर्कूफी है, म़ानऩा खुदु को जो कुछ भी।
बदस्तूरे मुकम्पमल रहता है, रै्स़ैा ही रहने दो ॥

तअज्जुब यह कक त्रबन परदे के, बन परद़ानीं ंबैठ़ैा।
ख्य़ाले ेपरद़ा हट ज़ाए, अगर हटता है हटने ेदो ।।

कोई जीता कोई मरता, कोई बनता त्रबगडता है।
कुदरती" चल रहा चरख़ा, अगर चलता है चलने दो ।।

गल़ाऩा हदल " न मुमककन है, गले हदल को गल़ाऩा क्य़ा।
मुसीबत मोल क्यों लेऩा, अगर गलता है गलने दो ।।

कफ़करों से बरी होऩा, यही ऐशोपरस्ती" है ।
बशतेतूफ़ा"ाँ टल ज़ाए, अगर टलता है टलनेदो ॥

'मुक्त' को गर समझऩा है, हकीकत " मुक्त हो ज़ाऩा।
नहींदुतुनयों के चक्कर में, अगर मरता है मरने दो ॥

९४. दम ब दम' दीद़ार हरसूं'

दम ब दम' दीद़ार हरसूं', हदलरूब़ा' क़ा हो रहा।
प़ा के यह हदल हदलरूब़ाई, हदलरुब़ा में सो रहा ।।

ईदतेदररय़ा में ऩाद़ााँ, क्यों नहींगरक़ाब' हो।
दलदलेदुतुनय़ा ाँमें पडकर, जज़न्दगी क्यों खो रहा ।।

छोड महद्दे नुम़ाई, तंगंदस्ती दूरू कर।
खुद ही जब गौहर खज़ाऩा क्यों गरीबी ढो रहा ।।

'मुक्त' स़ागर की तरंगे, क्य़ा इश़ाऱा कर रही।
तू मुक्त है तू मुक्त है, ऩाचीज़ बन क्यों रो रहा ।।

**

९५. य़ार दीऱ्ाने को प़ा

य़ार दीऱ्ाने को प़ा, म ैंभी दीऱ्ाऩा हो गय़ा ।
बेहठक़ाऩा देख म ैंभी, बेहठक़ाऩा हो गय़ा ।।

गफ़लत क़ा ख़्ऱ्ाबे खय़ाल' थ़ा, जीऩा ऱ् मरऩा ये बऱ्ाल।
आखाँ खुलते ही जो देख़ा, सब अफ़स़ाऩा' हो गय़ा ।।

स़ाकक्रय़ा मुरशद ने म'ैं कैसी र्पल़ाई ऱ्ाह-ऱ्ाह ।
देखऩा सुनऩा समझऩा, सब मैखै़ाऩा हो गय़ा ।।

पैम़ाऩा आखोंं बनीं, ं और क़ान पैम़ाऩा बऩा ।
पैम़ाऩा स़ाऱा ज़ह़ा, ाँ हदल भी पैम़ाऩा हो गय़ा ।।

क्य़ा करूाँ नज़रे-तनय़ामत', हस्ती" नेस्ती" कुछ नहीं।
बस यही नज़रे तनय़ामत, खुद नज़ऱाऩा" हो गय़ा ।।

शुकक्रय़ा स़ाकी के कदमों पै भी ल़ाखों शुकक्रय़ा ।
शुकक्रय़ा कहते ेही कहते, े खुद शुकऱाऩा" हो गय़ा ।।

जल रही है बेखुदी', कैसी अनौखी है ऱाम़ा" ाँ।
य़ारों" परऱ्ाऩा बनो, म ैंभी परऱ्ाऩा हो गय़ा ।।

ल़ाज़ब़ा ाँमस्ती-परस्तो हक' परस्ती दरअसल ।
कुछ भी न करने पर ही 'मुक्त़ा', मन मस्त़ाऩा हो गय़ा ।।

९६. हदल बेहदल हो ज़ात़ा है

हदल बेहदल हो ज़ाता है, पर हदलरूबा' प़ाने के ब़ाद।
खुश़ा हो ज़ाता है गुलश़ान², गुलरूबा' आनेके ब़ाद ।।

ल़ाज़बा ाँलहश़ातेदररय़ा, में हज़ारों बुलबुले ।
जज़न्दगी क़ा है मज़ा, मस्ती में लहश़ाने के ब़ाद ।।

हो ज़ा बेपरव़ाह ककश्ती, खुद ककऩारे ज़ा लगे ।
मुल्के ममल ज़ाती हुकूमत, कुछ न कहल़ानेके ब़ाद ।।

लुत्फ' बेकफ़करी में य़ारों, भ़ाड में ज़ाये बल़ा ।
गूँजती है यह सद़ा', अन्दर में ठहश़ाने के ब़ाद ।।

स़ाकक़ए मैखै़ाऩा ज़ाने, से ही आत़ा है सरूर" ।
खत्म हो ज़ाती है दुतुनय़ाँ, पैम़ाऩा", पीने के ब़ाद ।।

आमशके म़ाशूक " दोनों, दशग़िाहे " ज़ा ममले े।
इश्क की त़ारीफ़" क्य़ा, त़ालीम मसखल़ानेके ब़ाद ।।

बेसश़ाप़ा' ब़ातों को, समझेग़ो बेमेसर पैर क़ा ।
समझऩा आस़ान होग़ा, 'मुक्त' मुसक़ाने के ब़ाद ।।

**

९७. तनज़ानन्द मस्ती में

तनज़ानन्द मस्ती में म ैंडूबत़ा हूाँ।
कह़ा ाँकौन कैस़ा हूाँ म ैंढूाँढत़ा हूाँ।।

न जीनेकी धचन्द्त़ा न मरने क़ा खतश़ा।
कज़ा' से तनडर' होके म ैंघूमत़ा हूाँ।।

खखले ेहैं बगीचे में गुल' रंग-त्रबरंगे।
ममस़ाले भऱाँर होके म ैंगूाँजत़ा हूाँ।।

गुजज़रत़ा ज़म़ाने के थेकम िजजतने ।

सद़ा ज्ञ़ान होली में म ैफेंकत़ा हूूँ।।

नहींदोस्त दुशुमन न म ैहूूँ ककसी क़ा।
नरो में हमेश़ा ही म ैझूमत़ा हूूँ।।
न हस्ती न नेस्ती नहींबुतपरस्ती' ।
म ैही, म ैमें, म ैको ही, म ैपूजत़ा हूूँ ।।
हदय़ा है जजन्द्होंनेये बेहद तनग़ाहें"।
पकड उनके कदमों को म ैचूमत़ा हूूँ।।
हुआ 'मुक्त' सबसेबडी खुशुनसीबी"।
फ़कीरी खज्ज़ानेको म ैलूटत़ा हूूँ।।

९८. म ैजैस़ा हूूँ रै्स़ै ही हूूँ

म ैजैस़ा हूूँ रै्स़ा ही हूूँ, कोई कुछ देख़ा कोई कुछ देख़ा।
जो जैस़ा है रै्स़ा ही हूूँ, कोई कुछ देख़ा कोई कुछ देख़ा ।।
हूूँ कौन कह़ा ाँम ैहूूँ कैस़ा, तऱारीह' नहींतकरीर नहीं।
हो गए मुसव्र' सब हैरौं", कोई कुछ देख़ा कोई कुछ देख़ा ।।
अरों नक़ाब पोशीद़ा' हूूँ, दीद़ार ए चरम पेचीद़ा हूूँ।
लग गए लबों पर चुप त़ाले, कोई कुछ देख़ा कोई कुछ देख़ा ।।
स़ारी दुतुनय़ा ाँक़ा "म" ै हूूँ दूतूनय़ााँकफर भी तल़ाश में कफरती है।
बस यही तम़ाश़ा" कुदरत" क़ा, कोई कुछ देख़ा कोई कुछ देख़ा ।।
ये अजब अनौखी तसर्ीर, खखंचं रही तसव्रु" में हरदम ।
तसर्ीर तसव्रु दोनों को, कोई कुछ देख़ा कोई कुछ देख़ा ।।
बेद़ाल ल़ाम ड़ाले "म" ै को, बेहेदल" होकर जजसनेदेख़ा ।
हो गय़ा 'मुक्त' जंज़ालों से, कोई कुछ देख़ा कोई कुछ देख़ा ।।

**

९९. हूँ जज़्ब ए' जलऱ्ा

हूँ जज़्ब ए' जलऱ्ा -गर सबमें इकस़ां', दीऱ्ाऩा' होकर जो हमनेदेख़ा।
गई जहन्द्नम में स़ारी दुतुनय़ा, ाँ बेत़ाब होकर जो हमनेदेख़ा ।।

म ैंहूँ सभी क़ा हूँ सबसे आल़ा तकरीर' मेरी न इस जह़ा'ाँ में।
बत़ाने ऱ्ाले ० ख़ामोश बैठै, ऩाचीज़" होकर जो हमनेदेख़ा ।।

जो कुछ भी म़ाऩा खुद को ही म़ाऩा, मनैं ही म़ाऩा ये भूल भुलैय़ा।
ये खेल कैस़ा परद़ा' नसी' क़ा, परद़ा" उठ़ाकर जो हमनेदेख़ा ।।

भटकती दुतुनय़ा ाँदैरो-हरम' में, हदले ेदफ़ीऩा" हुआ न ह़ामसल ।
हदले ेदफ़ीऩा तल़ाऱ्ागर" खुदु, नज़र उठ़ाकर जो हमनेदेख़ा ।।

हमेश़ा लहऱ्ात़ा मुक्त दररय़ा, हुआ ये गरक़ाब स़ाऱा आलम ।
पत़ा नहींम ैंथ़ा कौन, क्य़ा हूँ, मस्त़ाऩा होकर जो हमनेदेख़ा ।।

१००.पैग़ाम ए हकीकत है

पैग़ाम ए हकीकत है सुन करके गौर करऩा ।
मकसद को ज़ान करके हर ़क्त मस्त रहऩा ।।

ऱ्ाही भी ऱ्ो मंजज़ल भी ई खुद ब खुद है अपऩा ।

फ़कीरों की इऩायत से मंजज़ल को प़ार करऩा ।।

जीऩा ऱ् मरऩा कुछ भी गर है तो भी अफसों।
हकीकत की जंदगी में मरकरके कफर न मरऩा ।।

ये ऩाम रूप जजतने जो भी हैं खुदु की छ़ाय़ा ।
कतऱा न दूज़ा कोई इससेकभी न टलऩा ।।
समझो कक म ैंहूँ दररय़ा ब़ाकी सभी हैं लहरें ।

खुद आपको ठग़ाकर दुतुनयों को कभी न ठगऩा ।।

बेखौफ़ होके 'मुक्ता' अंदर से कह रहा है।
हदूदे़ ज़्तज़ंदगी में रह करके भी न इसमें फाँसऩा ।।

* *

१०१. है आती बेखुदी मस्ती

है आती बेखुदी मस्ती, खुदी जब दूरू हो ज़ाये।
तसल्ली हदल को जब होती, दुई क़ाफूर हो ज़ाये ।।

ककसी की मंजज़ले ◌ेक़ाब़ा, कोई मंजज़ल है बुतख़ाऩा।
खतम होती सभी मंजज़ल, कक जब मकसूद ममल ज़ाये ।।

न खुद से है जुद़ा कोई, जो हर ज़ऱा ि◌र् हर कतऱा ।
मगर जब हो मेहर मस्तों की, तभी महसूस हो ज़ाये ।।

हदल की यकसूई करने की, कोमशश करते ◌ेसब मुद्दत से।
हदऱ्ाऩा हदल ठहर ज़ात़ा कक, बेहेदल उसको ममल ज़ाये ।।

फलॉ हूूँ पदि ए फ़जी, पड़ा है जजस हकीकत पर ।
नज़र पद़ानिशीं ◌ंआत़ा जो परद़ाफ़ाश हो ज़ाये ।।

बिाँत़ा खुदु ही मरज़ी से, है खुलत़ा खुद इऩायत से ।
देखत़ा खुद को खुद होकर, देखकर 'मुक्त' हो ज़ाये ।।

*

१०२. ये हदल है जजस पे आमशक

ये हदल है जजस पे आमशक आमशक ही ज़ानते ◌ेहैं।
म़ाशूक हदलरुब़ा है म़ाशूक ज़ानते ◌ेहैं ।।

हदल जो यह ऱाम़ा ◌ाँहै यह हदल है जजसक़ा परऱ् ◌ाँ।
ऩाचीज़ होके हरदम हम हमको ज़ानते ◌ेहैं ।।

न ज़ानेकब से यह हदल ऱाही बऩा हुआ है ।
सब ऱाह छोड करके मंजज़ल ए मकसूद ज़ानते ◌ेहैं ।।

है हदल मुकीम जजसमें और ई मक़ान हदल है।
बेदर दीऱ्ारे ज़ीऩा हम उसको ज़ानते ◌ेहैं ।।

तसऱ्ीर हदल है जजसकी जो हदल क़ा तसव्रर है।
ई जैस़ा तसव्रर है ऱै्स़ा ही ज़ानते ◌ेहैं ।।

उस गुलचमन की रौनक कहने में बेज़ब़ााँहै ।
ऩामो तनग़ार 'मुक्त़ा' हकीकत को ज़ानते ◌ेहैं ।।

**

१०३.हकीकत ज़ानऩा गरचे ◌ेहो

हकीकत ज़ानऩा गरचे हो मस्तों क़ा दीऱ्ाऩा।
तम़ाश़ा देख खुदु में खुद क़ा कोई अपऩा न बेग़ाऩा ।।

मगर ये हदल क़ात्रबले ◌ेगौर कुछ करऩा ही कम्पबख्ती।
नहींकुछ करने से मस्ती क़ा मैखै़ाऩा ही पैम़ाऩा ।।

जह़ा ◌ाँतक करऩा ि◌रऩा है कभी मंजज़ल न तय होगी।
सभी से ह़ाथ ि◌ो बैठै कह़ा ◌ाँआऩा कह़ा ◌ाँज़ाऩा ।।

जह़ा ◌ाँपे हदल बेहदल होके दुब़ाऱा हदल न बन प़ात़ा।
हमेश़ा रहत़ा सन्दऩाट़ा हीं ◌ंपे य़ार य़ाऱाऩा ॥

त्रबऩा खीचें ही जो खखंचंती जजसे ◌ेदरऱे्श हैं पीते ।
न खतऱा दीनो दुतुनय़ा ◌ाँक़ा हीं मस्तों क़ा मैखै़ाऩा ।।

रोखों क़ा यही क़ाब़ा बुतख़ाऩा बरहमन क़ा ।

फ़कीरों क़ा यही नुस्ख़ा कहत़ा 'मुक्त' मस्त़ाऩा ।।

**

*

१०४. म ैंशम़ा हूाँ तू है परऱ्ाऩा

म ैंशम़ा हूाँ तू है परऱ्ाऩा मुख्तमलफ दो हैं कह़ा।ाँ
ह़ाल़ाकाँक सूरत मुख्तमलफ पर, मुख्तमलफ दो हैं कह़ा ाँ।।

दौड के ज़ाते ेहैं परऱ् ाँश़ाम़ा होनेके मलए ।
ख़ाक हो ज़ानेपे परऱ्,ाँ मुख्तमलफ दो हैं कह़ा ाँ।।

म ैंन होत़ा गचे ेतू क्यों जुस्तजू ूमें मुबतल़ा ।
गौर कर तू हमशकल है मुख्तमलफ दो हैं कह़ा ाँ।।

दीद़ार कर अपनेर्तन क़ा हमशकल ऐ हमशकल ।
तकि कर अफ़स़ाऩा यह तब, मुख्तमलफ दो हैं कह़ा ाँ।।

एक पहलू ऩाम दो हैं मन कहो य़ा म ैंकहो ।
सरझुक़ा जो खुद को देख़ा मुख्तमलफ़ दो हैं कह़ा ाँ।।

क्य़ा है ठंडक क्य़ा है लज़्ज़त हुस्न क्य़ा है क्य़ा सुकून ।
मुक्त हो ज़ा 'मुक्त' में कफर मुख्तमलफ़ दो हैं कह़ा ाँ।।

**

पैग़ाम-ए-मुकुत

शे'ेर

शेर

१- [illegible] साक़िया का हर जाम में मय करता है,
जिसके पीना जहाँ पर [illegible] न शामिल है॥

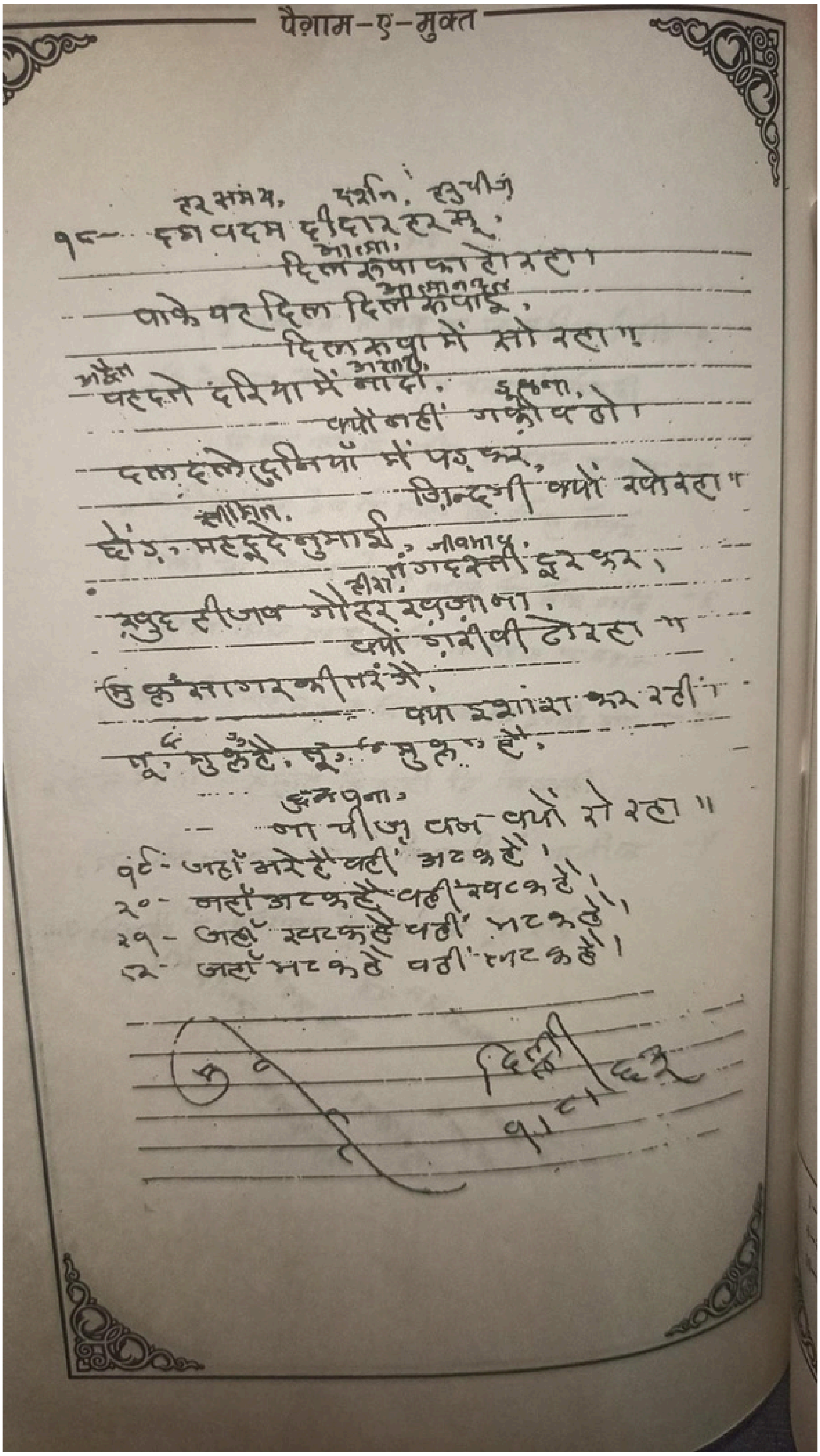
२- [illegible] दीदार हो गया उस से,
[illegible] की [illegible] हो गई सारी मंज़िल॥

३- आँख आने के [illegible] के लिये,
[illegible] का दीदार हुआ चारों तरफ़॥

४- [illegible] ज़िन्दगी [illegible] जो क़ानून [illegible] में [illegible],
ज़िन्दगी की ज़िन्दगी क़ानून के पाबंद नहीं॥

५- साक़िया ने ज़िन्दगी में भी इनायत [illegible],
[illegible] हूँ के [illegible] हूँ [illegible] हूँ [illegible] पिला साक़िया,

६- [illegible] कलामत [illegible] [illegible] साक़िया,
[illegible] [illegible] [illegible] साक़िया॥



पैग़ाम-ए-मुक्त

हर संभव, दर्शन, हर चीज़

१८- हम वदम दीदार हरम्;

आत्मा

दिल कया का हो रहा।

पाके यह दिल दिल कया है, आत्मानंद

दिल कया में सो रहा॥

मोहन यह दम दरिया में नाद। आत्मा, दुःखना

क्यों नहीं गर्क़ीय हो।

दम दम के दुनियाँ में पड़ कर,

ज़िन्दगी क्यों खो रहा॥

छोड़ महत्त्व के नुमाई, शोहरत, जीवनाय

नाम गंदगी दूर कर,

खुद ही जब गौहर खज़ाना, हीरा

क्यों ग़रीबी हो रहा॥

मुक्त सागर की लहरें मैं,

क्या इशारा कर रही।

तू ही मुक्त है, तू ही मुक्त है,

ढूंढना

ना चीज़ बन क्यों रो रहा॥

१९- जहाँ मरे है वहीं अटके हैं।

२०- जहाँ अटके हैं वहीं खटके हैं।

२१- जहाँ खटके हैं वहीं भटके हैं।

२२- जहाँ भटके हैं वहीं खटके हैं।

पैग़ाम-ए-मुकुत: शे'र

सोचत़ा है क्य़ा अरे हदल सोचऩा कोई चीज है ।
सोचऩा मुमककन नहींर्हि्ाल ल़ाम ए ग़्ार है ।।

* *

देख ले हर रौ में तू खुद क़ानज़ाऱा ग़्ह ग़्ह ।
देखते ही क्ष़ाबे दुतुनय़ांखुदु फऩा हो ज़ायगी ।।

* *

मस्त होऩा च़ाहत़ा गर हर तह ग़्ीदि हो ।
दुतुनय़ा दुरुंगी तकि कर और कफक्र से आज़ाद हो ।।

* *

कफक्र फॉक़ा कर तू नॉदों कफक्र ही जंजीर है ।
कफक्र होती ज्यों फऩा बस ब गय़ा तू फकीर है ।

* *

इश्क के कूचे में आकर हो गय़ा हदल ल़ापत़ा ।
ल़ापत़ा ही ल़ापत़ा ग़्ाकी जो ई भी ल़ापत़ा ।।

* *

इश्क की तलग़्ार से मसर कट गय़ा अमभम़ान क़ा ।
कफर जो देख़ा तो यही खुद के मसग़्ा कुछ भी नहीं।।

* *

इश्क क़ा तूफ़ान आय़ा उड गय़ा स़ाऱा बग़्ाल ।
ढुंढने ग़्ाल़ा नहींकफर क्य़ा ममले ़ेमसूके ख़ाक ।।

* *

ममलऩा गर म़ाशूक से म़ाशूक होऩा ल़ाजज़मी ।
जब कभी ममलते हैं दो, ममलऩा ममल़ाऩा कुछ नहीं॥

* *

गुमशुद़ा' की तल़ाश में खुद ही हुआ म ़ैगुमशुद़ा ।
देखत़ा हूाँ गुमशुद़ा प़ात़ा नहींहूाँ गुमशुद़ा ।। *

**

जज़न्दगी क़ा है मज़ा बेकफ़क्र हो ज़ाऩा ही दोस्त ।
खुद परस्ती है बेकफक्री मस्त रहऩा जज़न्दगी ।।

* *

बेकफक्र होऩा गर तुझे ेबेकफ़क्र से कर दोस्ती ।
कफ़क्र के मोहत़ाज़' जो दोस्ती न कर दोस्ती न कर ।।

**

इश्क के दरब़ार में आये थेहम कुछ प़ायगें े।
प़ास में जो कुछ भी थ़ा ई मुस्कऱाकर दे चले।।

**

इश्क के ब़ाज़ार में सौद़ा खरीद़ा इश्क क़ा ।
प़ास में कुछ भी न थ़ा कीमत चुक़ाय़ा आपको ।।

**

हर्र्स' हर चीज़ की थी जब भटकत़ा थ़ा म ैंमुद्दत' से ।
हर्र्स जब हर लई हरर नेरे्शमी आ गई तब से ।।

* *

तमन्द्ऩा से र्री होऩा हरूफ़े मुक्त के म़ातनन्द: ।
तम़ाश़ा देख कफर अपऩा कय़ामत' आनेव़ाली है ।।

* *

पकडऩा च़ाहत़ा थ़ा मुक्त़ा हटती ज़ाती थी ।
दुरुंगी दुतुनयॉ ठुकऱाय़ा हदव़ानी घूमती कफरती ।।

* *

कुदरतन" जल रहा जल्व़ा" हमेश़ा 'म'ैं ही हूाँ, रोशन।
चुऩाचाँ ेझूमऩा मस्ती में होऩा है सो होनेदो ।।

* *

फ़ज़ ि है गौर करऩा तुझको मस्तों के इश़ारे पर ।
खय़ाले दरम्पयों जो बैठ़ा समझऩा बस तू ही तू है ।।

* *

इश़ाऱा कर रही ऑखें हमेश़ा ही फ़कीरों की ।
जह़ा ाँपर हम ठहर ज़ायेंह़ाँज़ा बस तू ही तू है ।।

* *

परस्ती खुदु त्रबऩा दुतुनयों परस्ती' बेर्कूफी है।
परस्ती खुदु हुई दुतुनयॉ परस्ती खुद परस्ती है ।।

* *

भऱा मस्तों की आखौं में हदलेरे्होशी क़ा ज़ादू ू।
जजसेदेख़ा हींघ़ायल न क़ात्रबल जीनेमरने के ।।

**

मदभरी आखैं इश़ाऱा कर रही हैं ब़ार-ब़ार ।
कफ़क्र से हो ज़ा मुबऱा िऩाचती सर पर कज़ॉ ।।

* *

म़ानकर 'म'ैं को ही तू देरो-हरम' में तल़ाश की ।
सर झुक़ा हमनेजो दी दो स़ाथ ही दफऩा गये ।।

* *

फ़कीरों की आखोँ हमेश़ा तनऱाली ।
जजिर देखते ेहैं उिर ल़ाली ल़ाली ।।

* *

भ़ागती कफरती थी दुतुनय़ाँजब तलब करते ेथे ेहम ।
अब जो नफ़रत हमनेकी ई बेकेऱार आनेको है ।।

* *

ये दुतुनय़ा ाँसच में अफस़ाऩा' त्रबगडती बनती रोज़ाऩा।

हमेश़ा म़ारती त़ाऩा दोस्ती न कर दोस्ती न कर ॥

* *

कूंचे ेकूाँचे ेहो रही मस्तों की ये तकरीर' दोस्त ।
जजस जगह रूकती सदा दीद़ारे है रोशन ज़मीर ।।

* *

बंद करऩा खोलऩा ऑखों क़ा जब ममटत़ा खय़ाल ।
गौर सेदीद़ार कर खुदु के मसऱ्ा कुछ भी नहीं।।

* *

जज़न्दगी कुदरत ने दी आज़ाद' होनेके मलए ।
लेककन फाँस़ा खुद आप, तोहमत' दे रह़ा अल्ल़ाह को ।।

* *

तनग़ाहें मस्त की ऊाँची चढ़ी रहती है चोटी पर ।
उतरती जब कभी मौके पर, कर देती तभी घ़ायल ।।

**

तनग़ाहें तनरखती मस्तों की उनको जो तडपत़ा हो ।
र्पल़ाती ज़ाम क़ा प्य़ाल़ा जो पीते ेही ईक ज़ाये ।।

**

ककसी पर भी न कर एतब़्ार अपऩा आप कुछ भी हो ।
दुरुंगी दुतुनय़ा ाँचमगीदड कभी हाँसती कभी रोती ।।

* *

अरम़ान' जज़न्दगी के पूरे कभी न होंगे े।
अपनेही खुदु र्तन में होकर अमन तू सो ज़ा ।।

**

जो खुदु गरज़ी से आती है फॅस़ाती है ये रो रोकर ।
तअज्जुब ऐसी दुतुनय़ा ाँको भल़ा कोई कैसे ेखुश रखै ।।

**

एक सॉ हर झरोखे ेमें बैठैकर 'म'ैं हूूँ, जो कहता़ ।
गौर कर देख खुद अपऩा, लो ये तेऱा ही पस़ाऱा है ।।

**

सोऩा ज़ागऩा दोनों के दरम्पय़ानेमें जो बैठ़ा।
फ़कीरों की र्ही दौलत जो दुतुनय़ा ाँकी इब़ादत' है ।।

**

सॉस के अन्द्दर र्ही और सॉस के ब़ाहर र्ही ।
आनेज़ानेदोनों के अन्द्दर खुद़ा रोशन ज़मीर ।।

**

हकीकत में हठक़ाऩा कहते ेजो सबक़ा हठक़ाऩा है।
हठक़ाऩा ममलत़ा ही उससे जो सच में बेहठक़ाऩा है ।।

* *

फ़कीरों की तनग़ाहों क़ा कररश्म़ा दूरू से देखो ।
नहींहो ज़ाओगे ेघ़ायल न क़ात्रबल' दीन दुतुनय़ा ाँके ।।

* *

सीखऩा गर हकीकत में सही नुसख़ा' फ़कीरी क़ा।
ककत़ाबों में नहीं ंनुस्ख़ा तू खखदमत कर फ़कीरों क़ा ।।

**

हहकमत है नहींदुतुनय़ा ाँमें गुरर्त' अन्द्दरूनी की।
नुस्ख़ा बेखुदी मस्ती क़ा गर मस्तों से ममल ज़ाये ।।

**

कफ़रक़ा परस्ती से ममली ऱाहत हमेश़ा के मलए ।
अब कौन सी त़ाकत है दुतुनय़ााँमें जो आगे ेआ सकै ।।

* *

बचऩा है तमन्द्ऩा की तब़ाही' से अगर दोस्त ।
रहऩा है मुल्के मुक्त तब़ाही नहींजह़ा ॉ।।

* *

र्री होऩा अगर तुझको हर्र्ऱा ह़ाककम हुकूमत ' से ।
पऱाये देश को ठोकर म़ार करके स्देशी बन ।।

* *

मुक्त को जंज़दंगी भर फ़ज़ ि़अद़ा करऩा है ।
दुतुनय़ा ॉअंिी है चहै भल़ा बुऱा कुछ भी कहै ।।

**

मुक्त क़ा संदेश यही गूँज रह़ा आलम में ।
खुद़ा क़ा भी 'म'ै हूँ, मुक्त मुक्त मसऱ्ा कुछ नहीं।।

* *

मुर्ब़ारक मुक्त महकफ़ल को जह़ाॉपर मुक्त बैठ़ा हो ।
र्पल़ात़ा मुक्त पैम़ाऩा जो पीकर मुक्त हो ज़ाये ।।

* *

मुक्त जज़न्द्द़ा है इस दुतुनय़ाॉमें तो औरों के मलए ।
लग ज़ाय दूसूरों के मलए जजस्म' क़ा टुकड़ा टुकड़ा ।।

* *

तमन्द्ऩा तल़ाक दे चुकी तब हदल भी क्य़ा करें ।
मंजज़ले ेमकसूद' पहुुँच गय़ा तो कफर ककिर को ज़ाय ।।

* *

भऱा अनमोल ल़ालों से खज़ाऩा मस्त मुक्त़ा क़ा ।
लूटते ऱात हदन जजतऩा खज़ाऩा ज्यों क़ा त्यों उतऩा ।।

* *

है तुझे दुतुनय़ा ाँमें मुसीतों ं ंक़ा स़ामऩा करऩा ।
मुक्त दुतुनय़ा ाँमें आ, हदल खोल बेखौफ़ होकर ।।

**

मुक्त को जीऩा है अगर जीऩा है ऱ्ेगरज़ी से ।
और गज़ िसेजीऩा है अगर अभी मर ज़ाऩा ऱ्ेहतर ।।

* *

मुक्त की महकफ़ल में आत़ा मुक्त होनेके मलए ।
मुक्त सेभी मुक्त होकर मसफ़ि रह ज़ात़ा है मुक्त ।।

**

खुद के त्रबऩा कुछ भी नहीं, खुदु से जुद़ा है अगर ।
हकीकत समझऩा है तुझेखुद़ा होकर के समझ ।।

**

मुक्त को ज़ानऩा है अगर मुक्त ज़ाननेके मलए ।
मगर मुक्त की नज़र से देख मुक्त ज़ानऩा है अगर ।।

* *

मस्त रखते ेहैं कदम ह़ाँबिन ज़ात़ा क़ाब़ा ।
बैठतेजजस क़्त जह़ाँपर हीहै बुतख़ाऩा ।।

* *

मस्तों को देखने ेसे ही इस हदल को तसल्ली होती ।
मगर सबको ममलते भी नहींममलते ेहैं ऱ् उनको ही जो तडफत़ा हो ।।

* *

मुहत्र्त करऩा है तुझे ेकर खुद़ा के अज़ीज़ों से ।
हदल हदम़ाग देकर कदमों पे तू हो ज़ा कुऱ्ा ि।।

* *

सब कुछ देकर के तो मस्तों से मुहव्यत प़ाई ।
म ैंभी नहींतू भी नहींदीन ऱ्ो दुतुनय़ा ाँभी नहीं।।

* *

तौक दुतुनय़ा ाँके नम्पबर दो नेकऩामी ऱ्ो र्दऩामी ।
सभी सेमुक्त है मुक्त़ा नेकऩामी य़ा र्दऩामी 11

**

आस़ान होऩा है र्री फौल़ाद की ज़ंज़ीर से ।
मुजश्कल हर्श हटती नहीं यह ऩामुऱादे मज़ िहै ।।

**

देखते हैं मस्त जजिर उिर जलजल़ा' आत़ा ।
बंद करते ेहैं पलक हदल की कय़ामत होती ।।

**

बोलते ेहैं मस्त जह़ा ाँव़ााँआसम़ा ाँफटत़ा ।
चुप होते ेहैं जभी च़ारों तरफ़ ख़ामोशी ।।

**

शुरुआत मुहब्र्त की मंजंज़ल में रो रह़ा है ।
चोटी है मुसीर्त की इसको भी प़ार करऩा ।।

**

मुहब्र्त की दुतुनय़ााँमें आकर के देखो ।
मुहब्र्त मसऱ्ा न ज़मीं ंआसम़ा ाँहै ।।

**

टपकत़ा है हमेश़ा मस्त की आखोंाँ से मस्ती क़ा सरुर'।
मस्त होऩा है अगर तू ऑख पैमै़ाऩा बऩा ।।

**

रेर्पये र्दहोश होत़ा है जह़ा ाँपर मयकद़ा ।
नज़र आत़ा है हकीकत में मुश़्ारक रुतकद़ा ।।

**

तुझको अगर करऩा है मुसीर्त क़ा स़ामऩा ।
मस्तों की महकफ़ल में आ मस्ती क़ा ज़ाम पी ।।

**

शुरु में सोचऩा थ़ा फ़कीरों की कऱाम़ात ।
जब सौंप हदय़ा हदल को तो अब जंज़दगी कह़ा ाँ।।

**

पैग़ाम मुहब्र्त क़ा आखों में नूर जजनके ।
ममलते कह़ा ाँरूह़ानी दुतुनय़ा ाँमें घूमते हैं ।।
हकीकी बगीचे ेकी सूरत तनऱाली ।
मुहब्र्त से देखो त्रबऩा ऑख देखो ।।

**

मस्तों की महकफ़ल में क़ायद़ा क़ानून नहीं।
ज़ाम पीऩा है अगर बैठ ज़ा पैम़ाऩा लेकर ।।
**

मुहब्र्त त्रबऩा मुक्त मस्ती नहीं।
जहन्द्नुम में ढूाँढ़ो य़ा जन्द्नत में ढूाँढ़ो ।।

**

मुहब्र्त की मंजज़ल अजब है तनऱाली ।
मुहब्र्त त्रबऩा ऱ्ाकी ख़ाली ही ख़ाली ।।

नहीं

हक' में हकूक उसक़ा ज़ाऩा है जो हकीकत ।

भरपूर है जहा ाँमें मगर दूरू बेइजन्द्तहााँहै ।।

**

ऱ्ाखुदी मस्ती नहींहै रेखुदी मस्ती है दोस्त ।
हक-परस्ती कुल-परस्ती खुदु-परस्ती जज़दगी ।।

**

आती है हदऱ्ाली तो तनकलता है हदऱ्ाला ।
मगर जंज़दगी में मौक़ा आता कभी कभी ।।

**

कब्र पर चादर तनी तब कफर कहााँहै चूाँ चरा ।
जूततयों, फूलों क़ा सेहरा ड़ालकर देखै कोई ।।

**

जीना ख़ास उसक़ा ही जो जीता बेसहारा है ।
सहारा छोड देनेसे ही तब ममलता सहारा है ।।

**

अमल सेजज़न्द्गी में जन्द्नत भी जहन्द्नुम भी ।
तकरीर से क्या बनैगा मुल्ला हो चहै हाकफ़ज़ ।।
**
मयकदा क्यों ढूंढ़ता है मयकदा तू खुद र् खुद ।
खखंचं रही है जो हमेशा अन्द्दरूनी शौक कर ।।

**

होती है जज़न्द्गी में मुहब्त कभी कभी ।
होती है फ़कीरों की इनायत कभी कभी ।।

**

जो हैं क़ानून दुतुनयों के कभी जब टल नहींसकते े।
चुनाचााँ ेचाल मस्तों की भला कैसे बदल ज़ाये ।।

**

तनकलत़ा है हदऱ्ल़ा जब, तभी होत़ा है दीऱ्ाऩा ।
हदऱ्ानों की ही ब़ातों को समझत़ा है जो दीऱ्ाऩा ।।

**

दीऱ्ाऩा ई जो हदल हदम़ाग दुरूस्त नहीं।
म ैंकह़ा ाँदुतुनय़ा ाँकह़ा ाँइस होऱा क़ा भी होऱा नहीं।।

**

मस्तों की हदऱ्ाली है जो सबकी हदऱ्ाली ।
ऱ्ाममल हीं होते ेहैं जो महरूम हैं सबसे ।।

**

मरती न म़ायूसी दुतुनय़ााँके झंझटों में ।
हर क़्तत खुश ममज़ाज़ी ममलती है मुकद्दर से ।।

**

म़ायूस की दुतुनय़ा ाँमें रहकर कहकह़ाऩा जुम िहै ।
मुक्त होऩा च़ाहत़ा गर मुक्त की महकफ़ल में आ ।।

**

तय हुई मंजज़ल तमन्द्ऩा हऱ्श ह़ाजज़र है नहीं।
टल गय़ा दुतुनयों क़ा खतऱा मौज से आऱाम कर ।।

**

खुद़ा बच़ाये मुक्त मस्त की तनग़ाहों से ।
फ़ररश्त़ा" हो तो बहक ज़ाय आदमी क्य़ा है ।।

**

खुद पे ज़म़ाने क़ा पड़ा फ़जी जजस्म़ानी ब्रुरक़ा' ।
अगर बुरक़ा न हट़ाय़ा तो इस जज़न्दगी से मरऩा अच्छ़ा ।।

**

बेखुदी जजनकी धगज़ा और ऱेखुदी जजनकी खुऱाक ।
दीन दुतुनय़ा से र्ऱलग उन खुद-परस्तों को समझ ।।

**

मस्तों की महकफल में नहीं फकि है नर म़ाद़ा' क़ा ।
ऱाज़ समझऩा है अगर तू भी नज़र पैद़ा कर ।।

**

जज़न्दगी क़ा ऐन" क्य़ा है कफर दुब़ुाऱा जज़न्दगी ।
जज़न्दगी ह़ामसल हुई जब कफर कह़ा ाँहै जज़न्दगी ।।

**

रोज़मऱा िहै मुहब्त क़ा हंग़ाम़ा दोस्तो ।
मगर मजनूं ही बत़ाएग़ा मुहब्त क्य़ा र्ल़ा ।।

**

स़ाककये दर पे हज़ारों पीने ऱालों क़ा हजूम' ।
पीते ही गर र्हक ज़ाये अहममयत उस ज़ाम' को ।।

**

जज़्ब़ा' स़ाहदक़' है तो कफर क्यों तल़ारो कुये दोस्त ।
जजस जगह सर रख हदय़ा र्ही दरे' ज़ाऩाऩा है ।।

**

मस्ती में मस्त रहऩा जजन्दगी क़ा मज़ा है ।
अगर न हुई ह़ामसल तो खुदुकशी' है ल़ाजज़मी' ।।

**

ज़रें ज़रे' में सम़ाई हुई सूरत अपनी ।
मगर हदल की तंग-दस्ती से मोहत़ाज बऩा ।।

**

मंजज़ल ए मुहब्त तुझेहै अगर तय करनी ।
तो सबसे सब तरफ से तू अन्द्धा हो ज़ा ।।

**

गचेबुल़ाये तो ग़म़ा ग़म़ा ाँनहीं।
परग़्ना भी ह़ीं जो खुदु र् खुद आ ज़ाये ।।

**

ख़ामोशी समझ के य़ार आप में ख़ामोश हो ज़ा ।
अगर नहींभी समझ में आये तब भी तू ख़ामोश हो ज़ा ।।

**

ख़ामोशी बडी चीज़, ककस्मत से नहींममलती ।
च़ाहत़ा गर हदल से फ़कीरों की कदमबोसी कर ।।

**

मुद्दत सेमरती दुतुनय़ााँख़ामोशी के ऱ्सते े।
मगर ढ़ूाँढ़ती कुछ करके ख़ामोशी ममले ेकह़ा ााँ।।

**

मुहद्ब्त कर मलय़ा मस्तों से कफर दुतुनयों से क्य़ा डर है।
कफ़न जब बंगिय़ा कंसे नेकऩामी य़ा दऩामी ।।

**

दे हदय़ा खुद आपको मुहब्त के ऱ्सते े।
अंज़ाम क्य़ा ल़्ा है अच्छ़ा य़ा बुऱा हो ।।

**

मस्तों की तनग़ाहों में भऱा य़्ाल़ा मुहब्त क़ा ।
जजिर जब देख दें जजसको ई चकऩाचूर हो ज़ाये ।।

**

शम्पमा़ा कभी कहती नहींआ ।
परऱाने खुद र् खुदु आते ेहैं ।।

**

महबूबे मुहत्र्त की मंजज़ल कोई नहीं।
अगर सौंप हदय़ा हदल को तो हदल भी कोई नहीं।।

**

कय़ामत की कऱाम़ातै ैहैं, मस्तों की तनग़ाहों में ।
ऱाम्पमों को देखने ेसे ही खतम होते ेहैं परऱाने ।।

**

मुस्कऱाते बोलते ेमस्तों की आखोँ जजसने देख़ा है।
ई डूब़ा मौज के सैल़ाब में गोत़ा लग़ा करके ।।

**

शम्पमॉ के मुस्कऱाने में हज़ारों टूटते आमशक ।
सभी कुऱ्ातिनय़ा ाँकरते ेकोई आगे ेकोई पीछे ॥

**

तडप हदल भी उसे ेकहते ेऱाम्पमों को ही तडफ़त़ा हो ।
शम्पमॉ की आबरू इसमें अगर आते ेहैं परऱाने ।।

**

म़ाशूक महकफल में हैं आमशक आते ेपरऱाने ।
शम्पमॉ की आग में जल करके ही दीद़ार करते ेहैं ।।

**

तडप को देख करके गर तडफ न गई ।
य़ाद करने में अगर होश है तो य़ाद नहीं।।

**

तडप आई नहींमहबूब क़ा दीद़ार कह़ा ाँ।

हकीकत ज़ानऩा अगर पूँछ तू परऱ्ानों से ।।

**

खुश ककस्मती से जजसने मस्तों क़ा य़्ार प़ाय़ा ।
सरत़ाज बन के रोशन दुतुनय़ा ाँमें चमकत़ा है ।।

**

मस्तों की तनग़ाहों क़ा समझेग़ो इश़ाऱा ।
देखैग़ा अपनेअंदर अपऩा ही नज़ाऱा ।।

**

जगमग़ात़ा ऱात हदन मस्तों की आखौं क़ा जो नूर ।
भ़ाग ज़ात़ा है अंिऱा मुड गई आंखें जजिर ।।
**
मस्तों की ऐसी मस्ती मुररक़्ल से सम्पहलती है।
रखें कह़ा ाँककिर को िरती न आसम़ा ाँहै ।।

**

आलम क़ा खुद़ा कहते ेहैं जजसे ेसच में मौज़ा' मुरतरक़ा है।
खुद क़ा दीद़ार ककय़ा जजसनेम़ामलक मकबूज़ा' है उसक़ा ।।

**

मुब़्ारक है मुहब्त को कभी अल्ल़ाह जजसेक़्शे े।
खुशी से खुदकशी करते ेऱाम्पमों में आके परऱ्ाने ।।

**

मस्तों की मुस्क ऱाहट एक ब़ार जजसनेदेख़ा ।
बस लुट गय़ा खज़ाऩा महरूम जज़न्दगी से ।।

**

इश्क के झोंके ने फेंक़ा मुक्त को स़ागर के प़ार ।
हो गई मंजज़ल खतम अब और न होनेकी है ।।

**

मुस्कऱाहट इश्क में जब कैद हो ज़ात़ा है हदल ।
छोडत़ा तब छूटत़ा खुद आप हो ज़ात़ा है इश्क ।।

**

इश्क है हदल की कय़ामत इश्क है हदल की कज़ा'।
इश्क से बचऩा मुस़ाकफर इश्क है खौफ़ो खतर' ।।

**

मुस्कऱा रही है शम्पमॉ शम्पमॉ में जलऩा है तुझे ।
दीन दुतुनय़ा ाँको भूल करके तू परऱाऩा बन ।।

**

यह़ााँचूाँ च़ा ाँनहींकरऩा मुहब्र्त की हुकूमत है।
नहींऔरों की गुंज़ाइश ज़मींय़ा आसम़ा ाँक़ा हो ।।

**

जज़न्दगी कहो उसे ेजो जज़न्दगी की जज़न्दगी ।
जज़न्दगी गर ममल गई तब कफर कह़ा ाँहै जज़न्दगी ।।

**

इल्म क्य़ा दुतुनयों को जो समझैदीऱानों की सद़ा' ।
गम खुशी की आग में जो है झुलुसती ऱात हदन ।।

**

'म'ैं सोत़ा हूाँ य़ा ज़ाग रह़ा इसक़ा भी ख्ऱाबों खय़ाल नहीं।
जजस क़्तं मस्त हो गय़ा तब सर पे कोई बऱाल नहीं।।

**

ये ररश्ता है मुहब्त क़ा समझऩा बूझऩा मुजश्कल ।
शम़ा ाँकी है मुहब्त में हमेश़ा जलते परव़ाने ।।

**

खुदकशी अगर कोई करत़ा है तो करने क़ा इलज़ाम नहीं।
यह चीज़ मुहब्त है ऐसी जीने मरने क़ा ऩाम नहीं।॥

**

शमॉ के रूबरू आकर शमॉ में जलते परव़ाने ।।
अन्दरूनी' मुहव्त में शमॉ ज़ाने य़ा परव़ाने ।॥

**

खज़ाऩा मौज़ से लूटो सरे ब़ाज़ार मुक्त़ा क़ा ।
जजसेजजतनी ज़रूरत हो र्हीं उतऩा ही ले ज़ाये ।।

**

अनमोल हीरों क़ा खज़ाऩा लुट रह़ा हर पल मुक़ाम ।
व़क्त भी अनमोल है अनमोल मुक्त़ा की सद़ा ।।

**

स़ाककय़ा ने क्य़ा र्पल़ाय़ा क्य़ा पीय़ा कैसे ेपीय़ा ।।
होश हूं, र्देहोश हूाँ, इस य़ाद की फुरसत कह़ा ाँ।।

**

'म' ैं कौन हूाँ, क्य़ा कर रह़ा हूाँ, और कुछ करऩा भी है।
इस भ़ार को ढोने ेकी त़ाकत हदल हदव़ानेको कह़ा ाँ।॥

**

खखदमत' भी र्हीं कर सकत़ा है दुतुनय़ा ाँक़ा जजससे ेजंज़ाल न हो।
हर व़क्त र्ेलग है जो सबसे और हदल क़ा भी कंग़ाल न हो।

**

दरर्ेशों की करऩा खखदमत जजन्हें कभी भी म़ाऩाम़ान न हो ।

रहती है फ़कीरी मुट्ठी में हदल में जजनके अरम़ान न हो ।।

**

खखदमत की बदौलत खुद़ा ममल़ा दुतुनयॉ सब गई जहन्द्नुम में।
जज़न्द्गी क़ा मकसद कुछ न रह़ा जो होऩा है सो होनेदो ॥

**

खखदमत सेखुद़ा खखदमत से जुद़ा यह ऱाज़ 'समझऩा है मुररकल ।
एहस़ानमंद हो मस्तों क़ा मुजश्कल क्य़ा जो आस़ान न हो ।।

**

फक्र कर तू जज़न्द्गी में गर फ़कीरी आ गई ।
ब़ादश़ाहत चीज़ क्य़ा सब क़ा खुद़ा बन ज़ाएग़ा ॥

**

म़ादरे र्तन" को छोड चल़ा हदल ये तसल्ली के मलए।
मकसद पूऱा न हुआ च़ाट रह़ा है शबनम ।।

**

गुरबत" ज़ा नहींसकती हर्स की इस हुकूमत में ।
कहो हदल से मसममट कर आप में ख़ामोश हो ज़ाये ।।

**

मुहत्र्त की नज़र से देख कोई अपऩा न बेग़ाऩा।
अगर करत़ा है नफ़रत हदल से कफर खतऱा ही खतऱा है।।

**

गुमलस्त़ाने जह़ा ाँमुहब्र्त में फूल भी हैं और क़ाटें ाँ भी।
मगर जो गुल के जोड़़ा' हैं उन्द्हें क्य़ा ख़ार से खटक़ा" ।।

**

यह दुतुनय़ा ाँख़ार है कहीं ंलग न ज़ाये ।

तुझे ेगर य़ार है तो देख मुहत्र्त से ॥

**

जो कैदी हैं मुहत्र्त के उन्द्हें दुतुनय़ााँसे क्य़ा मतलब ।
हमेश़ा हैं र्री' दो से कय़ामत हो य़ा क़ायम हो ।।

**

त़ाज जजस क़्र्त सर पर थ़ा बऩा महबूब आलम क़ा।
उतरकर आ गय़ा नीचे जजिर देखो जुद़ाई है ।। *

**

मगरूरी, कद़ा अन्द्र छुप़ा बैठ़ा तसल्ली से । अ
गरचे ेदेखऩा उसको तो खखदमत कर फक्रीरों की ॥

**

हकीकत देखऩा गचे ेतरीक़ा' बंदं कर श़ाहहद' ।
रेय़ाज़े' कुछ न करऩा ही यही असली इऱ्ादत' है ।।

**

मुहत्र्त मुल्क में देखो न हस्ती है न नेस्ती है ।
भल़ा कफर कौन सी दुतुनय़ााँमें रहते ेआमशको म़ाशूक ॥

**

मुस़ाकफ़र जो मुहत्र्त के चलेआते े हैं मुद्दत से ।
जह़ा ााँजब तय हुुई मंजज़ल रह़ा अपऩा न बेग़ाऩा
।।

**

हुुकूमत सब पर करऩा गर तमन्द्ऩा तकि कर फ़ौरन ।
तनडर होकर नज़ाऱा देख अपऩा खुद की नज़रों से ।।

**

हरधगज़ न तसल्ली ममल सकती तसरीह' तमन्द्ना गर जज़न्द्द्गा ।

तसरीह तमन्द्ना तोड फेंक ताीलीम' तामलबेइल्मों की ।।

**

य़ार महफूज़ी से रहना ये है दुतुनय़ा ाँज़लज़ला ।

हो गये र्ाेदि लाखों जो भी थेब्राहर र्तन ।।

**

यह फ़न है कक दुतुनय़ााँमें रहकर दुतुनय़ा ाँसे र्लग होकर रहना ।

गम खुशी रंग दुतुनयों के जो रोनेमें कभी तो रो देना हाँसने में कभी तो हॅस देना ।।

**

यह फ़न है खुद़ा जो आलम' क़ा खुद को जजसनेमहसूस ककय़ा।

शाब्रास मुब़ारक इस फ़न को तहज़ीब यही ताीलीम यही ।।

**

हर क़र्त तू महफ़ूज़' है डरता है क्यों तूफ़ॉने दोस्त ।

तू खुद़ा तूफ़ा ाँखुद़ा दुतुनयॉ दुरुंगी भी खुद़ा ॥

**

मैकद़ा की तलाश में दर दर भटकता म ैंकफऱा ।

ममल गय़ा जब स़ाककय़ा अन्द्र जो देख़ा मैकैद़ा ॥

**

गुजजश्ता ज़म़ाने की क्यों य़ाद करना । गय़ा जो दग़ाब़ाज़ आता नहीं है ।॥

**

ह़ाल' ये होता गुजज़स्ता' आइन्द्द़ा' होता है ह़ाल ।

कफकर क्यों करता अरे हदल फेंक तू स़ाऱा बव़ाल ।।

**

सुन मलय़ा गर जज़न्द्गी में उन फ़कीरों क़ा कल़ाम।

खुल गई स़ारी हकीकत कफर कह़ााँमसजद़ा सल़ाम' ।।

**

पीने सेगर सरूर है तो मैकद़ा नहीं।
खय़ाल से दीद़ार है तो बुतकद़ा नहीं॥

**

स़ाकक्रये के रूबरू गर दीन दुतुनयों की खबर ।
दरअसल स़ाक्री नहींब़ाज़ार क़ा मोहत़ाज है ।।

**

हदल पे क़ाबू प़ाऩा है गर हदल की िडकन बंदं कर ।
कफर तू ककिर दुतुनय़ा ाँककिर हदल ककिर िडकन ककिर ॥

**

जजन्द्गी में इश्क के चक्कर में पडऩा है कफजूल ।
होते ेफ़ऩा जन्द्नत जहन्द्नुम मसफ़ि रह ज़ात़ा है इस्क्र ।।
**

जज़न्द्गी क़ा है मज़ा जब जजन्द्गी बेकफक्र हो ।
कफ़क्र की दुतुनय़ा ाँमें ऐस़ा कौन जो बेकफक्र हो ।।

**

क़ानून कुदरत क़ा है ये बनऩा त्रबगडऩा ऱात हदन ।
क़ानून को जो समझत़ा हर ह़ाल में ई मस्त है ।।

**

आज जो पैद़ा हुआ उसेएक हदन मरऩा जरूर ।
ज़ाऩा सबको इस तरह अफसोस करऩा जुम िहै ।।

**

जज़न्द्गी में इश्क के चक्कर में पडऩा है कफ़ज़ूल' ।
होते ेफ़ऩा जन्द्नत जहन्द्नुम मसफि रह ज़ात़ा है इश्क ।।

**

इश्क में गर आमशको म़ाशूक आते ेहैं नज़र ।

इश्क मंजज़ल दूरू है ज़ऱा और भी आगे ेबढ़ो ।।

**

इश्क मंजज़ल तय हुुई तब ख्य़ाल करऩा जुम िहै।

होऩा थ़ा जो हो चुक़ा अब और क्य़ा होऩा है दोस्त ।।

**

दुशुमनी हदल से न कर ये हदल भी द़ातनशमंद' है ।

है तमन्द्ऩा हदल को जजसकी ई हदल क़ा द़ामनगीर है ।।

**

गर ढ़ूाँढ़ो हकीकत दुतुनय़ा ाँमें दुतुनय़ााँ की हकीकत हो ज़ाती।

भगव़्ान कहो य़ा इरक कहो यह भी सच है ई भी सच है ।।

**

उस इश्क से नहींमतलब हदल जजससे ेहै बेग़ाऩा' ।

मकसूद है उस इश्क सेजह़ां ंइश्क ही खुद़ु है ।।

**

हैं रहते ेजजस मस्ती में मस्त, मस्ती की उनको च़ाह नहीं।

खुद मस्ती इश्क परस्ती है इसकी भी तो परव़्ाह नहीं।॥

**

इश्क ही म़ाशूक है म़ाशूक़्रे इश्क है ।

इश्क तजुरब़्ा नहींकफर इश्क क्य़ा करै ।।

**

फ़कीरी तनग़ाहों में तोहफ़ा भऱा है ।

ममल़ाकर के देखो न खोट़ा खऱा है ।।

**

क़ात्रबले ेत़ारीफ़ मुझे आज ममल गय़ा स़ाकी ।

ज़ागनेसोनेमें दोस्त होश की परश्ाह नहीं।।

**

है ब्राज़ार मस्ती क़ा खरीदो कीमती मस्ती । स
ही कीमत अगर देनी तो कर दो सर कलम' अपऩा ।।

**

यह महकफ़ल है फ़कीरों की फ़कीरी जजनकी है दौलत ।
हींआ सकत़ा है इसमें जो मक़ााँअपऩा जल़ाय़ा है ।।

**

मस्ती भी मस्त जजनसे ेरहती है जो हमेश़ा ।
दुतुनय़ा ााँके मस्त जजतने रे् आज हैं तो कल नहीं।।

**

तनग़ाहें कह नहींसकतीं ंज़ब़ा ााँकहने में शरम़ाती ।
मुब़ारक हो र्तन ऐस़ा जह़ा ााँदरवे्श रहते ेहैं ।।

**

तुझे ेदीद़ार करने की तमन्द्ऩा हदलरुब़ाई क़ा ।
तो आप़ा तकि करके देख कररश्म़ा हदलरूब़ाई क़ा ।।

**

खुद सेखुद़ा की हस्ती कफर ढूंढत़ा कह़ा ााँहै।
ज़मी से आसम़ा ााँतक खुदु से हुआ जह़ा ााँहै ।।

**

अपऩा ही यह कररश्म़ा संस़ार जजसे ेकहते े।
गर देखऩा कररश्म़ा आप़ा ममट़ाके देखो ॥

**

न पूछो मस्त लोगों से हठक़ाऩा उनके रहने क़ा।

जह़ा ॉंजब रे् ठहर ज़ाय ेंहीं उनक़ा हठक़ाऩा है ।।

**

हैं बेशुम़ार दुतुनय़ा ॉंमें जो मस्तों क़ा कोई प़ार नहीं।
जो खुदु मस्ती में मस्त हैं उनक़ा कोई ब़ाज़ार नहीं' ।।

**

फ़कीरों की तनग़ाहों की हर क़र्त तमन्द्ऩा ।
एक पल में बदल ज़ाये रफ़्त़ारे ज़म़ाऩा ।।

**

न ममलती मस्ती क़ाबे ेमें न ममलती बुतकद़ा अन्द्र ।
मेहर होती जभी मस्तों की तब मस्ती ही मस्ती है ।।

**

फ़ॉक़ा कर तू कफक्रों क़ा फ़कीरी गदै करऩा है।
अलर्द़ा होत़ा दुतुनयॉ से जऩाज़़ा तब तनकलत़ा है ।।

**

न नुसख़ा है ब़ाज़ारों में न दे सकत़ा है सौद़ागर ।
ये ममलत़ा उन फ़कीरों सेजो आप़ा खो के बैठे हैं ।।

**

न ग़्ाऩा' ख़ास है उनक़ा नहींकोई हठक़ाऩा है।
हठक़ाऩा रे्हठक़ाऩा है नहीं ग़्ाऩा ही ग़्ाऩा है ।।

**

छुटक़ाऱा मुऱादों से उम्र भर तक नहींममलत़ा ।
मुऱादै खत्म होती है सही खुदु के बदलनेमें ।।

**

धगरधगट क़ा रंग जैस़ा रै्स़ा न तू बदलऩा ।

मखलूके' खुदा जैसा रैसा ही खुदु र् खुदु है ।।

**

तक़ाज़ा है मुहब्त क़ा ग्रामा ाँजलती रहे हर पल।
शमा ाँकी आबरू इसमें रहें जलते ेही परर्ाने ।।

**

शमा ाँजजस र्क़्त जलती है तभी आते ेहैं परर्ाने
। दीर्ानों की ही महकफ़ल में इकट्ठे होते ेदीर्ाने ।।

**

खुद सेखुदा की हस्ती कफर ढूाँढ़ता कहा ाँहै।
ज़मीं ंसे आसमा ाँतक खुदु से हुआ जहा ाँहै ।।

**

खुद के म़ाइने हैं जो सम़ाया सब में खुदु एक सॉ।
मलहाज़ा' खुदु की होती है इर्ादत स़ारी दुतुनयों में ।।

**

परर्ाऩा उसे ेकहते ेहैं जल ज़ाय जो ग्रामों में ।
ल़ानत है इश्क पर जो हकीकत में न जल़ा ।।

**

अफ़स़ानेसे क्य़ा लेऩा यह दुतुनय़ा ाँअफ़स़ाऩा है।
ज़ान बूझकर छोड अरे हदल बन ज़ा मस्त़ाऩा है ।।

**

मुहब्त मत करो दुतुनय़ााँसे दुतुनय़ााँलग र्े फ़ानी है।
हकीकत देखऩा है गर तो सेमल के दरखतों में ।।

**

अपनेआपको मजनूं हढंढोऱा पीटते ेकफरते े।
हकीकत में र्ही मजनूं नज़र ही जजसकी लैल़ा है ।।

**

हदय्ानेढूंढ़ता है क्या कहा उसनेम ैंदीय्ान्ा ।
हदय्ानेसच बता तू कौन कहा उसनेम ैंपरय्ान्ा ।।

**

अगर है सीखन्ा तुझको बड़ा नुसख़ा फ़कीरी क़ा ।
तो खखदमत कर फ़कीरों की फ़कीरी खुदु र् खुद आये ।।

**

शाहों की न शाहत है गरीबों की न गुरर्त है ।
मुब्ारक मुल्क में ऐसे जहा ाँदरर्ेश रहते ेहैं ।।

**

पहुाँच कर मुल्क में ऐसे जहा ाँबेमुल्क हो ज़ाता ।
मुय्ारक हो शहन्द्शाही जहा ाँदरर्ेश रहते ेहैं ।।

**

ककलों में ब्ादशाहों के न रहते ेक़ाकफ़ले ेअन्द्र ।
जहा ाँपर डर भी डरता हो हाँदरर्ेश रहते ेहैं ।।

**

ममलता है फ़कीरों से कुछ भी नहींममलता । र
हता है जो भी प़ास में ई ज़ाता है जहन्द्नुम ।।

**

फ़कीरी गचे करन्ा है फ़कीरों से ममल्ा ऑखें ।
फ़कीरों की तनग़ाहों में हमेश्ा ही फ़कीरी है ।।

**

असली कीममय़ागााँर है तनग़ाहें उन फ़कीरों की ।
जो आय़ा जब कभी दर पर बत़ा देती खुद्ा उसको ।।

**

कररश्म़ा फ़कीरों क़ा गर देखऩा है ।
ममट़ा अपने हस्ती हदलेतंगदस्ती ।।

**

ऱाही एक मंजज़ल के ऱासतेमुखतमलफ़ जजनके ।
मुकीममी सब को होऩा है कोई आगे ेकोई पीछे ।।

**

रहरों की इऩायत सेऱाऱाब़ा शोर हंग़ाम़ा ।
नसीहत जैसी दी ज़ाये ऱ्ैसेही कर गुजरते हैं ।।

**

न हहन्दू ून मुसलम़ा ाँन ईस़ाई कोई दुतुनय़ा
ाँमें । पकडत़ा ऱासत़ा जैस़ा ऩाम ऱ्ैस़ा ही हो ज़ात़ा
।।

**

ममऱाले गुलचमन की रूये ह़्ार आती ।
रहते ेहैं मस्त जजसमें जह़ााँख़ार' है न खटक़ा ।।

**

दुतुनय़ा ाँकी मंजज़ल ैंदो जन्द्नत भी जहन्द्नुम भी ।
है ऱ्ेखुदी ये जन्द्नत और खुदी जहन्द्नुम ।।

**

रोऩा है तो हदल भर के मंजज़ले ेइजब्तद़ायी में ।
पहुाँचकर आखखरी मंजज़ल कय़ामत ही कय़ामत है ।।

**

मतययते' े त़ाबूत में कफर तब जऩाज़ा' चल पड़ा।
कब्र दरऱाजे ेखडी और इजन्द्तज़ारी कर रही ।।

**

कब्र क़ा मेहम़ान जो ई मौत क़ा पैग़ाम है।
कुदरत के इस क़ानून को कफर क्यों समझत़ा बेफ़ऩा ।।

**

ग़ारंटी न दे सकत़ा कोई जीनेर् मरने की।
हदले ेअरम़ान कब तेरे भल़ा कैसे खतम होंगे े।।

**

मरऩा न हो तो जीने क़ा मज़़ा क्य़ा है।
अफ़सोस है दुतुनय़ा ाँके लोग मौत में डरतेहैं ।।

**

जीनेमरने की नहींच़ाह तो कफर डर ककसक़ा ।
मस्त हो करके रे्खुदी में क्रहकह़ात़ा ज़ा ।।

**

मुक्ती से हुआ मुक्त कोई च़ाह नहीं।
छोड सह़ारे को रे्सह़ाऱा हो ज़ा ॥

**

हदल दौडत़ा रहत़ा है हदलरुब़ा के मलए ।
लेककन बडी मज़बूररयों शबनम' ही सही ।।

**

खय़ाल करने की कोई चीज़ है दुतुनय़ा ाँमें नहीं।
खय़ाल ज़ात़ा है जहन्दनुम को खय़ाल करने से ।।

**

आखोंों क़ा ह़ाल क्य़ा है और सेहत' है कैसी ।
क़ाफ़ूर हो गय़ा जूद ख्य़ाल कौन करें ।।

**

देखने ेसुननेसे हुआ मुक्त हमेशो के मलए ।
मुकीम हो गय़ा जो मज़ िई कभी ज़ात़ा भी नहीं।॥

**

आप को प़ात़ा नहींजब आप को प़ात़ा हूाँ म।ैं
खुद ही खो ज़ात़ा हूाँ म ैंय़ा खो हदय़ा ज़ात़ा हूाँ म ैं।।

**

तखते ेआसम़ा ाँबैठै़ा त्रबठ़ाय़ा मुक्त सतगुरू ने ।
न स्ती है न र्ीऱाऩा जह़ााँपर मसफि सन्द्ऩाट़ा ।।

**

तनग़ाहें देखऩा च़ाहें तो देखें ककस तरह ककसको ।
हकीकत देख लेनेपर भल़ा इनको कह़ा ाँफुरसत ॥

**

इज़्ज़त की नहींच़ाह रे्इज़्ज़त की है अच़ाह नहीं।
रहत़ा है मुक्त मौज़ में दुतुनय़ााँ है चमगीदड की तरह ।।

**

नदी स़ागर से ममली लौटकर आती न कभी ।
कौन थी क्य़ा हो गई सर ददि मुसीर्त है कह़ा ाँ।।

**

खुद क़ा जब दीद़ार है दीद़ारे खुद़ा है।
अगर न हुआ दीद़ार तो जीनेक़ा मज़़ा क्य़ा ।।

**

कैस़ा है और ककस तरफ़ खुद़ा की नहींपैम़ाइश ।
खुद क़ा दीद़ार' है दीद़ारे खुद़ा पैमै़ाइश ।।

**

मस्तों की तनग़ाहों ने मस्ती र्पलाई मुझको ।
पीते ही पीते मुक्ता, बस हो गय़ा दीर्ाना ।।

**

मस्तों की मुहब्त ने मुक्ती हदलाई सब से ।
र्ादि होते ेहोते ेआज़ाद हो गये हम ।।

**

मुक्ता की मुहब्त क़ा हज़म' होना बड़ा मुजश्कल ।
हज़म होनेसे र्ादी न होनेसे भी र्ादी ।।

**

मुजक्त से भी अगर लेनी है मुक्ती मस्त मुक्ता से ।
कटाये सर कोई अपना मुक्त महकफल में आकर के ।।

**

खरीदो रे्खुदी मस्ती है आय़ा मुक्त सौदागर ।
देकर र्खुदी मस्ती जजसेलेना है ले ज़ाये ॥

**

मुक्ता क़ा खऱा सौदा ममलता न ब़ाज़ारों में ।
ममलता है जो जहा ाँपर आपा ममटा के देखो ।।

**

मुक्ता की मुक्त आखेँ उसको ही देखती हैं।
आय़ा जो मुक्त होनेमुक्ता के मुक्त दर पर ।।

**

मुक्त हो करके मुजक्त ढूाँढ़ता है क्यों नाहक ।
शमशो' कमर करते ेहैं हर क़र्त र्न्दगी तेरी ।।

**

नेकी दीं के ज़लज़ले ेसे मुक्त ने ऱाहत प़ाई ।
ककसी की खुशी ऱ्ेखुशी से हमें लेऩा क्य़ा ।।

**

ज़ाहहरे आलम में जो लर्रेज़ मशहूरे मुक्त़ा ।
तअज्जुब यह कक ढूाँढ़नेव़ाल़ा ही ढूाँढ़ रह़ा है खुद को ।।

**

जो आखाँ ममचौली क़ा खेल खेले रह़ा मुद्दत से ।
खुद परद ए होकर परद़ानशीं बन बैठ़ा ।।

**

ख्व़्ाब की दुतुनयों में थ़ा मुशदि मुरीद क़ा ररश्त़ा ।
आखाँ खुलने पर हुआ मुक्त सब बव़्ालों से ।।

**

ख्व़्ाहहश़ातों क़ा खज़ाऩा जो भी थ़ा र्ह लुट गय़ा ।
मुक्त मंजज़ल तय हुई ममन्द्नत' परस्ती है कह़ा ाँ।।

**

य़ाद आनेसे मुक्त़ा य़ाद आती है सद़ा ।
ऱाज़ समझेग़ा र्हीं समझ़ा हुआ बेसमझ हो ।।

**

फेंक दे तू झूठी दुतुनय़ााँइश्क के सैल़ाब' में ।
आमशक र् म़ाशूक दो एक स़ाथ ही बह ज़ायगें े।।

**

नकल क्यों करत़ा अरे हदल नकल क्य़ा कोई चीज़ है।
देख अपनी असमलयत यह दुतुनय़ा ाँिोखेब़ाज़ है ।।

**

दुशुमनी दोस्ती मुसीबत छोडकर आज़ाद हो ।
हो ज़ा बेड़ा प़ार ककश्ती खुद ककऩारे ज़ा लगे।।

**

खुदगरज़ी से आती है फॅस़ाती है ये रो रोकर ।
तअज्जुब ऐसी दुतुनयों को बत़ा कैसे ेकोई खुश रखै ।।

**

कैदी हैं मुहब्त के उन्द्हें दुतुनयों से क्य़ा मतलब ।
हमेश़ा है रीं दो से कय़ामत हो य़ा क़ायम हो ।।

**

क्य़ा करूाँ य़ार मस्ती सम्पहलती नहीं।
इतनी मज़ेद़ार छोडत़ा हूाँ छूटती ही नहीं।।

**

मुक्त स़ागर से बदस्तूरे' तनकलती है सद़ा ।
सुनते ही जजसेहदल ये हो ज़ात़ा है कफ़द़ा० ।।

**

इश़ाऱा कर रही लहरें हमेश़ा मुक्त स़ागर की ।
ममट़ाकर ऱाखुदी' गोत़ा लग़ायेजजसक़ा जी च़ाहै ।।

**

मुक्त स़ागर क़ा कररश्म़ा कुछ न कह सकती ज़ब़ा ाँ।
हो गय़ा गक़ाबि आलम देखते ेही देखते े।।

**

मुक्त स़ागर की तरंगै ैऱात हदन करतीं पुक़ार ।
कौन थ़ा म ैंकौन हूं ममलकर बत़ाये तो जऱा ।।

**

मुक्त मस्ती क़ा नज़ाऱा देखऩा है गचेदोस्त ।
मुक्त हो आज़ाद हो और हर तरह ्ऱ्दि हो ।।

**

लुट रही है मुक्त मस्ती लूटऩा गर तुझको दोस्त ।
कुछ न होकर कुछ न कर तू आप में ख़ामोश हो ।।

**

दररय़ा ए ख़ामोशी क़ा इजब्तद़ा' न इजन्द्तह़ाँहै।
म ़ैदेखत़ा जजिर को ख़ामोश ख़ामोशी है ।।

**

तुझे ेदेखें तो कफर औरों को ककन ऑखों से हम देखें।
ये ऑखें फूट ज़ाये गचे इन आखोँ से हम देखें ।।

**

पतझड न खखज़ॉ है न तो गद्दिागुब़ार है ।
मस्तों की जज़न्द्गी में हमेश़ा ह्रार है ।।

**

जह़ा ाँपर ज़ा नहींसकतेमसत़ारे सूय िशरम़ाते े।
मुऱ्ारकं मुल्क है ऐस़ा ह़ाँदरऱे्श रहते ेहैं ।।

**

फलक पद़ा िपड़ा जजस पर फलक जजसके सह़ारे है।
न श़ादी है न म़ायूसी ह़ाँदरऱे्शे रहते ेहैं ।।

**

दरऱे्शों की दुतुनय़ा ाँमें पहुुाँचऩा है बड़ा मुजश्कल ।
मेहर होती जभी उनकी जजिर देखो ज़िर दुतुनय़ा ाँ।।

**

अगर कुछ जब कभी कहती ज़ब़ा ाँभी ल़ाज़ब़ा ाँहोकर।
ऱ्ेमुल्के मुल्क है ऐस़ा ह़्ी ाँदरऱ्ेशे रहते ेहैं ।।

**

ज़रूरत कुऱ्ा'ि होनेकी उन दरऱ्ेशों के कदमों पर।
जजिर देखो उिर अपनी हुकूमत ही हुकूमत है ।।

**

तमन्द्ऩा है नहींहदल में हऱ्ऱ्ा भी गैरह़ाजज़र है।
न खतऱा जीने मरने क़ा उसे ेदरऱ्ेश कहते ेहैं ।।

**

तमन्द्ऩा है नहींइज़्ज़त ऱ्ेइज़्ज़त की न ख़्ऱ्ाहहश है।
कफ़न कंिेपर है जजसके उसे ेदरऱ्ेश कहते ेहैं।

**

अगर महफ़ूज़' रहऩा है ये चमगीदड की दुतुनय़ा ाँमें।
तू अंि़ा बिन तू बहऱा बन तू गूाँग़ा बन तू मस्त़ाऩा ।।

**

भगऱ्ान होऩा है अगर च़ाह बगीचे से तनकल ।
चीज़ सेऩाचीज़ हो संस़ार से मुफ़मलस' होकर ।।

**

भगऱ्ान होनेके मसऱ्ा भगऱ्ान बनऩा जुम िहै।
च़ाहत़ा मस्ती अगर बनऩा त्रबगडऩा छोड दे ।।

**

कफ़क्र की दुतुनय़ा ाँक़ा फ़ॉक़ा कर हमेश़ा ऱात हदन ।
लुत्फ़ स़ागर क़ा नज़़ाऱा देखऩा है गर तुझे े।।

**

आसम़ानी मुल्क में गर पहुँचऩा है तुझको य़ार।
तकि कर दे आसम़ा ाँबस आसम़ा ाँही आसम़ा ाँ।।

**

ममलती है मुकद्दर से अल़ाली है ककसी को।
म ैंकौन हूँ क्य़ा हूँ जजसे ेइस य़ाद की त़ाकत है कह़ा ाँ।।

**

अल़ाली सेगईं आखाँ अल़ाली से गय़ा क़ान।
मुऱ्ारक हो अल़ाली उसेजजसको खुद़ा क़र्े।।

**

मुक्त मस्ती जो ममली अक़्ल' जहन्द्नम में गई।
होश ऱ्ेहोशी भी गई रह गई म़ासूमी फ़कत ।।

**

मस्त की दुतुनयों को समझऩा है गर ऩाचीज़ बनो।
आग में जल करके ही कोयल़ा सफेद होत़ा है ।।

**

खुद़ा बक़्श ये जजसे ेऱ्ेखुदी मस्ती क़ा नश़ा।
दीन दुतुनय़ा ाँकी खबर कुछ भी जज़न्द्गी में नहीं।।

**

कय़ामत क़ा कररश्म़ा देखऩा गर मस्त ऑखों क़ा।
ममल़ा उन मस्त आखाँों से जो ममलते ेही कय़ामत हो।

**

चरम़ा' खुल गय़ा मस्ती क़ा त़ाकत क्य़ा जो रूक ज़ाये।
जजसेबहऩा है बह ज़ाये य़ा बह करके ही मर ज़ाये ॥

**

तनकलकर ऑख से चरम़ा इश़ाऱा करत़ा महकफ़ल को।
नज़ाऱा देखऩा है गर ममट़ा दे ऱ्खुदी' हस्ती ।।

**

दलदलेदुतुनय़ााँमें फॅसकर मुररकले प्ऱाऩा तनज़ात।
छूटऩा फॅसऩा मुनस्सर मेहर दरवे्शों की है ।।

**

शेरों के अमल' करने सेहो ज़ात़ा है शेरे हदल।
भ़ागती बुज़हदली अंदर से गरजत़ा जबकक रोरे हदल ।।

**

डूबने से ऱ्खुदी में गकि' हुआ ये आलम।
क्य़ा रह़ा कुछ न रह़ा म ैंभी गय़ा तू भी गय़ा ।।

**

ऑख ज़ानेसे हकीकत की आखाँ ममलती है।
होती है इऩायत कभी दरवे्शों की ॥

**

हदल मर गय़ा ऑखों क़ा तीर लगने से।
मौल़ा कह़ा ाँरिंद़ा' कह़ा ाँअब इसकी य़ाद कौन करै ।।

**

लग गय़ा है तीर जजसेमस्ती क़ा मस्त ऑखों क़ा।
जीनेसे ऱ्ो जीत़ा भी नहींमरने से ऱ्ो मरत़ा भी नहीं।॥

**

फ़कीरों की इऩायत से ये दुतुनय़ा ाँकी कय़ामत है।
ख़ाक होत़ा है जब गुलश़ान यही उसकी तनय़ामत' है ।।

**

गुलरूब़ा खखलते ेही खखलतेकहकह़ात़ा गुलचमन ।
आबरू इसमें ही है जब चहचह़ातीं ंबुलबुलें ।।

**

ऑख सेआखाँ ममल़ा तू खुद़ा अज़ीज़ों से ।
खोकर के ग़्खुदी को देख, देख कररश्म़ा अपऩा ।।

**

देखऩा है गर हकीकत चीज़ से ऩाचीज़ हो ।
ख़ाक हो करके ही द़ाऩा ब़ाद होत़ा गुलयमन ।।

**

कश्मीरे श़ाही चरम़ा क्य़ा कर रह़ा है कलकल' ।
गोत़ा लग़ा तू इसमें प़ात़ा है जज़न्दगी को ।।

**

आखाोँ की आखाँ जजसने दीद़ार कर मलय़ा जब ।
बस हो गय़ा हमेश़ा क़ात्रबल न देखने ेके ।।

**

आखाोँ की आखाँ से ही आखाोँ में बेहोशी है ।
बजल्क खुद़ा बच़ाये इस मज िबेहोेशी से ।।

**

ऩामो तनग़ार' हदल सेरे्हेदल की ह़ाल पूछो ।
हदल की ही रे्सी से रे्हदल हुआ बेग़ाऩा' ।।

**

श़ाहों क़ा श़ाह रे्हेदल येहदल ज़ीर ए आज़म ।
मखलूके मुल्क पर जो है कर रह़ा हुकूमत ।।

**

बेहदल' दीद़ार त्रबन हरधगज़ न ज़ाती बुज़हदली' ।

गचेहोऩा मसंहं हदल ऱेहेदल परस्तों को समझ ।।

**

दुश्ु मनी हदल से न कर ऱेहदल क़ा ऩामोतनग़ार है।
गर न होत़ा हदल जह़ा ाँमें कौन फ़रम़ात़ा ऱेहदल ।।

**

बेस़ाहहल मुक्त दररय़ा में हज़़ारों बुलबुले आमशक ।
त्रबगडते ेबनते ेरोज़़ाऩा मुब़ारक हो मुब़ारक हो ।।
**

देखऩा सच में उसक़ा ही अनदेखे को जो देखै ।
देखत़ा हर घडी सबको त्रबऩा ऑखों के जो देखै ।

*

ऑख ज़ानेसे ऑख आई हमेश़ा के मलए।
चश्म ए चश्म क़ा दीद़ार हुआ च़ारों तरफ़ ॥

**

म़ारत़ा तू क्यों नहींछल़ांग क़हक़ह़ा' करके ।
खत्म होते ेही य़ार ख़ाक से होत़ा कुंदन' ।।

**

ई जज़न्दगी भी क्य़ा है क़ानून द़ायरे में बंिी
मगर जज़न्दगी की जज़न्दगी क़ानून के प़ाबंद नहीं।।

**

म़ानने में मसफ़ि गुमशुद़ा ए खुदु से जुद़ा ।
परद ए दूरू खुदु बस हो गय़ा मखलूके खुद़ा ।।

**

दीद़ार ए स़ाकक़य़ा क़ा हरज़ाय में मैकद़ा है।
जजसने पीय़ा जह़ा ाँपर िरती न आसम़ा ाँहै ।।

**

शम िजज़न्दगी को उस मय क़ा तजुऱ्ा िन ककय़ा।
हर क़्तर् हमेश़ा त्रबऩा जो र्पये चढ़ी रहती है ।।

**

मैकद़ा तू ही है तो कफर क्यों तल़ारो कूये दोस्त ।
मयंभी तू स़ाकी भी तू मीऩा' भी तू शीश़ा भी तू ॥

**

स़ाककय़ा ने जज़न्दगी में की इऩायत एक ब़ार ।
होश हूाँ बेहोश हूाँ ख़ामोश हूाँ ककसको पत़ा ।।

**

इऩायत फ़कीरों की जब तक न होगी ।
ज़म़ाने में भटक़ा भटकत़ा रहेग़ा ॥

**

चरम ए चश्म' क़ा दीद़ार हो गय़ा जब से ।
देखने ेसुनने की खत्म हो गई स़ारी मंजज़ल ।।

**

मुब़ारक हो ये मुहत़ाजी इन्द्शॉ अल्ल़ाह जजसे ेबखरो ।
ममल़ा दोनों से छुटक़ाऱा देखऩा और सुनऩा क्य़ा ।।

**

मुब़ारक जज़न्दगी को है जजसने जज़न्दगी प़ाई ।
नहींशम िहै जज़न्दगी को ऱ्ेहतर है खुदकशी करऩा ।।

**

हदल की ही खुदुकशी सेऱ्ेहदल हुआ है रोशन ।
जीनेक़ा नहींमकसद तकदीर क्य़ा बल़ा है ।।

**

मज़ िबुज़हदली से कज़ा' सर पे हमेशा क़ात्रबज़ ।
गचेशेरे हदल है तो कफर मौत से भी क्या खतरा ।।

**

दुआ' हो या ईुआ मतलब न दोनों से कोई ।
आ कज़ा दर पे खडी होना है जो गर हो न हो ।।

**

हाँसते हो क्या दुतुनयॉ ग़ालो हम रे्शरमों के मलए ।
हमीं ंथी जब खखजल्लयों अब रे्हेमीं ंमें क्या मज़ा ।।

**

शाही चश्मा चरम ए यह कलकलता रात हदन ।
कौन था क्या हूाँ म ैंकैसा बह गया सारा जूद ।।

**

दार' पे चढ़ कहकहा महबूबे परदा फ़ाश हो ।
ज़ल् ए लाइजब्तदा और जज़्ब ए ला इजन्द्तहााँ ।।

**

इश्क़ का पैग़ाम सुन आतेहैं आमशक दौडकर ।
खुद को पेरो नज़र की तब खत्म हो ज़ाता जूद ॥

**

जहा ाँमें नाइरि्फ़ाकी' सेहज़ारों मंजजलै ैबनतीं ं।
बचाये रहनुमाओं से खुदा चाहै जजसेबखरो ।।

**

हज़ारों मुखतमलफ़' मंजज़ल हज़ारों मुखतमलफ राही।
मगर मकसूद के दर पर नहींमंजज़ल नहींराही ।।

**

सही पैग़ाम मस्तों क़ा गलत दुतुनय़ा ाँयह क्य़ा समडौ ।
नहींरहते ेकभी जन्द्नत' न रहते ेहैं जहन्द्नुम में ।।

**

कल़ामें मुक्त मस्ती क़ा मस्त करत़ा है एक पल में ।
हदम़ागेहदल दलीलों क़ा हदय़्ाल़ा जब तनकल ज़ाये ।।

**

ऱ्ाखुदी' संस़ार में है शोरगुल और कहक हे ।
ऱ्ेखुदी रहती जह़ा ाँख़ामोश भी ख़ामोश है ।।

**

पहुाँचने से जह़ा ाँमस्ती भी हो ज़ाती है मस्त़ानी ।
हमेश़ा जो ह़ााँरहत़ा हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

शररयत" की तरीकत की नसीहत की न गुंज़ाइश ।
जो करत़ा है कफकर फॉक़ा हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

ऱ्ल़ा क़ानून के क़ानून की दुतुनय़ा ाँमें रह करके ।
पीय़ा है ऱ्ेखुदी य़्ाल़ा हकीकी मस्त कहते ेहैं।

**

दुतुनय़ा ाँकी तनग़ाहों में बोलत़ा देखत़ा सुनत़ा ।
हकीकत में है सन्द्ऩाट़ा हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

हदखत़ा ज़्ऱों" दुतुनय़ा ाँमें ऱ्ाक्ले ेदुतुनय़ा ाँहो करके ।
मगर है ऱ्ेज़ऱ्ाॅ दुतुनय़ा ाँहकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

हज़ारों खलक बनते ेहैं त्रबगडते ेर्लबलेम़ातनंदं ।
जो लहऱात़ा है दररय़ा ए हकीकी मस्त कहते ेहैं।।

**

गुजज़रत़ा' कौन थ़ा अब क्य़ा आइन्द्द़ा क्य़ा रहूाँग़ा म।ैं
जो रहत़ा ममरले'े म़ासूमी हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

दौलते ेदुतुनय़ााँह़ामसल हो य़ा ह़ामसल रे्दौलते दुतुनय़ा।ाँ
खुशी भी हो न म़ायूसी हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

ख़ामोशी में न हाँसत़ा है न रोत़ा है रे्ख़ामोशी में ।
जो रहत़ा दोनों में एक सॉ हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

मसकुडकर आप में जैस़ा कक ममसलेकछुऱ् रहत़ा है।
दुरुंगी दूरू की जजसनेहकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

मसत़ारे चॉद सूरज भी जह़ााँपर ज़ा नहींसकते ।
हींज़ागीर' है जजसकी हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

नज़र के रूबरू आ ज़ाए ज़ामलम हो य़ा ज़ाहहद हो।
देखत़ा खुद में खुदु को ही हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

हकीकी इश्क में है जो हुआ मऱारूफ़' क्य़ा कहऩा।
मुऱ्ारकऱ्ाद है जजसको हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

इल़ाही इश्क क़ा य़ाल़ा जो पीते ेही बहक ज़ाए।
हमेश़ा ही र्पय़ा य़ाल़ा हकीकी मस्त कहते ेहैं ।।

**

न क़ाबे'े न कलीस़ा की न मैखे़ाने' न बुतख़ाने' ।
खुद़ा ज़ानेककिर से दौडकर आ रही मस्ती ।।

**

बेरय़ाज़ क़ा रय़ाज़ ककय़ा उसक़ा ही अंज़ाम' ममल़ा ।
आखाँों से पूछने पर मगर कुछ भी बोलती ही नहीं।।

**

मुक्त को परऱ्ाह नहींदुतुनय़ााँकी ऩाऱाज़गी से ।
कय़ामत भी अगर हो स़ामने तब भी कोई एतऱाज़ नहीं।।

**

क़ानूने कुदरत समझकर रोऩा रूल़ाऩा है कफ़जूल ।
जज़न्दगी क़ा लुत्फ़ लेऩा ही बडी इंस़ातनयत ।।

**

मस्त की दुतुनय़ााँमें कभी गम खुशी क़ा ऩाम नहीं।
ेेगुऩाह रहऩा है गर क़ानून के प़ाबंद रहो ।।

**

हदलकशी खुद के मलए मुमककन है करऩा दोस्तों ।
हदलकशी य़ा खुदुकशी' हरधगज़ नहींदो मुखतमलफ़ ।।

**

जजसके ऱास्ते ेहदलकशी करती है दुतुनय़ा ेाँऱात हदन ।
अफ़सोस है महबूब क्य़ा ममलत़ा है य़ारों त़ाक" में ।।

**

रे्शमी गचेप़ाऩा है तो कर खखदमत फ़कीरों की ।

मगर ऱर्ख्श ेखुदुा जजसको मुऱ्ारक हो रे्शरम़ाऩा ।।

**

खुद़ा की जो हकीकत सचमुच में ल़ाज़ब़ा ाँहै ।

जैस़ा जो देखत़ा है रै्स़ा ही रो्‌ अऱ्ा ाँ है ।।

**

क़ात्रबले ेत़ारीफ़ जज़न्दगी को जज़न्दगी है ममली ।

मसजद़ा है ब़ारब़ार उसे ेबन्दद़ा जो अल्ल़ाह हुआ ।।

**

मस्त की महकफ़ल में आकर कफर भी करत़ा चूाँ चऱा' ।

गचेद़ातनशमंद है पयम़ान ए मस्ती तू पी ।।

**

मस्त रहते ेहैं जह़ा ाँपर हींपर है मयख़ाऩा ।

खुशककस्मत से जो पहुाँच़ा ह़ााँ पीने की ज़रूरत भी नहीं।।

**

खुद़ा न करै बुज़हदले महकफ़ल में बैठऩा हो अगर ।

जज़न्दगी हो ज़ाय खत्म कब्र-ए-सोऩा बेहतर ।।

**

जजस्म़ानी जज़न्दगी' में खतऱा है हर कदम पर ।

आज़़ादी ज़ा ब ज़ा है रूह़ानी जज़न्दगी हो ।।

**

फ़रेब की दुतुनय़ा' ाँ में रहऩा फ़ौल़ादी हदल है गर तेऱा ।

नहींर्पघल र्पघलकर मरऩा है चहै अफ़ल़ातें भी क्यों न हो ।।

**

होता है ज़माना अगर तबदील ज़ाम पीने से ।
सरे ब़ाज़ार' पीयो और हमेशा ही पीओ ।।

**

फ़रेब की दुतुनय़ा ाँमें रहकर फ़ौरेर् से बचऩा है मुजश्कल ।
प़ा मलय़ा हकीकत को जजसने कफर खौफ़ नहींफ़रेब नहीं।।

**

शऱाफ़त है ये कमख्र्ती इब़ादत है ये कमख़्र्ती ।
अगर होती न कमख़्र्ती ढूाँढ़त़ा कौन अल्ल़ाहे ।।

**

मुब़ारक हो ये कमबख्ती अगर आती न अल्ल़ाह में ।
देखत़ा कौन कब ककसको हदख़ात़ा कौन अल्ल़ाहे ।।

**

बेर्कूफी से खुद़ा श़ाह से मोहत़ाज बऩा ।
परेशॉ होके भटकत़ा है दर ब दर कैस़ा ।।

**

बुरक़ा अरों ज़ाज़्ाी फरम़ान करत़ा ऱात हदन ।
परद ए परद़ानींपरद़ा उठ़ा के देख लो ।।

**

अहमेर् खंजर से कट़ा मखलूक ए सर ऱाह ऱाह ।
शहनश़ाही हो मुब़ारक खौफ खतऱा टल गय़ा ।।

**

खुद़ा की जो बेशरमी कहऩा भी बेशरमी से ।
मखलूके खुद़ा होकर बन्दद़ा नज़र आत़ा है ।।

**

अन्दरूनी शोर गुल से शक़्ले ेआलम शोरगुल ।

हो गय़ा ख़ामोश हदल ख़ामोश भी ख़ामोश है ।।

**

खय़ाल में ही इस्म' जजस्मैखय़ाल ही है इस्म जजस्म ।
खय़ाल पद़ा िहट गय़ा खुद के मसऱ् कुछ भी नहीं।।

**

नज़ररय़ा एक है सबकी अनेकों मुखतमलफ़ मंजज़ल ।
कोई ऱाही हकीकत क़ा ममज़ाज़ी इश्क क़ा कोई ।।

**

मरमसय़ा-ए-र्दनसीबी क़ा तू पढ़ऩा बंद कर ।
हो ऱहा है जो होनेदे बस यह हकीकत जज़न्दगी ।।

**

मुऱ्ारक हो नज़र मस्तों की गर कोई भी टकऱाये ।
खुद़ा भी खुदु खतम होकर रहै मुतलक न कुछ ऱ्ाकी ।।

**

मुहब्र्त कैदख़ाने से तनकलकर गचेभग ज़ाये ।
मुहब्र्त सच नहींय़ारों मुहब्र्त क़ा है अफ़स़ाऩा ।।

**

फ़ररश्तों क़ा फ़ररश्ता हो खुद़ा से भी हो य़ा ररश्ता ।
मगर खुद मस्ती त्रबन य़ारों फ़ररश्ता है न ररश्ता है ।।

**

खुद़ा बच़ाये सबको सद़ा मुक्त महकफ़ल से ।
ऱ्ादि होके अब खुद्ा से ह़ाथ ो बैठे ।।

**

अगरचेररश्ता करऩा है तो ररश्ता कर फ़कीरों से ।

सभी खुदगरज़ी के ररश्ते ेत्रबगडतेऔर कभी बनते े।।

**

खुद़ा के सर पे कम्पबख़्ती ककिर से दौडकर आई ।
मोहत़ाजी के चक्कर में कभी आत़ा कभी ज़ात़ा ।।

**

दोस्ती मस्तों की बदनसीबों को नसीब कह़ा ाँ।
मुहब्र्त ए दुतुनय़ााँकी यही तोहफ़़ा समझ बैठे हैं ।।

**

मैद़ानेजंग में आकर के डरऩा मौत से बढ़कर ।
मौत की मौत होकर अगर डरत़ा है, ल़ानत है ।।

**

मुक्त महकफ़ल में आते ेही न रहत़ा दीनो दुतुनय़ा ााँक़ा ।
मुजक्त से मुक्त हो ज़ात़ा मुब़ारक हो मुब़ारक हो ।।

**

मुक्त होके ढूाँढ़त़ा तू मुक्त होने के मलए ।
र्दनसीबी र्दतमीज़ी बेर्कूफ़ी छोड दे

**

मस्त स़ागर की सद़ा ए क़ात्रबले ेयह गौर है।
गरचे ेतू है म ैंनहींऔर म ैंहूाँ गर ककर तू कह़ा ाँ।।

**

मुहब्त के, मरीज़ों को मसीह़ा कुछ न कर सकत़ा ।
तडपऩा रोऩा बेचैनी मससकऩा जज़न्दगी स़ारी ।।

**

सच कहते ेहैं बुऱा र्क्त न हदखल़ाये खुद़ा ।
दोस्त ककर ज़ाते ेहैं तो दुश्मन की मशक़ायत क्य़ा ।।

**

जजसेहम फूल समझे ेथे गल़ा अपऩा सज़ाने को ।
र्ो ज़ामलम ऩाग बन बैठ़ा हम़ारे क़ाट ख़ाने ेको ।।

**

तमन्द्ऩा नहींहै दुआ बहुआ की ।
तब जंगल उन्द्हें क्य़ा और लश्कर उन्द्हें क्य़ा ।।

**

प़ाखंड के सह़ारे आत़ा है जो शरण में ।
एतब़ार के न क़ात्रबल ज़मीं ंय़ा आसम़ा ाँक़ा ।।

**

ख़ामोशी बडी चीज़ है ककस्मत से नहींममलती ।
च़ाहत़ा गर हदल से फ़कीरों की कदमबोसी कर ।।

**

ख़ामोशी समझ के य़ार आपमें ख़ामोश हो ज़ा ।
अगर नहींभी समझ में आए तब भी तू ख़ामोश हो ज़ा ।।

**

मुक्त पैग़ाम सुन करके न बदल़ा जो हदलेमहकफ़ल ।
हकीकत है नहींपैग़ाम ए पैग़ाम अफ़स़ाऩा ।।

**

मुक्त पैग़ाम सल़ामत तो बस एक हदन इन्द्श़ा-अल्ल़ाह ।
बंज़ाएग़ा स़ाऱा ये ज़ह़ा ाँहकीकत के एक ि़ागे ेमें ।।

**

तनभ़ाऩा है बड़ा मुजश्कल मुहब्त अपनेहदलर्र से ।
उिर सूरत अमीऱाऩा इिर ह़ालत गरीब़ाऩा ।।

**

मशक़ायत ककस ज़रा ाँसे म ैंकरूँ उनके न आनेकी ।
यही एहसान क्या कम है कक हरदम हदल में रहते ेहैं ।।

**

बेग़ाना गर नज़र पडे तो आशना को देख ।
दुश्मन गर आए सामने तो भी खुदा को देख ।।

**

जुदाई मुक्त की हदल में अखरती सबको जो जैसा ।
फ़ररश्ते ेजबकक हैं रोते तो इन्द्सों की खुदा ज़ाने।।

**

मस्ती में मस्त होकर मस्ती को मलख रहा हूाँ ।
मस्ती में मस्त पढ़ना दररया नज़र आयेगा ।।

**

खुदा के बंदों को देखकर के खुदा से मुनकीर हुई है दुतनया।ाँ
गर ऐसेबंदे हैं जजस खुदा के रो कोई अच्छा खुदा नहींहै ।।

**

मसतारों के शरारत से त्रबगडता क्या अरे मुक्ता ।
त्रबगडना बनना दोनों ही ये कुदरत के नज़ारे हैं।।

**

ख़ामोश का खज़ाना ख़ामोश ढूाँढ़ता है ।
कदमों तलेहै दौलत दौलत को ढूंढ़ता है ।।

**

जजसको तुम भूल गए, कौन उसे ेयाद करे ।
जजसको तुम याद हो, ई और ककसेयाद करे ।।

**

गर इश्क सच्चा है तो इक हदन इन्द्शॉ अल्लाह ।
कच्चे िागे ेसे बंि ेआप खखंचें ेआयगें े।।

**

न आती य़ाद अपनेकी न आती ही पऱाये की ।
हकीकत में यही तनष्ठ़ा रह़ा ब़ाकी जो अफ़स़ाऩा ।।

**

नहींआऱाम जजस्म़ानी नहींआऱाम रुह़ानी ।
त्रबऩा मुक्त़ा मुहब्बत के न रुह़ानी न जजस्म़ानी ।।

**

र्पय़ा य़्ाल़ा मुहब्बत क़ा म़ाक़ा िशम्पस ए मुक्त़ा ।
भल़ा कफर क्य़ा जरुरत है ककसी को सर झुक़ाने की ।।

**

मुद्दत सेमरती दुतुनय़ााँख़ामोशी के ऱास्ते े।
मगर ढूाँढ़ती कुछ करके ख़ामोशी ममले ेकह़ा ााँ।।

**

खौफ़ से डोलतेकफरते ेमसत़ारे आसम़ा ााँअंदर ।
च़ादाँ सूरज में जो रोश़ान मसत़ारों से है क्य़ा खतऱा ।।

**

रोशनी आई य़ा नहीं, पूछते हो क्य़ा ल्ऱ्ा ।
आनेपे जंज़दगी है, नहींइसकी कय़ामत होगी ।।

**

दरर्ेश अपनी मौज में, बैठतेजजस ज़ा ााँमें ।
शेख क़ा क़ाब़ा हीं, बरहमन क़ा बुतख़ाऩा ।।

**

ये मस्ती मैकद़ा की नहीं, और बुतकद़ा की नहीं।
ये मस्ती खुदुकशी की है, कहत़ा मुक्त मस्त़ाऩा ।।

**

आमशके म़ाशूक हूाँ, इक तरफ़ा मज़ा है ।
दीव़ाऩा हूाँ म ैंजजसक़ा, ई दीव़ाऩा है मेऱा ।।

**

रोशनी है जज़न्दगी और जजसको कहते ेहैं खुद़ा ।
रोशनी है रोशनी मयफूज़ रखऩा च़ाहहए ।।

**

रोख क़ाब़ा को चले, रोशनी प़ाने के मलए ।
ममलने पर रोशनी भी गई, और रोशन न ममल़ा ।।

**

खोजते ेहैं य़ार को य़ार मसव़ा कुछ नहीं।
खोजी भी ममट ज़ाए कहते ेहै इसे ेयऱाऩा ।।

**

रोशनी सबमें जो रोशन हदखत़ा है स़ाऱा जह़ा ााँ।
आ रही खुद ब खुदु, कुछ इन्द्तज़ारी कीजजये ।।

**